सहभागी गण

श्री सय्यद मतीन अहमद
राज्य हिंदी समन्वयक,
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण
परिषद, आंध्र प्रदेश, हैदराबाद

श्रीमती जी. किरण
राज्य हिंदी संसाधक
जी.एच.एस.फॉर डेफ मलकपेट, हैदराबाद

श्रीमती कविता
राज्य हिंदी संसाधक
जी.बी.एच.एस., नामपल्ली, हैदराबाद

शेख़ हाजी नूरानी
जड.पी.हेच.एस.चिट्याल, मं. चिट्याल
ज़िला : वरंगल

श्रीमती रेशमा बेगम
राज्य हिंदी संसाधक, जड़,पी.एच.एस.,
देवरयंजाल, शामीरपेट मंडल, रंगारेड्डी

बी. रमेश बाबू
राज्य हिंदी संसाधक, जड.पी.हेच.एस.शंकरायलपेटा,
ज़िला : चित्तूर

श्रीमती पी. जयलक्ष्मी
राज्य हिंदी संसाधक, एस.ई.आर.टी.,
हैदराबाद

के. ख़ादर बाषा, राज्य हिंदी संसाधक
जड.पी.हेच.एस.कोडूर, मं. चिलमत्तूर
ज़िला : अनंतपूर

श्रीमती बी. मधुमती राज्य हिंदी संसाधक,
जड.पी.हेच.एस.गोंडुपालेम,
ज़िला : विशाख़पट्टनम्

बी. जय प्रकाश जोसफ़
जड.पी.हेच.एस.गरुगुबिल्ली
ज़िला : विजयनगरम

एम. डी. युसुफोद्दीन
राज्य हिंदी संसाधक, हैदराबाद

डॉ. दुर्गेश नंदिनी
राज्य हिंदी संसाधक, हैदराबाद

श्रीमती ए.वी. रमणा
राज्य हिंदी संसाधक, हैदराबाद

आमुख

हिंदी भाषा शिक्षण द्वितीय भाषा की 9,10 वीं कक्षा की नवीन पुस्तकें तैयार की गयी हैं। इन पुस्तकों के आधार पर किस प्रकार शिक्षण कार्य किया जाय, इस के मार्गदर्शन के लिए 8,9,10 वीं कक्षाओं को पढ़ाने वाले अध्यापकों के लिए 'अध्यापक मार्गदर्शिका' तैयार की गयी है। इसके अंतर्गत पठ्य पुस्तक की दार्शनिकता को व्यापक रूप से व्यक्त किया गया है। जिसे पढ़ने से अध्यापकों को पाठों की संक्षिप्त जानकारी प्राप्त होगी। शैक्षिक मापदंड अध्याय के अंतर्गत दसवीं कक्षा के लिए निर्धारित शैक्षिक मापदंडों की जानकारी के साथ-साथ कक्षा में इन मापदंडों पर आधारित अभ्यास कार्यो के संचालन की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। इन अभ्यासों के द्वारा छात्रों को विचार-विमर्श, विश्लेषण, चिंतनशील, क्रियाशील, तर्कशील, निर्णयात्मक, सृजनात्मक आदि दक्षताओं में सक्षम बनाना ही पाठ्यपुस्तक का उद्देश्य है। पाठ्यपुस्तक में इन पाठों और अभ्यासों के अंतर्गत विभिन्न विधाएँ दी गयी है। कौनसी - विधा की क्या विशेषता है। किस विधा में किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है? छात्रों द्वारा सृजनात्मक अभिव्यक्ति के अंतर्गत किए गए 'विधा सृजन जैसे - निबंध, पत्र-लेखन, घटना वर्णन, नाटक आदि किस आधार पर किया जाना चाहिए इसकी जानकारी 'विधा-विशेषता है' अध्याय के अंतर्गत दी गयी है। मार्गदर्शिका में 'शिक्षण व्यूह' अध्याय बहुत ही महत्वपूर्ण है। अध्यापक को पाठ के अध्यायन के लिए कौन-कौन से शिक्षण व्यूह अपनाने चाहिए? किस शिक्षण व्यूह (जैसेः- मनोरेखा चित्र, नृत्याभिनय, एकल अभिनय, सामूहिक कार्य आदि) का किस प्रकार कार्यान्वयन किया जाय इसकी जानकारी 'शिक्षण ब्यूह' अध्याय के अंतर्गत की गयी है। यह तो आप सभी जानते हैं कि अध्यापक को कक्षा में जाने से पहले ही अध्यापन संबंधी तैयारी करनी होती है। नयी पाठ्यपुस्तकों को पढ़ाने के लिए अध्यापक 'शिक्षण के लिए', 'आकलन के लिए', तथा बालक के सर्वांगीण विकास के लिए किस प्रकार की तैयारी करनी होगी? इसकी विस्तृत जानकारी 'अध्यापक की तैयारी' अध्याय के अंतर्गत दी गयी है। यह अध्यापकों के लिए बहुत ही उपयोगी सिद्ध होगी। पाठ्य पुस्तक में दिए गए पाठों को किस प्रकार योजना बद्ध तरीके से पढ़ाना है? इसके लिए वार्षिक योजना, इकाई योजना, तथा पाठ योजना किस प्रकार तैयार की जानी चाहिए। इनके मुख्य सोपान कौन-कौन से हैं। किस सोपान के अंतर्गत क्या सूचना दी जानी चाहिए इसके बारे में 'योजनाएँ' अध्याय से जानकारी प्राप्त होगी। RTE अंतर्गत CCE को महत्व दिया गया है और हमारी पाठ्यपुस्तक का मुख्य आधार CCE है। इसमें CCE की व्यापक जानकारी दी गयी है। दसवीं कक्षा में FA तथा SA परीक्षाएँ किस प्रकार ली जाए। इसमें किस प्रकार के प्रश्न दिए जाए तथा इसका आकलन किस आधार पर किया जाना चाहिए आदि की व्यापक जानकारी इस मार्गदर्शिका में दी गई है। इससे अध्यापकों को छात्रों के सर्वांगिण विकास तथा उन्हें पब्लिक परीक्षा के लिए तैयार करने में सहायता मिलेगी। साथ ही इस मार्गदर्शिका में कुछ वेबसाइटों को भी दिया गया है इससे अध्यापक अपने अध्यापन संबंधी समस्याओं का समाधान ढूँढ़ सकते है?

इस प्रकार यह मार्गदर्शिका दसवीं कक्षा के अध्यापकों के लिए अत्यधिक सहायक सिद्ध होगी।

विषयसूची

क्र.सं.	अध्याय का नाम	पृष्ठ संख्या
1.	पाठ्यपुस्तक का दार्शनिकता-अवधोरणा (Phylosophy of the Text Book)	1- 15
2.	पाठ्य मुख्यांश	16 - 31
3.	शैक्षिक मापदंड	32 - 54
4.	विधाएँ स्पष्टीकरण	55 - 57
5.	शिक्षण व्यूह (Teaching Strategies)	58 - 61
6.	अध्यापक की तैयारी	62 - 64
7.	योजनाएँ	65 - 88
8.	सतत समग्र मूल्यांकन (Continuous Comprehensive Evaluation)	89 - 122
9.	पंजिकाएँ (Registers)	123
10.	विशेष सूचनाएँ (Important Instructions)	124
11.	G.O	125-137

अध्याय –I

पाठ्यपुस्तक की दार्शनिकता - अवधारणा

(PHYLOSOPHY OF THE TEXT BOOK)

1) पाठ्यपुस्तक का आमुख
2) पाठ्यपुस्तक के मुख्य सिद्धांत
3) पाठ्यपुस्तक में छात्रों के लिए सूचनाएँ
4) पाठ्यपुस्तक में अध्यापकों के लिए सूचनाएँ
5) पाठ्यपुस्तक की विषय-सूची, विधा-विशेष
6) पाठ्यपुस्तक में पाठों का निर्माण - एक अवलोकन
7) पाठ्यपुस्तक संसाधन
8) पाठ्यपुस्तक में शैक्षिक मापदंड
9) पाठ्यपुस्तक में परियोजनाएँ
10) पाठ्यपुस्तक में मूल्यांकन

I पाठ्यपुस्तक की दार्शनिकता - अवधारणा

1) पाठ्यपुस्तक का आमुख

आमुख को पाठ्यपुस्तक का प्रतिबिंब कहा जा सकता है। इसे पढ़कर हम पाठ्यपुस्तक में निहित सामग्री की ढेर सारी बातों के बारे में अनुमान लगा सकते हैं। दसवीं कक्षा की पाठ्यपुस्तक सुगंध - २ के आमुख के प्रस्तावित अंश निम्नलिखित हैं :-

- एन.सी.एफ.-2005, आर.टी.ई. - 2009, एन.सी.एफ.-2009 तथा आधार पत्र - 2011 के सुझावों के आधार पर पाठ्य-पुस्तक के सृजन पर प्रकाश डाला गया है।
- त्रिभाषा सूत्र की अमलवारी को ध्यान में रखते हुए पाठ्य-पुस्तक के निर्माण का उल्लेख किया गया है।
- बच्चों के किताबी ज्ञान को व्यावहारिक जीवन से जोड़ने और अर्जित ज्ञान के आधार पर नवीन ज्ञान का सृजन करने तथा नवीन ज्ञान का संबंध पूर्व ज्ञान से जोड़ने के लिए विभिन्न विधाओं (गीत, कहानी, साक्षात्कार, पी.पी.टी.) के समावेश की जानकारी दी गयी है।
- बालक के सर्वांगीण विकास में सहयोग देने वाले मानवीय, संवैधानिक, ऐतिहासिक, बाल-स्वभाव, वैज्ञानिक आदि भावों को पाठ्यपुस्तक में स्थान दिये जाने संबंधी बातों के बारे में बताया गया हैं।
- बच्चों की आयु, रुचि और स्तर के अनुकूल भाषा कौशलों व दक्षताओं (शैक्षिक मापदंडों) जैसे :- अर्थग्राह्यता - प्रतिक्रिया, अभिव्यक्ति सृजनात्मकता, भाषा की बात के समावेश के संबंध में बताया गया है।
- परियोजना कार्यों के संबंध में विशेष जानकारी दी गयी है।
- छात्र को भावी नागरिक बनने में सहयोगी उच्चतम बौद्धिक कौशलों (HOTS) की महत्ता को भी दर्शाया गया है।

2) पाठ्यपुस्तक के मुख्य सिद्धांत

राष्ट्र का प्राथमिक उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराना है। इसी लक्ष्य की प्राप्ति हेतु आं.प्र. सरकार ने एन.सी.एफ-2005, आर.टी.ई - 2009 के सुझावों के आधार पर ए.पी.एस.सी.एफ. - 2011 का निर्माण किया है। इसी ए.पी.एस.सी.एफ - 2011 के मौलिक सूत्रों के आधार पर दसवीं कक्षा की द्वितीय भाषा और प्रथम भाषा की पुस्तकों की रचना हुई है।

दसवीं कक्षा की इन पाठ्यपुस्तकों की रचना की विशेषताएँ निम्नांकित हैं -

1. रटंत पद्धति की समाप्ति : -

यह पाठ्यपुस्तकें बच्चों को रटने की नीरस व बोझिल पद्धतियों से बचाये रखती हैं। इन पुस्तकों

में ऐसे अंशों का समायोजन है जो बच्चों को रटने की अपेक्षा सोचने-विचारने, विश्लेषण करने और प्रतिक्रिया करने पर आकर्षित करते हैं। इस पुस्तक के पाठों में दिये गये प्रश्न विचारोत्तेजक हैं जो छात्र को सोचने समझने और तर्क करने के लिए प्रेरित करते हैं।

उदा :- 1. वर्षा सभी प्राणियों के लिए जीवन का आधार है? कैसे? (पृष्ठ संख्या : 3)

2. राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से हिंदी महत्वपूर्ण भाषा है। इस पर अपने विचार व्यक्त कीजिए। (पृष्ठ संख्या : 34)

3. नीचे दिये गये वाक्य पाठ के आधार पर उचित क्रम में बताइए।

4. अपठित गद्यांश, पद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

2. अर्जित ज्ञान का उपयोग व्यावहारिक रूप से करना :

पाठ्यपुस्तक एक साधन है, साध्य नहीं। यह अर्जित ज्ञान का उपयोग अपने दैनंदिन जीवन में व्यावहारिक रूप से करने का मार्ग सुगम बनाती है। बच्चे कक्षा में जो ज्ञान अर्जित करते हैं वे उसका उपयोग, विद्यालय से बाहर अर्थात् समाज में स्वतंत्रतापूर्वक कर सकते हैं। पाठ्यपुस्तक में दिये गये पढ़ना-समझना, स्वरचना, सृजनात्मक अभिव्यक्ति और परियोजना जैसे अभ्यासों से बालक में इस क्षमता का विकास होता है।

उदा : - 1. विज्ञापन पढ़िए और उस पर चार प्रश्न बनाइए। (पृष्ठ संख्या : 33)

2. जल संरक्षण पर एक पोस्टर बनाइए। (पृष्ठ संख्या : 65)

3. पाठ्यपुस्तक की परिधि से बाहर सीखने के अवसर :-

हमारी पाठ्यपुस्तक बच्चों को केवल पाठ्यपुस्तक तक ही सीमित नहीं रखती है बल्कि वह उसे अतिरिक्त शिक्षण के लिए संदर्भ ग्रंथों, पत्र-पत्रिकाओं को पढ़ने, पुस्तकालय का उपयोग करने और समाज के सदस्यों से परस्पर प्रतिक्रिया द्वारा शिक्षा प्रदान करने के अवसर भी प्रदान करती है। पाठ्यपुस्तक में दिये गये अभ्यास बच्चों को इस दिशा में प्रेरित करते हैं। उदा :-

1. वरिष्ठ नागरिकों के प्रति आदर-सम्मान की भावना से जुड़ी कोई कहानी ढूँढ़कर लाइए और कक्षा में प्रस्तुत कीजिए। (पृष्ठ संख्या : 9)

2. शांति के पथ पर समर्पित किसी महान व्यक्ति के बारे में जानकारी इकट्ठा कर कक्षा में प्रस्तुत कीजिए। (पृष्ठ संख्या : 16)

4. बच्चों के ज्ञान, संस्कृति, स्थानीय कलाओं आदि से संबंधित अंश :-

पाठ्यपुस्तकों में बच्चों के ज्ञान, संस्कृति, स्थानीय कलाओं से संबंधित अंश अवश्य होने चाहिए। इससे बच्चों में अपनी संस्कृति के प्रति आदर की भावना उत्पन्न होती है, स्थानीय विषयों के प्रति जागरुकता का निर्माण होता है, मानवीय मूल्यों का विकास होता है, विभिन्न कलाओं के प्रति रुचि उत्पन्न होती है। दसवीं कक्षा की पाठ्यपुस्तक बालक को इसका भरपूर अवसर प्रदान करती है। इसमें दिये गये पाठ जैसे लोकगीत, दक्षिणी गंगा गोदावरी आदि इन पर आधारित हैं।

5. शैक्षिक मापदंडों पर आधारित पाठः-

शिक्षा का मूल उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास है। इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु बालक की

विभिन्न दक्षताओं के विकास के लिए कुछ मापदंडों का निर्धारण हुआ है। दसवीं की पाठ्यपुस्तक में ये मापदंड - I अर्थग्राह्यता - प्रतिक्रिया (सुनना - बोलना, पढ़ना - लिखना)

II अभिव्यक्ति - सृजनात्मकता (स्वरचना, सृजनात्मक अभिव्यक्ति और प्रशंसा)

III भाषा की बात (शब्द भंडार, व्याकरणांश) के रूप में हैं। इनके द्वारा बच्चों की विभिन्न दक्षताओं के साथ-साथ सतत् समग्र मूल्यांकन में भी सहायता प्राप्त होती है। इन अभ्यासों के द्वारा बच्चे मौखिक और लिखित अभिव्यक्ति (स्व. अभिव्यक्ति) में सक्षम बनते हैं, विभिन्न विधाओं का सृजन कर सकते हैं, संदर्भ पुस्तकें पढ़कर समझ सकते हैं और भिन्न-भिन्न शब्दावली का प्रयोग कर सकते हैं।

उदा : - 1. लोकगीत ग्रामीण जनता का मनोरंजक साधन है? कैसे? (पृष्ठ संख्या : 26)

2. वीरांगना लक्ष्मीबाई देशभक्ति की एक अद्भुत मिसाल थीं? स्पष्ट कीजिए। (पृष्ठ संख्या : 49)

3. भक्ति - भावना से संबंधित छोटी सी कविता का सृजन कीजिए। (पृष्ठ संख्या : 42)

6. आकलन की विशेषता :-

पाठ्यपुस्तक के सृजन का एक अन्य विशेष और ठोस आधार है- सतत् समग्र मूल्यांकन। सतत् समग्र मूल्यांकन दो प्रकार का होता है - रचनात्मक और सारांशात्मक। इनके आधार पर ही पाठ्यपुस्तक में इकाइयों का विभाजन किया गया है। पाठ के बीच-बीच में दिये जाने वाले प्रश्न भी सतत् समग्र मूल्यांकन की प्रक्रिया में सहयोग देते हैं। पाठ्यपुस्तक के अभ्यास भी पूर्णतः इस मूल्यांकन पर ही आधारित हैं।

3) पाठ्यपुस्तक में छात्रों के लिए सूचनाएँ

I. सूचनाएँ क्यों दी गयी हैं?

पाठ्यपुस्तक के मुख पृष्ठ के भीतरी भाग में 'छात्रों के लिए विशेष सूचनाएँ' दी गयीं हैं। इसे देने के निम्न उद्देश्य हैं :-

- इसे पढ़ने से पाठ्यपुस्तक के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।
- पढ़े जाने वाले अंशों का परिचय मिलता है। जिससे छात्रों में पाठ्य पुस्तक के प्रति रुचि और जिज्ञासा उत्पन्न होती है।
- पाठ्यपुस्तक में कुशलताओं के विकास के लिए दिये गये अभ्यासों का परिचय मिलता है।
- अभ्यासों की प्रकृति को समझने में सहायता होती है।
- इससे छात्रों में आत्मविश्वास उत्पन्न होता है।
- विभिन्न अभ्यास कार्य किस प्रकार करने चाहिए। इसकी जानकारी प्राप्त होती है।

II **किन अंशों पर आधारित हैं?**

- शैक्षिक मापदंडों के अंतर्गत दिये गये अभ्यास कार्यों की व्याख्या की गयी है।
- कौनसा अभ्यास कार्य किस प्रकार करना चाहिए, इसकी जानकारी दी गयी है।
- शब्दकोश व अन्य संदर्भ पुस्तकों के उपयोग की जानकारी दी गयी है।
- गाइड, सब्जेक्ट मेटेरियल, क्वश्चन बैंक का उपयोग न करने का निर्देश दिया गया है।
- परियोजना कार्य से संबंधित जानकारी दी गयी है।

III **शिक्षक क्या करें?**

- छात्रों को 'छात्रों के लिए विशेष सूचनाएँ' वाला अंश पढ़ने के लिए कहें।
- प्रत्येक बिंदु पर चर्चा करें।
- निष्कर्ष के आधार पर इसकी उपयोगिता बतायें।
- अभ्यास कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी दें।

4) अध्यापकों के लिए सूचनाएँ

पाठ्यपुस्तक में अध्यापकों के लिए सूचनाएँ, अध्यापकों से ... शीर्षक के अंतर्गत दी गयी हैं। पाठ्य-पुस्तक के प्रारूप की जानकारी इसके अंतर्गत दी गई सूचना से मिलती है। हर अध्यापक के लिए इसे पढ़ना अनिवार्य है।

इसके अंतर्गत दिये गये अंशः

1. कालांशों का विभाजन
2. पाठ की संरचना के प्रमुख अंश और उनके उद्देश्य
3. पठन हेतु और उपवाचक पाठों के उद्देश्यों पर प्रकाश
4. विभिन्न शिक्षण पद्धतियों के उपयोग का उल्लेख
5. विश्लेषणात्मक और विचारात्मक प्रश्नों के उपयोग पर बल
6. शैक्षिक मापदंडों पर आधारित अभ्यासों की प्रकृति, उनके संचालन तथा आकलन के तरीकों का उल्लेख
7. परियोजना कार्य के उद्देश्यों का स्पष्टीकरण
8. वार्षिक योजना और पाठयोजना के नमूनों का प्रस्तुतीकरण
9. भाषा-शिक्षण के सोपानों का उल्लेख
10. विभिन्न संसाधनों और संदर्भ ग्रंथों के उपयोग के निर्देश

11. भाषा-क्रियाकलाप और साहित्यिक कार्यक्रमों के आयोजन पर प्रकाश
12. गाइड, स्टडी मटेरियल, क्वश्चन बैंक आदि के उपयोग की मनाही

अध्यापकों को चाहिए कि -

- वे इन सूचनाओं को पढ़ें -
- इनमें दी गयी सूचनाओं के आधार पर अपनी शिक्षण योजना की तैयारी करें।
- कालांशानुसार अपनी वार्षिक योजना और पाठ योजना तैयार करें।
- संसाधनों और संदर्भ ग्रंथों की सूची बना लें।
- छात्रों को स्व लेखन के लिए प्रेरित करें।
- पाठ के अनुरूप विभिन्न शिक्षण पद्धतियों का प्रयोग करें।
- छात्रों की क्षमताओं का आकलन शैक्षिक मापदंडों के आधार पर करें।
- भाषाई क्रियाकलापों का क्रियान्वन तत्परता के साथ करें।

5) विषय सूची

क्र.सं.	पाठ का नाम	विधा	विषय
1.	बरसते बादल	कविता	• प्रकृति वर्णन, पर्यावरण
2.	ईदगाह	कहानी	• मानव मूल्य
*	यह रास्ता कहाँ जाता है?	नाटक	• बौद्धिक व नैतिक
3.	हम भारतवासी	कविता	• देशप्रेम, मानव मूल्य
*	शांति की राह में	निबंध (उपवाचक)	• मानव मूल्य
4.	कण-कण का अधिकारी	कविता	• सामाजिकता
5.	लोकगीत	निबंध	• संस्कृति
*	उलझन	कविता (उपवाचक)	• बाल-स्वभाव
6.	अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी	पत्र	• सृजनात्मकता
*	दो कलाकार	कहानी (उपवाचक)	• मानवमूल्य
7.	भक्ति पद	कविता	• संस्कृति
8.	स्वराज्य की नींव	एकांकी	• देशभक्ति
*	माँ मुझे आने दे!	कविता (पठन हेतु)	• सामाजिकता
9.	दक्षिणी गंगा गोदावरी	यात्रा-वृत्तांत	• संस्कृति
*	अपने स्कूल को एक उपहार	कहानी (उपवाचक)	• बाल - स्वभाव
10.	नीति दोहे	कविता	• मानवमूल्य
11.	जल ही जीवन है	कहानी	• सामाजिकता
*	क्या आपको पता है?	निबंध पी.पी.टी. (पठन हेतु)	• सामाजिकता, सृजनात्मकता
12.	धरती के सवाल अंतरिक्ष के जवाब	साक्षात्कार	• वैज्ञानिक
*	अनोखा उपाय	कहानी (उपवाचक)	• मनोरंजन

6) पाठों का निर्माण क्रम - एक अवलोकन

पाठ के अंतर्गत आनेवाले पाठ्य विषयों का क्रम

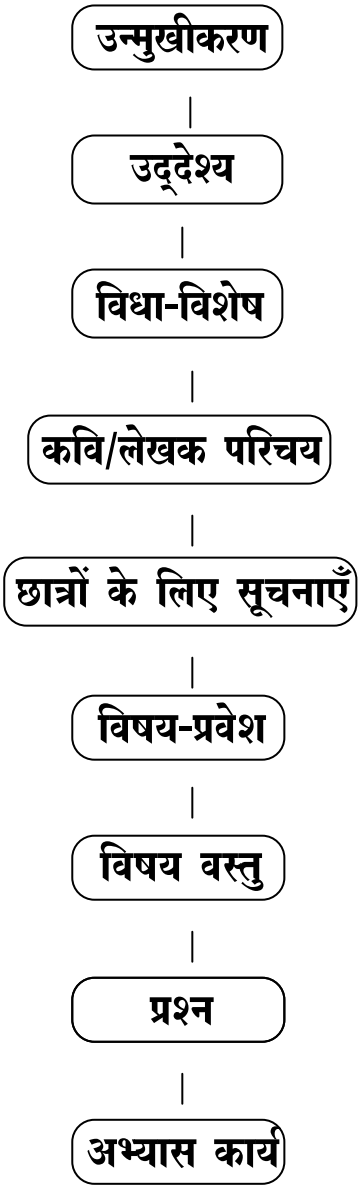

उन्मुखीकरण

(i) पाठ का आरंभ उन्मुखीकरण से होता है।

(ii) छात्रों को प्रेरणा देनेवाले अंशों के द्वारा पढ़ने वाले अंश की ओर रुचि पैदा करना इसका उद्देश्य है।

(iii) इसे पूर्व विषयवस्तु (Pre-Text) कहा जाता है।

(iv) इसमें कुछ प्रश्न दिये गये हैं - जिनके माध्यम से कक्षा में चर्चा चलाई जाय और विषय के प्रति अवबोधन कराया जाय।

(v) उन्मुखीकरण के अंतर्गत दिये गये प्रश्नों के अलावा कुछ अन्य प्रश्न भी पूछे जा सकते हैं।

उद्देश्य

(i) हर एक पाठ में विषयवस्तु के अनुसार उद्देश्य का निर्धारण किया गया है।

(ii) उद्देश्य के द्वारा बालकों में विषयवस्तु के बारे में अवबोध कराया जाता है।

(iii) बच्चों को पाठ पढ़ने से पहले ही उद्देश्य से अवगत कराने पर विषयवस्तु के प्रति रोचकता उत्पन्न कर सकते हैं।

विधा - विशेष

(i) पाठ्यपुस्तकों में विभिन्न प्रकार की विधाओं के आधार पर पाठ रखे गये हैं।

(ii) इसमें कविता, कहानी, निबंध, पत्र, एकांकी, यात्रा-वृत्तांत, साक्षात्कार आदि विधाओं पर पाठ दिये गये हैं।

(iii) बच्चों को साहित्य की विविध विधाओं से परिचय कराना इसका उद्देश्य हैं।

कवि परिचय/लेखक परिचय

(i) जहाँ तक हो सके लेखक व कवि के जीवन काल एवं उनके साहित्यिक कृत्यों पर प्रकाश डाला गया है।

(ii) दिये गये अंशों के अलावा अतिरिक्त बिंदुओं की जानकारी प्रदान करें।

छात्रों के लिए सूचनाएँ

(i) हर एक पाठ में इसकी विधा के अनुसार बच्चों के लिए सूचनाएँ दी गयी है।

(ii) ज्ञानात्मक चर्चा में भाग लेने के लिए छात्रों को प्रोत्साहित करने के लिए सूचनाएँ दी गयीं हैं।

(iii) इनके कारण छात्र अपने आपको अभिव्यक्त करने का प्रयास करते हैं।

(iv) इसी को Cognitive Apprentiship कहते हैं जिसका अर्थ हैं ज्ञानात्मक चर्चा में भाग लेना।

विषय प्रवेश

(i) इसमें पाठ के शिक्षण से पूर्व छात्रों को विषय के प्रति ज्ञान प्रदान करने के लिए पाठ का मूल प्रतिबिंब दर्शाया जाता है।

(ii) इसे Schema (विषय प्रवेश) कहते हैं अर्थात् पढ़े जानेवाले अंश पर कल्पना करना और चर्चा में भाग लेने के लिए तैयार रहना इसका उद्देश्य है।

विषयवस्तु

(i) पाठ्यपुस्तक में हर एक पाठ गुणवत्तापूर्ण (Potential Text), क्षमतापूर्ण हैं।

(ii) हर एक विषय अर्थपूर्ण चर्चा करने के अनुकूल है।

प्रश्न

(i) पाठ के बीच-बीच में संबंधित अंशों के बारे में चर्चा करने के लिए कुछ प्रश्न दिये गये हैं।

(ii) इन प्रश्नों के द्वारा विषयवस्तु पर विस्तृत रूप से चर्चा करना चाहिए।

(iii) चिंतन (thinking), प्रतिक्रिया (Reflexion), सहभागिता (Participation), अभिव्यक्ति (Expression) के लिए ये प्रश्न दिये गये हैं।

(iv) ये प्रश्न अंतर व्यवहार (Interaction) के लिए भी दिये गये हैं।

अभ्यास - कार्य

- हर पाठ में शैक्षिक मापदंडों पर आधारित अभ्यास कार्य दिये गये हैं।
- ये अभ्यास - कार्य तीन मुख्य शीर्षकों में विभाजित हैं -
  - I अर्थग्राह्यता - प्रतिक्रिया
  - II अभिव्यक्ति - सृजनात्मकता
  - III भाषा की बात

I **अर्थग्राह्यता - प्रतिक्रिया**

⇒''अ'' उपशीर्षक के अंतर्गत सुनो-बोलो के प्रश्न हैं।

⇒''आ'' ''इ'' और ''ई'' के अंतर्गत पढ़ना - लिखना के प्रश्न है।

II **अभिव्यक्ति - सृजनात्मकता**

⇒''अ'' के अंतर्गत स्वरचना - तीन - चार पंक्तियों में उत्तर लिखने से संबंधित प्रश्न

⇒''आ''के अंतर्गत स्वरचना - निबंधात्मक प्रश्न (5-8)

⇒''इ''के अंतर्गत सृजनात्मक अभिव्यक्ति

⇒''ई''के अंतर्गत प्रशंसा के प्रश्न हैं।

III **भाषा की बात**

''अ'' शब्द भंडार के प्रश्न।

''आ'' शब्द संबंधी व्याकरणांश के प्रश्न।

''इ'' शब्द संबंधी व्यावहारिक व्याकरण के प्रश्न।

''ई'' वाक्य संबंधी, व्यावहारिक व्याकरण के प्रश्न हैं।

परियोजना कार्य

- इस में उपर्युक्त तीन शैक्षिक मापदंडों से संबंधी कृत्य दिये गये हैं जो बच्चों को व्यावहारिक जीवन से जोड़ते हैं। यह बात ध्यान में रखें कि परियोजना में तीन शैक्षिक मापदंडों का समावेश है, परियोजना कार्य शैक्षिक मापदंड नहीं है।
- परियोजना कार्य का उद्देश्य बच्चों के अर्जित ज्ञान को विद्यालय के बाहरी जीवन से जोड़ना और सर्वेक्षण जैसी भावनाओं का विकास करना है।

7) नवीन पाठ्यपुस्तक के संसाधन

- शब्दकोश
- देशभक्ति गीत
- लोकगीत
- कहानियाँ - वर्षा - बादल संबंधी
- ग्रामीण जीवन की जानकारी
- वैज्ञानिक संबंधी विषयों की जानकारी
- निबंध पुस्तकें
- महापुरुषों की जीवनियाँ
- पर्यावरण संरक्षण, जागरुकता संबंधी नारें, कथाएँ, लेख, गीत, कविता आदि
- मुहावरे व लोकोक्ति, सूक्तिकोश
- जीवन संघर्ष की कहानियाँ
- स्वतंत्रता सेनानियों के चित्र एवं जीवनियाँ
- ग्रीटिंगकार्ड, प्रशंसा पत्र आदि बनाने की जानकारी से संबंधित पुस्तकें।
- भारत के दर्शनीय स्थलों की जानकारी से संबंधित पत्रिकाएँ और पुस्तकें।
- नदियों के बारे में जानकारी से संबंधित पुस्तकें
- पेड़-पौधों की कविताएँ, गीत, चित्र
- राष्ट्रीय एवं धार्मिक त्यौहारों से संबंधित पुस्तकें
- चित्रकला और कलाकारों के बारे में जानकारी से संबंधित पुस्तकें
- प्राकृतिक सौंदर्य के चित्र (सूर्योदय, सूर्यास्त, हरितप्रदेश आदि)
- कृषक जीवन की कथाएँ
- प्रदर्शन संबंधी विवरण

8. शैक्षिक मापदंड

नवीन पाठ्यपुस्तक का मूल उद्देश्य रटंत विद्या की समाप्ति है। ये पुस्तकें बालक के सर्वांगीण विकास पर बल देती है। आखिर इन पुस्तकों में ऐसे कौनसे लक्षण हैं जिनसे यह सिद्ध होता है कि ये अपने उपर्युक्त उद्देश्यों पर खरी उतरती है। इस की प्रतिपुष्टि हमें इसमें निहित 'शैक्षिक मापदंडों से होती हैं। ये शैक्षिक मापदंड बच्चों में सुनकर प्रतिक्रिया करने, धाराप्रवाह के साथ पढ़कर समझने, अपने शब्दों में अभिव्यक्त करने, विभिन्न विधाओं का सृजन करने, किसी विषय या तथ्य को महत्व समझने, नए-नए शब्दों की जानकारी और उनका वाक्यों में प्रयोग करने तथा व्यावहारिक रूप में व्याकरण अंशों को समझने जैसी विभिन्न क्षमताओं का विकास करने में सहायक हैं।

शैक्षिक मापदंडों पर आधारित अभ्यास कार्य इस प्रकार हैं -

I अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

II अभिव्यक्ति - सृजनात्मकता

III भाषा की बात

9) पाठ्यपुस्तक में परियोजना

बच्चों के अर्जित ज्ञान को विद्यालय के बाहरी जीवन से जोड़ने तथा बच्चों को निरीक्षण और सर्वेक्षण जैसी भावनाओं के विकास के लिए नवीन पाठ्यपुस्तक में परियोजना कार्य जोड़े गये हैं। इनमें विभिन्न विषयों से संबंधित अलग-अलग परियोजना कार्य दिए गए हैं जो सर्वेक्षण सकलन, संग्रहण और प्रस्तुतीकरण की क्षमताओं का विकास करते हैं। जैसे :-

X उदा :- 1) प्रकृति वर्णन से जुड़ी कविता का संग्रहण कीजिए।

2) शांती के पथ पर समर्पित किसी महान व्यक्ति के बारे में जानकारी इकट्ठा कीजिए।

3) 'जल संरक्षण' पर पी.पी.टी. बनाकर कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।

इन परियोजनाओं के दो प्रकार हैं - व्यक्तिगत और सामूहिक बच्चों के परियोजना कार्यों का आकलन समाचार संकलन, प्रतिवेदन लिखते तथा प्रस्तुतीकरण के आधार पर किया जायेगा।

नवीं कक्षा

क्रम संख्या	पाठ का नाम	परियोजना कार्य
1.	जिस देश में गंगा बहती है।	तालिका में दिए गए राष्ट्रीय चिह्नों के नाम लिखिए किसी एक का चित्र उतारकर 5 वाक्य लिखिए
2.	गाने वाली चिड़िया	वर्ग पहेली में छिपे पक्षियों के नाम पहचानिए। किसी एक पक्षी के बारे में जानकारी इकट्ठा कीजिए।
3.	बदले अपनी सोंच	पर्यावरण पर दिया गया कोई भाषण लेख संकलन कीजिए।
4.	प्रकृति की सोंच	सोहनलाल द्विवेदी के बारे में जानकारी एकत्र कीजिए। उनकी कोई एक कविता ढूँढ़कर लिखिए।
5.	फुटबॉल	वर्ग पहेली छिपे खेलों के नाम छिपे है उन्हें पहचानकर किसी एक के बार में जानकारी इकट्ठा कीजिए।
6.	बेटी के नाम पत्र	बाल अधिकार के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए।
7.	मेरा जीवन	सुभद्रा कुमारी चौहान की एक कविता संग्रहित कीजिए।
8.	यक्ष प्रश्न	पंचतंत्र की किसी एक नीति परक कहानी नीतिपरक कहानी का संग्रह कीजिए।
9.	रमज़ान	किसी एक व्यंजन बनाने की विधि पता कीजिए और लिखिए
10.	अमरवाणी	कुछ दोहे संकलित कीजिए
11.	सुनीता विलियम्स	दूसरों द्वारा अंतरिक्ष में भेजे गये उपग्रहों की जानकारी इकट्ठा कर एक उपग्रह के बारे में लिखिए।
12.	जागो ग्राहक जागो	जल जल संरक्षण के उपाय के विषय में दिए जाने विज्ञापनों का संग्रह कीजिए।

इस संसार में वैर से वैर कभी शांत नहीं होता, प्रेम से ही वैर शांत होता है। -धम्मपद

दसवीं कक्षा

क्रम संख्या	पाठ का नाम	परियोजना कार्य
1.	बरसते बादल	प्रकृति वर्णन से जुड़ी कविता का संग्रह कीजिए।
2.	ईदगाह	वरिष्ठ नागरिकों के प्रति आदर सम्मान के प्रति कोई कहानी लिखिए।
3.	हम भारतवासी	शांति के पथ पर समर्पित किसी महान् व्यक्ति जानकारी इकट्टा कर कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।
4.	कण-कण का अधिकारी	विश्व श्रम दिवस के बारे में जानकारी इकट्ठा कीजिए।
5.	लोकगीत	पाठ में दिए गए चित्र के आधार पर भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा लिखा एक प्रहसन नाटक अपने पुस्तकालय व अन्य स्त्रोतों से इकट्ठा कर कक्षा में प्रदर्शित कीजिए।
6.	अतंर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी	पहले पाठ से पाँचवे पाठ तक आए चित्रों में अपने मनपसंद चित्र के बारे में पाँच वाक्य लिखिए।
7.	भक्ति पद	भगवान की उपासना सच्चे हृदय से की जाती है। इस भावना को दर्शाने वाली किसी कविता का संग्रह कीजिए।
8.	स्वराज्य की नींव	देशभक्ति से संबंधित किसी एकांकी का संकलन कर कक्षा में प्रदर्शन कीजिए।
9.	दक्षिणी गंगा गोदावरी	यात्रा-वृत्तान्त विधा की जानकारी प्राप्त कीजिए। उसकी सूची बनाकर कक्षा में प्रदर्शन कीजिए।
10.	नीति दोहे	पाठ-पुस्तक में आए नीति वाक्यों में आपको मनपसंद 10 नीति वाक्यों की सूची बनाइए।
11.	जल ही जीवन है	जल संरक्षण पर पी.पी.टी. बनाकर कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।
12.	धरती के सवाल अंतरिक्षके जवाब	छठवीं कक्षा से दसवीं कक्षा तक की हिंदी पाठ्य पुस्तकों के मुख पृष्ठों में (कवर-पेज) आपको कौनसा मुख पृष्ठ बहुत अच्छा लगता है? अपने विचार लिखिए।

परियोजना कार्य का आयोजन

- पाठयोजना के अंतर्गत 5 वें कालांश में गृकार्य के रूप में दिया जाना चाहिए।
- परियोजना कार्य को कक्षा-कक्ष में पढ़वायें।
- परियोजना कार्य कैसे किया जाय इसके बारे में समझाया जाय।
- समाचार एकत्र करना, संबंधित स्त्रोतों की जानकारी देना?
- समाचार एकत्र करने के लिए आवश्यक प्रश्नवाली बनाना।
- परियोजना कार्य को समूह में बाँटे और किसे करना है इसकी सूचना देना।
- जो समाचार एकत्र किया गया है उस पर प्रतिवेदन बनाने की सूचनाएँ दें।
- .....कालांश में परियोजना कार्य का प्रदर्शीन करवायें। (प्रतिवेदन को सामूहिक या व्यक्तिगत रूप से पढवाएँ)
- भाव, विषय, वाक्य निर्माण, शब्दविन्यास, अक्षर-दोष इन पर चर्चा करते हुए प्रतिवेदन को ठीक किया जाय।
- अंत में इस परियोजना कार्य द्वारा अध्यापक प्रश्न पूछेंगे।
- उपरोक्त अंशों के आधार पर छात्रों को अंक प्रदान किया जाय।

अंक विभाजन - सूचक

- समाचार एकत्र करना
- प्रतिवेदन लिखना
- प्रदर्शन या प्रतिक्रिया

Note : रचनात्मक मूल्यांकन में परियोजना कार्य एक अंश है। इसके लिए एक नोट बुक रखी जाय। कोई अधिकारी या जांचकर्ता आने पर उन्हें परियोजना कार्य पुस्तिका दिखाई जाए।

10) मूल्यांकन

जब पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तक में परिवर्तन के साथ मूल्यांकन प्रक्रिया में वृहत् स्तर पर परिवर्तन हुए और वर्तमान समय में यह परिवर्तन हमारे समक्ष सतत् समग्र मूल्यांकन के रूप में उपस्थित है। यही हमारी 8,9,10 कक्षाओं की पाठ्यपुस्तकों का मूल आधार है। सतत् समग्र मूल्यांकन का मुख्य उद्देश्य मूल्यांकन को बोझरहित बनाना है। और मूल्यांकन को शिक्षण अधिगम के अंतर्गत लाना है। इसके लिए यह छात्र की अपेक्षित दक्षताओं और उनकी समग्रता के आधार पर आकलन पर बल देता है।

इससे पूर्व जो आकलन किया जाता था वह इकाई परीक्षा के रूप में (वर्ष में चार बार) और सत्र परीक्षा के रूप में (वर्ष में तीन बार) किया जाता था। यह मूल्यांकन छात्रों की सभी क्षमताओं के आकलन में असमर्थ दृष्टिगोचर होता था। एक इकाई परीक्षा के पश्चात् फिर से आकलन अगली इकाई परीक्षा में ही होता था। बीच में किसी प्रकार का आकलन नहीं किया जाता था। किंतु सतत् समग्र मूल्यांकन की प्रणाली को अपनाने से बालकों की सभी क्षमताओं के निरंतर आकलन में आसानी हो गयी है। हमारी पाठ्यपुस्तक का हर पाठ आरंभ से लेकर (उन्मुखीकरण) अंत (परियोजना कार्य) तक इस पर आधारित है।

अध्याय –II

पाठ्य मुख्यांश

इकाई-I

1. **बरसते बादल** (कविता) सुमित्रानंदन पंत
2. **ईदगाह** (कहानी) प्रेमचंद
- o **यह रास्ता कहाँ जाता है?** (पठन हेतु) बाबू रामसिंह
3. **हम भारतवासी** (कविता) आर.पी.'निशंक'
- o **शांति की राह में** (उपवाचक-निबंध) संकलित

इकाई-II

4. **कण-कण का अधिकारी** (कविता) डॉ. रामधारी सिंह 'दिनकर'
5. **लोकगीत** (निबंध) भगवतशरण उपाध्याय
- o **उलझन** (पठन हेतु कविताएँ)
6. **अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी** (पत्र) संकलित
- o **दो कलाकार** (उपवाचक - कहानी) मन्नू भंडारी

इकाई-III

7. **भक्ति पद** (कविता) रैदास, मीराबाई
8. **स्वराज्य की नींव** (एकांकी) विष्णु प्रभाकर
- o **माँ मुझे आने दे!** (पठन हेतु कविता) मृदुल जोशी
9. **दक्षिणी गंगा गोदावरी** (यात्रा-वृत्तांत) काका कालेलकर
- o **अपने स्कूल को एक उपहार** (उपवाचक-कहानी) ऋतु भूषण

इकाई-IV

10. **नीति दोहे** (कविता) रहीम, बिहारी
11. **जल ही जीवन है** (कहानी) श्री प्रकाश
- o **क्या आपको पता है?** (पठन हेतु पी.पी.टी. निबंध) जेफ ब्रेनमन
12. **धरती के सवाल अंतरिक्ष के जवाब** (साक्षात्कार) संकलित
- o **अनोखा उपाय** (उपवाचक-अनूदित कहानी) डॉ. रावूरि भरद्वाज

इकाई - I

1) बरसते बादल

- सुमित्रानंदन पंत

उन्मुखीकरण

यह कविता पाठ प्रकृति से संबंधित है। इसीलिए उन्मुखीकरण प्रसंग के अंतर्गत प्रकृति से संबंधित काव्यांश लिया गया है। इस उन्मुखीकरण का मुख्य उद्देश्य बच्चों में प्रकृति के प्रति प्रेम और सौंदर्य भाव को उत्पन्न करना है। इसके द्वारा वर्षा के महत्व पर प्रकाश डाला गया है।

उद्देश्य

- प्रकृति से संबंधित कविताओं को पढ़ने के लिए बच्चों को प्रोत्साहित करना।
- सौंदर्य बोध कराना।
- मनोरंजन की भावना जगाना।
- प्रकृति के संरक्षण के लिए प्रेरित करना।

विधा विशेष

- यह गेय कविता पाठ है।
- इसमें कोमल कांत पदावली के द्वारा वर्षा ऋतु का सुंदर वर्णन किया गया है।

कवि परिचय

- सुमित्रानंदन पंत जी का जन्म 20 मई 1900 को उत्तराखंड के कौसानी-अल्मोडा में हुआ। सात वर्ष की उम्र में स्कूल में काव्य पाठ के लिए पुरस्कृत किये गये। साहित्य लेखन के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार ज्ञानपीठ और सोवियत रूस पुरस्कार दिया गया। इस तरह पंत जी के जीवन एवं साहित्य संबंधी विषयों की जानकारी बच्चों को दें।

विषय वस्तु

- वर्षा ऋतु में प्रकृति के सौंदर्य का वर्णन
- झम-झम-झम (बादल), छम-छम-छम (बूंदे)
  चम-चम-चम (बिजली), थम-थम (सपने) आदि ध्वन्यात्मक शब्दों का सुंदर प्रयोग।
- टर-टर (मेंढ़क), म्यव-म्यव (मोर)
  पीउ-पीउ (चातक), झन-झन (झिंगुर) की
  आवाज़ों का वर्णन।

- सोनबालक - एक प्रकार के पक्षी की प्रसन्नता का वर्णन।
- रिमझिम-रिमझिम वर्षा की बूँदों की आवाज़ से ही धरती के कोने-कोने में प्रसन्नता व्याप्त हो जाती है।
- 'सावन' के महीने का सुंदर वर्णन किया गया है।

2. ईदगाह

- प्रेमचंद

उन्मुखीकरण

इस कविता की पंक्तियाँ त्याग की भवाना से भरपूर हैं। इनके द्वारा त्याग, खुशहाली और दया की भावना झलक पड़ती है। प्रकृति के हर एक अंग के द्वारा त्यागपूर्ण जीवन का अवलोकन करा सकते हैं। छात्रों में भाषा विकास के लिए यहाँ तीन प्रश्न दिये गये हैं जिनके माध्यम से बालकों में नैतिक मूल्यों का विकास हो।

इनके अलावा भी कुछ प्रेरणात्मक प्रश्न पूछकर बालकों में चर्चा का आयोजन कर सकते हैं।

उद्देश्य

- कहानी विधा की भाषा शैली से परिचित करवाना।
- छात्रों में कहानी लेखन कला का विकास करना।
- त्याग, सद्भाव व विवेक जैसे संवेदनशील और कर्तव्यबोध संबंधी गुणों का विकास करना।
- बुजुर्गों के प्रति श्रद्धा व आदर की भावना का विकास करना।

विधा विशेष

- यह एक कहानी पाठ है।
- इस पाठ में दादी और पोते का मार्मिक प्रेम दर्शाया गया है।
- कथोपकथन, प्रभावशाली है, वातावरण का सजीव चित्रण है।
- बाल्यावस्था के कोमल और नाज़ुक भावों का खूबसूरत वर्णन मिलता है।

लेखक परिचय

- प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई, 1880 ई में उत्तर प्रदेश के लमूही नामक गाँव में हुआ।
- इनका असली नाम धनपतराय श्रीवास्तव था।
- उर्दू में गुलाबराय और हिंदी में प्रेमचंद नाम से लेखन कार्य किया।
- प्रेमचंद का निधन 8 अक्तूबर, 1936 को हुआ।
- इनकी कहानियाँ 'मानस सरोवर' शीर्षक से 8 खंडों में संकलित हैं।

प्रेमचंद के जीवनकाल का परिचय और उनकी साहित्य सेवा संबंधी जानकारी दें।

विषय वस्तु

- ईद के सुनहरे दिन का वर्णन।
- त्यौहार के दिन बच्चों में उमड़े उमंग और उत्साह का वर्णन।
- हामिद की स्थिति का विश्लेषण।
- अमीना की निस्सहायता और अशक्तता का वर्णन।
- शहर का वातावरण, ईदगाह और इसके आस पास के मेले और बाज़ार का चित्रण।
- मेले में बिकनेवाली तरह-तरह की मिठाइयों का, खिलौनों का विवरण।
- मासूम बच्चे हामिद के दिल में दादी के प्रति प्रेम की भावना।
- बच्चों द्वारा हामिद का मज़ाक उड़ाना।
- दादी का क्रोध प्रेम में बदलना।
- बालक के त्याग, सद्भाव और विवेक का वर्णन।

3. हम भारतवासी

- आर.पी. निशंक

उन्मुखीकरण

विभिन्नता में एकता भारत की एक विशेषता है। अनेक धर्म, जाति और वेश-भूषा के लोग रहते हैं। इसके बावज़ूद भी सब लोग मिलजुल कर रहते हैं। इस उन्मुखीकरण प्रसंग द्वारा विभिन्नता में एकता के भाव को जागृत करने का प्रयास किया गया है।

उद्देश्य

- बच्चों में नयी कविताओं और गीतों के सृजन की क्षमता का विकास करना।
- श्रद्धा, प्रेम, सत्य, अहिंसा, त्याग, समर्पण, विश्वबंधुत्व और विश्वशांति जैसे सद्गुणों का विकास करना।
- 'वसुधैव कुटुंबकम् की भावना का विकास करना।

विधा विशेष

- यह गेय कविता है।
- इस कविता से छात्रों में देशभक्ति और विश्वबंधुत्व की भावना जागृत होती है।
- यह एक प्रेरणाप्रद गीत है।

कवि परिचयः-

- रमेश पोखरियल ''निशंक'' का साहित्य अधुनिक काल से संबंधित है। वे उत्तराखंड के भूतपूर्व मूख्यमंत्री भी रह चुके हैं। इनकी रचनाओं में समर्पण, नवंकुर, मुझे विधाता बनना है आदि प्रसिद्ध हैं।

विषय वस्तु

- भारतवासियों में श्रद्धा और प्रेम जैसे अद्भुत गुण हैं।
- भारतवासी 'नफ़रत का कुहासा तोड़ना' अर्थात् घृणा जैसी भावनाओं को दूर करना चाहते हैं।
- भारतवासी ऊँच-नीच का भेद मिटाकर नफ़रत, निराशा आदि भावनाओं को दूर कर संसार को जागृत करते हैं।
- भारतवासी उलझन में उलझे लोगों को सही मार्गदर्शन कर उनके जीवन में खुशियाँ लाना चाहते हैं।
- संसार में व्याप्त सारे द्वेष मिटाकर सत्य, अहिंसा, त्याग, समर्पण आदि भावनाओं को विकसित कर इस दुनियाँ को स्वर्ग बनाना चाहते हैं।
- 'वसुधैव कुटुंबकम्' की अवधारणा को स्थापित कर विश्वबंधुत्व की भावना का प्रसार करना चाहते हैं।

विशेष सूचना

- यह गीत Internet के सहारे Google या Youtube में भी वीडियों के रूप में देखा जा सकता है।

इकाई - II

4. कण-कण का अधिकारी

- डॉ. रामधारी सिंह 'दिनकर'

उन्मुखीकरण

यह कविता पाठ में श्रमिकों का जीवन चित्रण है। श्रम ही गांधीजी के जीवन का मूल सूत्र रहा है। उनके जीवन के द्वारा श्रम का महत्व बताना चाहिए। श्रमिक जीवन के प्रति बालकों में आदर और सम्मान की भावनाओं को जगाना इस उन्मुखीकरण गीत का उद्देश्य है। यहाँ उन्मुखीकरण में तीन प्रश्न दिए गए हैं।

इन प्रश्नों के अलावा कुछ अन्य प्रश्न भी पूछते हुए बातचीत कर सकते हैं।

उद्देश्य

- बच्चों में सामाजिक समस्याओं के प्रति एक निश्चित धारणा पैदा करना।
- करुणा, उदारता, श्रम-सहिष्णुता आदि सद्भावों को जगाना।

विधा विशेष

- इस कविता पाठ में ओजपूर्ण और प्रेरणाप्रद भाषा का प्रयोग है।
- यथार्थवादी जीवन का विश्लेषण किया गया है।

कवि परिचय

- डॉ. रामधारी सिंह जी का जन्म बिहार के मुंगेर में हुआ था।
- दिनकर की भाषा ओजपूर्ण है।
- इनकी कविताओं में विचार और संवेदना का सुंदर समन्वय दिखाई देता है।
- इन विषयों के अलावा दिनकर जी के जीवन एवं साहित्यिक विशेषताओं की जानकारी दें।

विषयवस्तु

- भाग्यवाद की आड़ में कुछ लोग पाप से जमा किया हुआ धन भोगते हैं।
- मानव का निरंतर परिश्रम ही नर समाज का भाग्य है।
- सारा विश्व उसके भुजबल के सामने झुक गया है।
- श्रमिकों की उन्नति ही देश की उन्नति है।

- मेहनत करने वालों को ही सुख पाने का अधिकार है।
- इस प्रकृति में जो भी है वह प्रकृति का धन है।
- जन-जन ही कण-कण के अधिकारी हैं।

5. लोकगीत

- भगवतशरण उपाध्याय

उन्मुखीकरण

यह पाठ लोकगीतों की जानकारी से संबंधित है। इसमें छोटी सी कविता के माध्यम से लोकगीत का परिचय दिया गया है। लोकगीतों पर चर्चा के द्वारा पाठ की ओर अग्रसर होना चाहिए। इस संबंध में मेहंदी किन-किन अवसरों में लगाई जाती है विभिन्न धर्मावलंबियों के द्वारा उन पर कौन-कौन से गीत गाये जाते हैं - इन अंशों पर कक्षा में चर्चा चलाई जाय।

उद्देश्य

- निबंध विधा से अवगत कराना।
- लोकगीतों के संग्रहण एवं सृजन के लिए बच्चों को प्रेरित करना।

विधा विशेष

- यह पाठ निबंध विधा में है। निबंध का अर्थ है - ''बाँधना'' । सुंदर और उचित शब्दों के द्वारा भावों की प्रस्तुती ही निबंध है। निबंध लेखन शैली का ज्ञान देना इस पाठ का मुख्य उद्देश्य है।

लेखक परिचय

- इस निबंध के लेखक श्री भगवतशरण उपाध्याय हैं। इनका जन्म 1910 में हुआ। विश्व साहित्य की रूपरेखा, कालिदास का भारत, ठूँठा आम, गंगा गोदावरी आदि उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।

विषयवस्तु

- **शास्त्रीय संगीत -** किसी भी वाद्य (सितार, वीणा आदि) की सहायता से सुर और ताल में गीत।
- **लोकगीत -** जनता के द्वारा सामान्य बोलचाल की भाषा में गाये गये गीत।
- **बोली -** किसी क्षेत्र विशेष की सामान्य बोलचाल की क्षेत्रीय भाषा।
- **विवाह के मटकोड :** विवाह के समय सजने-सँवरने ने के तरीके।
- **चैता, कजरी, बारहमासा, सावन -** ऋतुओं पर आधारित लोकगीत।

- **सिरजती -** सृजन करती है।
- **अपने-अपने विद्यापति -** प्रत्येक प्रदेश के लोकगीत के रचयिता अलग-अलग हैं जैसे - पूरब के विद्यापति मैथिल - कोकिल हैं।
- **ज्यौनार -** दावत
- **उद्दम -** बंधन रहित, स्वतंत्र
- **झांझ -** गोलाकार पीतल के टुकडे का जोडा जिसके परस्पर प्रहार से ध्वनि निकलती है।
- **गढ़वाल, किन्नौर, काँगडा -** पहाडी प्रांत जो हिमाचल प्रदेश एवं पश्चिमी उत्तर प्रदेश से लगे हुए हैं।
- **कहरवा -** पाँच भाषाओं मात्राओं का एक ताल (नाच या गाना जो इस ताल पर होता है।)
- **बिरहा -** पूर्वी उत्तर प्रदेश में गाये जानेवाला एक प्रकार का गीत।
- **सारंग -** ओडव जाति का एक राग जो दिन के दूसरे पहर में गाया जाता है।
- **बिदेशिया -** विदेशी
- **आल्हा -** 31 मात्राओं का एक छंद, पृथ्वीराज चौहान के समकालीन एक बुंदेल खंड वीर।
- **बखान -** वर्णन, प्रशंसा
- **कजरी -** एक प्रकार का गीत जो मुख्य रूप से बरसात के समय गाया जाता है।
- **उद्दाम जीवन -** बंधन रहित जीवन, निरंकुश जीवन

6. अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी

उन्मुखीकरण

यह पाठ हिंदी भाषा से संबंधित है। इस अनुच्छेद के द्वारा भाषा को परिभाषित करने का प्रयत्न किया गया है। पशु-पक्षी भी तरह-तरह की आवाज़ों के द्वारा अपनी भावनाओं को दर्शा सकते हैं। इसमें तीन प्रश्न दिए गए हैं जिनके माध्यम से भाषाओं को लेकर कक्षा-कक्ष में चर्चा आयोजित करें।

उद्देश्य

- भाषा का महत्व समझाना
- अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी का महत्व बताना।
- हिंदी के प्रचार व प्रसार के द्वारा भारतीय सभ्यता एवं गरिमा को दुनिया में फैलाना।

विधा विशेष

- पत्र लेखन गद्य की एक प्रमुख विधा है।
- सरल, प्रवाहपूर्ण शब्दों के द्वारा भाव अभिव्यक्तिकरण इस विधा का प्रमुख उद्देश्य है।

विषय वस्तु

- 1975 ई. में महाराष्ट्र के नागपुर में 10 जनवरी से 14 जनवरी तक विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया था।
- हर वर्ष 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस मनाया जाता है।
- राज भाषा -

  किसी भी देश में प्रचलित वह भाषा जिसका उपयोग प्रायः सभी राजनैतिक कार्यों और न्यायालयों आदि में होता है। किसी भी भाषा को राजभाषा का स्थान पाने के लिए संविधान के द्वारा मान्यता मिलना ज़रूरी है।
- केंद्रीय हिंदी संस्थान का मुख्यालय आगरा में है।
- भारत में हिंदी के प्रचार व प्रसार में इस संस्थान का महत्वपूर्ण योगदान है।
- अन्य हिंदी संस्थान - मुख्यालय

  1. दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा — 1. चेन्नै
  2. आ.प्र. हिंदी प्रचार सभा — 2. हैदराबाद
  3. केरल हिंदी प्रचार सभा — 3. एर्नाकुलम
  4. हिंदी साहित्य सम्मेलन — 4. इलाहाबाद
  5. नागरी प्रचारिणी सभा — 5. वाराणसी

- **प्रथम भाषा हिंदी -**

  हिंदी को अपनी मातृभाषा के रूप में अपनाना।
- **द्वितीय भाषा हिंदी -**

  हिंदी को वैकल्पिक भाषा के रूप में अपनाना।

इकाई - III

7. भक्ति पद

- रैदास

- मीराबाई

उन्मुखीकरण

यह पाठ भक्ति संबंधित पदों का है। इन पदों से छात्रों में भक्ति भावना जागृत कर सकते हैं। निराडंबर भक्ति भावना के द्वारा बच्चों में सामाजिक एवं मानव मूल्यों के प्रति अवबोध कराने का प्रयास किया गया। इसमें तीन प्रश्न दिये गये हैं जिनके द्वारा भगवत् शक्ति की तरह बालकों को सोचने की प्रेरणा देना चाहिए।

इनके अलावा इन्हीं प्रकार के अन्य प्रश्न भी पूछते हुए कक्षा में चर्चा चलाई जा सकती है।

उद्देश्य

- छात्रों में प्राचीन साहित्य के प्रति रुचि जगाना।
- गुरु के माध्यम से भगवान को प्राप्त करने की प्रेरणा देना।
- प्रकृति के हर एक अंग में भगवान के दर्शन करना।

विधा विशेष

- यह प्राचीन पद्य साहित्य है।
- इसमें रैदास की चौपाई, मीराबाई का एक भक्ति पद है।
- ये चौपाई और पद रागात्मक रूप में गाये जा सकते हैं।

कवि परिचय

रैदास -

- यह ज्ञान मार्गी शाखा के प्रमुख कवि हैं।
- मूर्ति पूजा, तीर्थ यात्रा जैसे बाह्य आडंबरों का खंडन करते थे।
- व्यक्ति की आंतरिक भावनाओं और आपसी भाईचारे को ही सच्चा धर्म मानते थे।

मीराबाई -

- मीरा भक्ति आंदोलन की आध्यात्मिक प्रेरणा है।
- मीरा के पद गुजरात, बिहार और बंगाल तक प्रचलित हैं।
- मीरा की भक्ति दैन्य और माधुर्य भाव की है।

विषय वस्तु

रैदास

- कवि अपने आराध्य देवता को याद करते हुए उनसे अपनी तुलना करते हैं।
- उनके प्रभु बाहर कहीं किसी मंदिर या मस्ज़िद में नहीं विराजते वरन् उनके अपने अंतस में सदा विद्यामान रहते हैं।

- इनकी दृष्टि में प्रभु हर हाल में, हर काल में उससे श्रेष्ठ और सर्वगुण संपन्न है।
- भगवान से ही कवि को भगवान जैसे लक्षण पाने की प्रेरणा मिलती है।

मीराबाई

- मीराबाई के इस पद में गुरू की महिमा का वर्णन मिलता है।
- राम नाम रूपी रतन गुरु के द्वारा ही प्राप्त हुआ।
- सांसारिक सुखों को त्यागने पर ही यह राम नाम रूपी पूंजी प्राप्त होती है।
- यह एक ऐसी पूंजी है जिसे न चोर लूट सकते हैं और ना ही खर्च करने पर घटती है।
- यह दिन-ब-दिन बढ़नेवाली पूँजी है।
- सत्य रूपी नाव को खेनेवाले गुरू की सहायता से ही इस भवसागर को पार कर सकते हैं।
- मीरा हर्ष के साथ भगवान श्रीकृष्ण का यश गाती है।

8. स्वराज्य की नींव

-विष्णु प्रभाकर

उन्मुखीकरण

यह एक एकांकी पाठ है। इसके संदर्भ में आदर्श नेता के गुणगाणों की चर्चा चलायी जाय। एक अच्छा आदर्श नेता ही एक श्रेष्ठ शासक बन सकता है। सत्य, धर्म, अहिंसा जैसे उत्तम गुणों से पूर्ण राज्य की स्थापना करना शासक का मुख्य कर्तव्य है। इसके अंतर्गत कुल 3 प्रश्न दिये गये हैं। जिनके माध्यम से कक्षा में चर्चा का आयोजन किया जाए।

उद्देश्य

- इस पाठ के द्वारा छात्र में एकांकी भाषा व रचना शैली से अवगत कराना।
- छात्रों में देश भक्ति भावना का विकास करना।

विधा विशेष

- 'एकांकी' साहित्य की एक ऐसी विधा है जो नाटक के समान अभिनय से संबंधित है।
- एकांकी का अर्थ है एक अंकवाला।
- यह एकांकी पाठ एक ऐतिहासिक घटना पर आधारित है।

लेखक परिचय

- विष्णु प्रभाकर हिंदी साहित्य के सुप्रसिद्ध रचनाकार हैं।
- प्रेमचंद परंपरा के ''आदर्शोन्मुख यदार्थवादी'' लेखन में इनको मान्यता प्राप्त है।
- 'आवारा मसीहा' नामक रचना पर इन्हें 'सोवियत लैंड नेहरु पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। भारत सरकार ने इन्हें 'पद्म भूषण' से सम्मानित किया है।

विषय वस्तु

- महारानी लक्ष्मीबाई अपनी सखी जूही के साथ रंग प्रवेश करती हैं।
- झांसी राज्य के लिए रानी अपना सब कुछ त्यागने के लिए तैयार है।
- स्वराज्य प्राप्ति के लिए समाज में से छुआछूत और ऊँच-नीच की भेद-भावनाएँ मिटाने की आवश्यकता।
- सफलता और असफलता दोनों भी भगवान पर निर्भर हैं।
- स्वराज्य की स्थापना के लिए ऐहिक सुखों का त्याग।
- स्वराज्य प्राप्ति के लिए देश भक्तों की आवश्यकता।
- आत्मविश्वास के साथ स्वराज्य प्राप्ति की ओर अग्रसर होना।

रानी लक्ष्मीबाई के जीवन की कुछ विशेष जानकारी -

- रानी लक्ष्मीबाई का जन्म 19.11.1835 वाराणसी (बडोही) में हुआ।
- पति गंगाधर राव, पुत्र दामोदर राव, दत्तक पुत्र आनंद राव।
- माता - भगीरथी बाई, पिता मोरोपंत तांबे।
- अंग्रेज़ों से युद्ध करते हुए 18.6.1858 के दिन 'ग्वालियर' में वीर गति को प्राप्त हुई।

9. दक्षिणी गंगा गोदावरी (यात्रा-वृत्तांत)

-काका कालेलकर

उन्मुखीकरण

यह एक यात्रा-वृत्तांत पाठ है। एक छोटी सी कविता के माध्यम से उत्तुंग तरंगों वाली नदी का वर्णन किया गया है। स्कंद पुराण में नदियों की प्रशस्ति गायी गयी है। शिवाजी की जटाजूट से ही सभी नदियों का आविर्भाव हुआ है। इ

उद्देश्य

- छात्रों को यात्रा-वृत्तांत के बारे में बताना।
- नदियों के बारे में ज्ञान प्रदान करना।
- पुराणों पर आधारित कथाओं द्वारा नदियों के उद्गम का बोध कराना।

विधा विशेष

- यह एक यात्रा-वृत्तांत है।
- इसमें नदियों की प्रशस्ति एवं उपयोगिता के महत्व पर प्रकाश डाला गया है।
- इस यात्रा-वृत्तांत में लेखक ने दर्शनीय स्थल संबंधित अपनी यात्रा की अनुभूतियों को रोचक एवं ज्ञानवर्धक ढंग से प्रस्तुत किया।

लेखक परिचय

- श्री काका कालेलकर ने गांधीजी के सहयोग में आने के बाद ही हिंदी में लेखन कार्य शुरू किये।
- इन्होंने यायावार की तरह देश के कोने-कोने में भ्रमण किया।
- काका के लेखन की भाषा सरल, सरस, ओजस्वी और सार गर्भित है।
- विचार पूर्ण निबंध हो या यात्रा संस्मरण, सभी विषयों की तर्कपूर्ण व्याख्या काका की लेखन शैली की विशेषता रही है।

विषयवस्तु

- इस पाठ में पावन और पवित्र गोदावरी नदी के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन है।
- प्रकृति छटा का सुंदर वर्णन।
- विशाल, सुंदर पाटवाली गोदावरी नदी का वर्णन।
- गोदावरी नदी की शान-ओ-शौकत का बखान।
- प्रकृति के ठाट-बाट का अनुभव।
- गोदावरी नदी की चंचलता का अद्‌भुत वर्णन किया गया।
- भँवरों का झूम-झूम मंडराने का, खिल-खिलकर हँसने का वर्णन मिलता है।
- गोदावरी के टापू का वर्णन।
- टापू ..... चारों ओर जल से घिरा हुआ स्थल या ज़मीन, (द्‌वीप।)
- गोदावरी धीर-गंभीर माता, इसीलिए यह दक्षिणी गंगा कहलाई गयी।
- गोदावरी के जल में अमोघ शक्ति है।
- गोदावरी नदी के तट पर बनाये गए बाँधों का विवरण -

अ)	काटन बैरेज	-	धवलेश्वरम्
आ)	श्रीरामसागर प्राजेक्ट	-	निज़ामाबाद
इ)	त्रयंबकेश्वर बाँध	-	नासिक

- गोदावरी नदी के तट पर स्थित तीर्थ स्थान -

क)	भद्राचलम	-	श्री राम मंदिर
ख)	कोटिपल्ली	-	सोमेश्वर मंदिर
ग)	द्राक्षाराम्म्	-	भीमेश्वर मंदिर
घ)	अमलापुरम	-	वेंकटेश्वर मंदिर
ङ)	अंतर्वेदी	-	लक्ष्मी नरसिंह मंदिर
च)	बासरा	-	सरस्वती देवी मंदिर
छ)	कालेश्वरम	-	शिवजी का मंदिर

- गोदावरी की लंबाई - 1465 कि.मी. है।
- गोदावरी का जन्म स्थान 'त्रियंबक-नासिक' जो महाराष्ट्र में है।
- आंध्र प्रदेश के पूर्व गोदावरी ज़िले से होते हुए बंगाल की खाडी में विलीन हो जाती है।

इकाई - IV

10. नीति दोहे

उन्मुखीकरण

नैतिक भावनाओं से संबंधित पाठ होने के कारण इसकी पंक्तियाँ भी नैतिक भावना की ली गयी हैं। इनसे छात्रों को नैतिक गुणों की प्रेरणा देते हुए नम्रता व मधुरवाणी के महत्व पर प्रकाश डाला गया है। नैतिक गुणों से संबंधित प्रश्न पूछते हुए छात्रों द्वारा दिए गए उत्तरों के द्वारा उनमें नैतिक गुणों का विकास और नीति संबंधी विषय जानने की जिज्ञासा जागृत करें। छात्रों में भाषा विकास के लिए यहाँ मुख्यतः तीन प्रकार के प्रश्न पूछे गये हैं। वे - संज्ञानात्मक, क्रियात्मक, विचारात्मक प्रश्न हैं।

इनके अलावा इन्हीं प्रकार के अन्य प्रश्न भी पूछते हुए बातचीत कर सकते हैं।

उद्देश्य

- यहाँ छात्रों को केवल - दोहा किसे कहते हैं? उसके लक्षण क्या होते हैं? का परिचय मात्र देना है। छंद व उसके प्रकारों का संपूर्ण विवरण देना आवश्यक नहीं है।

विधा विशेष

- पद्य साहित्य में 'दोहा' शैली के बारे में बताते हुए हमारे जीवन में नीति दोहों के महत्व को स्पष्ट करना है।

विषय वस्तु

कवि : रहीम

- नीति कवि रहीम के परिचय में दिये गये मुख्य बिंदुओं को बताते हुए उनके नीति दोहों का महत्व बताना है।

  यहाँ पहले दोहे में विपत्ति में साथ देनेवाला ही सच्चा मित्र कहते हुए, दूसरे दोहे में जीवन में गौरव के महत्व पर प्रकाश डाला है।

  रहीम के दोहों से संबंधित मौखिक अभिव्यक्ति के विकास के लिए तीन प्रश्न दिए गए हैं। इन प्रश्नों के द्वारा छात्रों में सुनने-बोलने का विकास करने के साथ-साथ चिंतन कर सही उत्तर देने योग्य ज्ञान का विकास करें।

कवि : बिहारी

- कवि बिहारीलाल के परिचय में दिये गये मुख्य बिंदुओं को बताते हुए, 'गागर में सागर' भर देने की तरह सृजन किये गये उनके दोहों के महत्व पर प्रकाश डालना चाहिए।

  यहाँ बिहारी के पहले दोहे में 'कनक' शब्द का प्रयोग दो अर्थों में हुआ है। एक 'धतूरा' (यह एक ऐसा पौधा है जिसके पत्ते और फूल नशीले होते हैं।) है तो दूसरा 'सोना। जहाँ धतूरे के सेवन से मनुष्य पागल

हो जाता है तो वहीं सोना या धन-दौलत के लोभ से भी मनुष्य पागल हो जाता है।
बिहारी के दूसरे दोहे में कहा गया है कि - जो व्यक्ति सूझ-बूझ से व्यवहार करता है वह हमेशा सफल होता है और समाज में ऊँचा दर्जा प्राप्त करता है।

11. जल ही जीवन है

-श्री प्रकाश

उन्मुखीकरण

मनुष्य चाहे जितना भी बुद्धिमान हो परंतु वह इस प्रकृति का ही एक अभिन्न अंग हैं। इस दुनियाँ में समस्त प्राणी कोटि को जल की आवश्यकता है। पेड़-पौधों से वर्षा और इसी के कारण जल प्राप्त होता है। जल की उपलब्धता और संरक्षण पर चर्चा से पहले बच्चों में वृक्षों की आवश्यकता पर ध्यान दिलाना इसका मुख्य उद्देश्य है।

विधा विशेष

- गद्य साहित्य में कहानी रचना शैली के महत्व पर प्रकाश डालते हुए हमारे जीवन पर कहानियों के प्रभाव को स्पष्ट करना है। यहाँ पर जल के महत्व के बारे में 'कहानी' विधा के माध्यम से बताया गया है।

लेखक परिचय

- इस कहानी के लेखक श्री प्रकाश है इन्होंने विज्ञान विषय संबंधी ढेर सारे निबंध लिखे हैं। इनके निबंध विचारोत्तेजक हैं। प्रस्तुत रचना ''संचार माध्यमों के लिए विज्ञान'' नामक पुस्तक से ली गयी है।

विषयवस्तु

- प्रस्तुत इक्कीसवीं सदी का मानव सुख-सुविधाओं की लालसा में खोकर भविष्य पर दृष्टि न रखकर आगे बढ़ेगा तो उसके अस्तित्व पर प्रश्न चिह्न लग जायेगा।
  यहाँ पर जल संरक्षण के बारे में बताते हुए उसके नष्ट हो जाने पर समस्त मानव कोटि को होनेवाली क्षति से अवगत कराया गया है। ब्रह्मांड के बारे में सोचनेवाला मानव अपने पास हो रही क्षति पर नज़र नहीं डालेगा तो उसका सारा ज्ञान व्यर्थ हो जायेगा। इसी विषय को अध्यापक को पाठ के द्वारा छात्रों को समझाना है। जल संरक्षण और उसके सदुपयोग की ओर छात्रों को प्रेरित करना चाहिए।
  मौखिक अभिव्यक्ति के विकास के लिए कुछ प्रश्न दिये गये हैं। इन प्रश्नों के द्वारा छात्रों में सुनने-बोलने का विकास करें। साथ ही साथ छात्रों में चिंतन कर सही उत्तर देने के ज्ञान का विकास करें।

12. धरती के सवाल अंतरिक्ष के जवाब

उन्मुखीकरण

प्रकृति में मानव का जो महत्व है उतना ही महत्व पशु-पक्षियों का भी है। तो मानव को अपने साथ-साथ पशु-पक्षियों के संरक्षण को भी अपनी ज़िम्मेदारी बना लेना चाहिए। ऐसा कहने में कोई अतिशयोक्ति

नहीं है कि मानव के कई आविष्कारों के पीछे पशु-पक्षियों की प्रेरणा छिपी हुई है। जैसे - पक्षी की उड़ान की प्रेरणा से हवाई जहाज़ का निर्माण करना आदि। छात्रों को विज्ञान की ओर अग्रसर करके विभिन्न आविष्कारों का परिचय दे सकते हैं।

उद्देश्य

- देश की सुरक्षा में वैज्ञानिक उपकरणों का महत्वपूर्ण स्थान है। इन उपकरणों और उनके आविष्कर्ताओं का विवरण देना साथ ही साथ बच्चों में देश की सुरक्षा की भावना को जगाना इस पाठ का मुख्य उद्देश्य है।

विधा विशेष

- इस पाठ के द्वारा साक्षात्कार विधा का परिचय दिया गया है। इस विधा के अंतर्गत किसी भी श्रेष्ठ व्यक्ति के उत्तम विचारों, अनुभवों और उनकी भविष्य दृष्टि को प्रत्यक्ष रूप में लिया जा सकता है। ऐसे विभिन्न साक्षात्कारों की प्रेरणा से छात्रों में अपने आपको सक्षम बनाने की संभावना होती है।

विषयवस्तु

'भारत रत्न' अबुल फ़कीर जैनुलाबुद्दीन अब्दुल कलाम

- अब्दुल कलाम का जन्म 15-10-1931 में हुआ। 2002 से 2007 तक राष्ट्रपति के रुप में अपना कार्यभार संभाला। उनकी प्रमुख पुस्तकें :- Wings of Fire, Ignited Minds, India 2020
- मनुष्य के लिए इस दुनिया में कुछ भी असंभव नहीं है। वह निरंतर परिश्रम, लगन और प्रतिभा से सब कुछ हासिल कर सकता है। जैसे - समाचार पत्र बेचनेवाला एक निर्धन बालक एक सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक और भारत के राष्ट्रपति के रूप में विख्यात होना कोई साधारण बात नहीं है। डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जी के इन जीवन विशेषताओं से छात्र प्रेरणा पायेंगे।
- बच्चों में नैतिक मूल्यों का बोध कराना।
- नैतिक मूल्यों के निर्माण कार्य में माता-पिता और शिक्षकों का उत्तरदायित्व।
- सामाजिक समस्याओं के बारे में चर्चा।

'मिज़ाइल वुमन' टेसी थॉमस

- लक्ष्य प्राप्ति के लिए निरंतर परिश्रम की आवश्यकता।
- सफलता प्राप्ति के लिए आवश्यक गुणों की चर्चा।
- लक्ष्य प्राप्ति में पुरुषों का भेद नहीं।
- टेसी थॉमस के जीवन पर अब्दुल कलाम के व्यक्तित्व और नेतृत्व क्षमता का प्रभाव - चर्चा।

अध्याय–III

शैक्षिक मापदंड

1) शैक्षिक मापदंड - अवधारणा

2) शैक्षिक मापदंड - संचालन

3) शैक्षिक मापदंड - मूल्यांकन

4) छात्रों की अपेक्षित दक्षताएँ

5) पाठानुसार - अपेक्षित दक्षताएँ

1) शैक्षिक मापदंड अवधारणा - संचालन - मूल्यांकन

शिक्षा का उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास करना है। बालक के इस विकास हेतु कुछ शैक्षिक मापदंडों का निर्धारण NCF – 2005, APSCF – 2011 और RTE - 2009 के मौलिक सूत्रों के आधार पर किया गया है। कक्षा-छठी, सातवीं, आठवीं और नवीं के शैक्षिक मापदंडों की जानकारी आप प्राप्त कर ही चुके हैं। अब हम दसवीं कक्षा के लिए निर्धारित शैक्षिक मापदंडों के बारे में जानेंगे। ये इस प्रकार हैं -

शैक्षिक मापदंडः-

I अर्थग्राह्यता - प्रतिक्रिया

II अभिव्यक्ति - सृजनात्मकता

III भाषा की बात

I अर्थग्राह्यता - प्रतिक्रिया

इसके अंतर्गत दो प्रकार के शैक्षिक मापदंडों का समावेश है।

''अ'' **सुनना - बोलना**

''आ'', ''इ'', ''ई'' **पढ़ना - लिखना**

''अ'' सुनना - बोलना

उद्देश्य :- सुनी हुई बात को समझना और प्रतिक्रिया कर सकना। अर्थात् बच्चे सुनी गयी बात को समझेंगे और उसके बारे में अपने स्वयं के विचार प्रकट कर सकेंगे। इसमें बालकों को स्वाभिव्यक्ति के पूर्ण अवसर प्राप्त होते हैं।

स्वभाव :- 1. इस कौशल या मापदंड के अंतर्गत दिये जाने वाले प्रश्न विचारोत्तेजक हैं।

2. प्रश्न ऐसे हैं, जिससे कई अलग-अलग प्रकार के उत्तर प्राप्त होते हैं।

3. प्रश्न पाठ्य विषय से संबंधित तो हैं, किंतु पूर्णतः पाठ्य वस्तु पर आधारित नहीं हैं।

पाठ्यपुस्तक में दिये गये प्रश्न :-

1. घने बादलों का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
2. हम 'भारतवासी' गीत आपको कैसा लगा? अपनी पसंद - ना पसंद का कारण बताइए।
3. भाग्य और कर्म में आप किसे श्रेष्ठ मानते हैं और क्यों?
4. 'हिंदी विश्वभाषा है।' इस कथन के बारे में अपने विचार व्यक्त कीजिए।
5. हमारे जीवन में भक्ति भावना का क्या महत्व है? चर्चा कीजिए।
6. 'जल ही जीवन है।' शीर्षक से आपका क्या अभिप्राय है?

पाठ्यपुस्तक में दिये गये प्रश्नों के अतिरिक्त कुछ प्रश्न :-

1. किसी एक ऋतु का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
2. अपने प्रिय त्यौहार के बारे में बताइए।
3. भारत देश की महानता का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
4. 'मेहनत ही सफलता की कुँजी है।' इस पर चर्चा कीजिए।
5. 'दक्षिणी गंगा गोदावरी' पाठ का शीर्षक आपको कैसा लगा? क्यों?

कक्षा-कक्ष में संचालन

- प्रश्न छात्रों से पढ़वायें।
- लगभग हर छात्र से प्रश्न का उत्तर पूछने का प्रयास करें।
- बच्चे को बिना भय, झिझक के अपनी बात कहने दें।
- प्रश्नों पर सामूहिक चर्चा करवायें।

मूल्यांकन

- उच्चारण की शुद्धता
- वाक्य - निर्माण का क्रम
- अभिव्यक्ति का ढंग
- विचारों की स्पष्टता, सटीकता और समझ
- विचारों की क्रमबद्धता

''आ'' ''इ'' और ''ई'' पढ़ना - लिखना

उद्देश्य :- पढ़ी हुई बात या पढ़े गये अंशों को समझना और उस पर प्रतिक्रिया कर सकना। इसका मुख्य उद्देश्य है - पठित अंश की अर्थग्राह्यता। अर्थात् छात्र दिये गये पाठ्यांश को पढ़ेंगे, समझेंगे और प्रतिक्रिया कर सकेंगे।

स्वभाव :-

1. प्रश्न ऐसे हैं, जो छात्र को बार-बार पाठ्यांश पढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं।
2. प्रश्न पूर्णतः पाठ से संबंधित हैं।
3. प्रश्न अपठित गद्य/पद्य से भी संबंधित हैं।

पाठ्यपुस्तक में दिये गये प्रश्न :-

1. वाक्य उचित क्रम में लिखिए।
2. पद्यांश पढ़िए और इसके मुख्य शब्द पहचान कर लिखिए।
3. पाठ के आधार पर निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' या 'नहीं' में लिखिए।
4. पाठ से ध्वनि - साम्य वाले शब्द चुनकर लिखिए।

5. नीचे दिये गये भाव से संबंधित पंक्तियाँ पाठ से ढूँढ़कर लिखिए।
6. अपठित पद्यांश/अपठित गद्यांश पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए।
7. पठित पद्यांश/पठित गद्यांश पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

उपर्युक्त पद्यांश/गद्यांश के अंतर्गत निम्न प्रकार के प्रश्न हो सकते हैं -

1. प्रश्नों के उत्तर दीजिए।
2. 'हाँ' या 'नहीं' में उत्तर दीजिए।
3. बहुविकल्पीय प्रश्न
4. गद्यांश या पद्यांश के मुख्य बिंदुओं को सुझाइए।
5. विज्ञापन पढ़िए, प्रश्नों के उत्तर दीजिए।
6. विज्ञापन पढ़िए और उससे संबंधित चार प्रश्न बनाइए।

पाठ्यपुस्तक में दिये गये प्रश्नों के अतिरिक्त कुछ प्रश्न :-

1. पाठ पढ़िए। दिये गये रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।
2. पाठ में से कुछ प्रश्नवाचक वाक्यों को चुनकर लिखिए।
3. वाक्य निर्माण का क्रम शुद्ध कीजिए।
4. पाठ के किसी एक अनुच्छेद से तीन प्रश्न तैयार कीजिए।

कक्षा-कक्ष में संचालन

- छात्रों से प्रश्न पढ़वायें।
- प्रश्न की प्रकृति के अनुसार छात्रों को सूचनाएँ दें।
- प्रत्येक अभ्यास व्यक्तिगत रूप से करवायें।
- इस अभ्यास से संबंधित कुछ प्रश्न 'गृहकार्य' में दिये जा सकते हैं।

मूल्यांकन

- वर्तनी की शुद्धता
- वाक्य निर्माण का क्रम
- उत्तरों की सटीकता, स्पष्टता
- विराम चिह्नों का पालन

2) अभिव्यक्ति - सृजनात्मकता

इसके अंतर्गत तीन प्रकार के शैक्षिक मापदंडों का समावेश है।

''अ'' ''आ'' स्वरचा - लिखना **''इ''** सृजनात्मक अभिव्यक्ति **''ई''** प्रशंसा

''अ'' ''आ'' लिखना (स्वरचना)

उद्देश्य :- पढ़े गये या सुने गये अंश को समझना और उसे अपने शब्दों में लिख सकना। यहाँ लिखने का अर्थ केवल देखकर लिखना नहीं है बल्कि अपने स्वयं के विचारों को जोड़कर लिखने अर्थात् स्व-अभिव्यक्ति से है। बच्चे पठित अंशों पर चर्चा करके अपने शब्दों में लिख सकेंगे।

स्वभाव :- 1. क्यों, कब, कैसे से संबंधित प्रश्न हैं।
2. प्रश्न विश्लेषणयुक्त उत्तर लिखने के योग्य हैं।
3. स्वाभिव्यक्ति के अवसर प्रदान करने वाले हैं।
4. विचारोत्तेजक या विचारशील प्रश्न हैं।

पाठ्यपुस्तक में दिये गये प्रश्न

इसमें लघु प्रश्न और निबंधात्मक दोनों प्रकार के प्रश्न दिये गये हैं। दोनों प्रकार के प्रश्नों का उद्देश्य छात्रों को स्व-अभिव्यक्ति के लिए प्रेरित करना है। ये प्रश्न इस प्रकार है -

''अ'' लघु प्रश्न :-

1. वर्षा सभी प्राणियों के जीवन का आधार है। कैसे?
2. हामिद के स्थान पर आप होते तो क्या खरीदते और क्यों?
3. निराशावादी और आशावादी के स्वभाव में क्या अंतर होता है?
4. जैसे-जैसे शहर फैल रहे हैं और गाँव सिकुड़ रहे हैं, लोकगीतों पर उनका क्या प्रभाव पड़ रहा है?
5. बिहारी ने सोने की तुलना धतूरे से क्यों की होगी?

''आ'' निबंधात्मक प्रश्न :-

1. किन्हीं दो दोहों का भाव अपने शब्दों में लिखिए।
2. आज दुनिया के सभी देशों में जल की समस्या बनी हुई है। इसके समाधान में हम सब की क्या जिम्मेदारी है?
3. लेखक ने गोदावरी को माता की संज्ञा क्यों दी होगी?

पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त प्रश्न

''अ'' लघु प्रश्न :-

1. हम ऊँच-नीच का भेद कैसे मिटा सकते हैं?
2. 'मेहनत ही सफलता की कुँजी है ।' इस पर अपने विचार बताइए।
3. आपको कौनसा लोकगीत पसंद है? क्यों?
4. काका कालेलकर जी ने गोदावरी को 'पावन' और 'पवित्र' क्यों माना होगा?

''आ'' निबंधात्मक प्रश्न :-

1. रहीम के दोहे नैतिक गुणों के विकास में सहायक है। कैसे?
2. गुरु का हमारे जीवन में क्या महत्व है? अपने विचार बताइए।
3. हामिद ने अन्य चीज़ें क्यों नहीं खरीदी होगी? अपने शब्दों में लिखिए।
4. 'हम भारतवासी' गीत का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

कक्षा-कक्ष में संचालन

- छात्रों से प्रश्न पढ़वायें।
- प्रश्न से संबंधित आवश्यक सूचनाएँ दें।
- सामूहिक चर्चा करवायें।
- व्यक्तिगत रूप से सभी छात्रों को स्वरचना के लिए प्रेरित करें।

मूल्यांकन

- मौलिकता
- वर्तनी की शुद्धता, विराम चिह्नों का पालन
- वाक्य-निर्माण का क्रम
- विचारों की सटीकता

''इ'' सृजनात्मक अभिव्यक्ति

उद्देश्य :- नयी-नयी विधाओं के सृजन की योग्यता का विकास करना। अर्थात् बच्चे नयी-नयी विधाओं का सृजन कर सकेंगे। ये सृजनात्मक अभिव्यक्ति मौखिक और लिखित दोनों रूपों में हो सकती है।

स्वभाव :-

1. प्रश्न किसी न किसी विधा के सृजन से संबंधित हैं।
2. हर प्रश्न एक अलग विधा से संबंधित हैं।

पाठ्यपुस्तक में दिये गये प्रश्न :

1. विश्वशांति की राह में समर्पित किस महान व्यक्ति का आप साक्षात्कार लेना चाहते हैं? साक्षात्कार में उनसे पूछे जाने वाले प्रश्नों की एक सूची तैयार कीजिए।
2. 'हिंदी भाषा' पर एक छोटा-सा निबंध लिखिए।
3. भक्ति भावना से संबंधित छोटी-सी कविता का सृजन कीजिए।

पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त प्रश्न :

1. आपकी किसी एक दिन की यात्रा का वर्णन डायरी के रूप में लिखिए।
2. आपके विद्यालय में आयोजित होने वाले हिंदी दिवस कार्यक्रम के लिए एक सूचना तैयार कीजिए।

3. जल की आवश्यकता से संबंधित कुछ नारे तैयार कीजिए।

कक्षा-कक्ष में संचालन

- छात्रों से प्रश्न पढ़वायें।
- प्रश्न के बारे में आवश्यक सूचनाएँ दें। चर्चा करवायें।
- सामूहिक/व्यक्तिगत क्रियाकलाप करवायें। लिखे गये विषयों को पोर्टफोलियो में सुरक्षित रखें।

मूल्यांकन

- भावों और विचारों की मौलिकता
- हाव-भाव का प्रदर्शन
- विचारों की क्रमबद्धता
- उच्चारण की स्पष्टता

''ई'' प्रशंसा

उद्देश्य :- किसी भी तथ्य के महत्व को समझकर उसकी प्रशंसा कर सकने की योग्यता का विकास करना। अर्थात् बच्चे किसी भी तथ्य के महत्व को समझकर उसकी प्रशंसा कर सकेंगे।

इसमें इस बात पर बल दिया जाता है कि बच्चा जो कुछ सीख रहा है, वह उसके सामाजिक एवं नैतिक उपयोग व महत्व को समझ सकें।

स्वभाव :-

1. किसी भी विषय के महत्व को उजागर करने वाले प्रश्न हैं।
2. किसी व्यक्ति, वस्तु या तथ्य के गुणों को दर्शाने वाले प्रश्न हैं।
3. प्रशंसा का अवसर प्रदान करने वाले प्रश्न हैं।

पाठ्यपुस्तक में दिये गये प्रश्न :

1. बड़े-बुज़ुर्गों के प्रति आदर, श्रद्धा और स्नेह भावनाओं का महत्व अपने शब्दों में बताइए।
2. सत्य, अहिंसा, त्याग आदि भावनाओं का हमारे जीवन में क्या महत्व हैं?
3. मनोरंजन की दुनिया में हिंदी के महत्व पर प्रकाश डालिए।

पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त प्रश्न :

1. नदियों का हमारे जीवन में क्या महत्व है? बताइए।
2. देश को एकता के सूत्र में बाँधने के लिए हिंदी भाषा के योगदान के बारे में बताइए।
3. कर्म की श्रेष्ठता के बारे में बताइए।
4. पेड़-पौधों, पशु-पक्षियों के लिए वर्षा किस प्रकार उपयोगी होती है?

संचालन

- छात्रों से प्रश्न पढ़वायें।
- प्रश्न से संबंधित सूचनाएँ दें।
- सामूहिक चर्चा करवायें।
- व्यक्तिगत रूप से उत्तर लिखवायें।

मूल्यांकन

- भावों और विचारों की मौलिकता
- उच्चारण की स्पष्टता
- वर्तनी की शुद्धता

3) भाषा की बात

इसके अंतर्गत दो प्रकार के मापदंड सम्मिलित हैं।

''अ'' शब्द भंडार **''आ'' ''इ'' ''ई''** भाषा की बात

''अ'' शब्द भंडार :-

उद्देश्य :- शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों के संदर्भोचित प्रयोग की योग्यता का विकास करना। अर्थात् छात्र उपर्युक्त उल्लेखित अंशों (शब्द, मुहावरे, लोकोक्ति) के आधार पर अपने शब्द भंडार में वृद्धि कर, उनका अपने वाक्यों में संदर्भानुसार प्रयोग कर सकेंगे।

स्वभाव :-

1. ऐसे शब्द पूछे गये हैं जिससे छात्र के शब्दकोश में वृद्धि हो, जो उसके दैनिक जीवन में उपयोगी हो।
2. संदर्भानुसार प्रयोग किये जाने वाले शब्द हैं।
3. वाक्य - निर्माण से संबंधित हैं।

पाठ्यपुस्तक में दिये गये प्रश्न :

1. तरु, गगन, घन (एक-एक शब्द का पर्याय शब्द लिखिए और उनका वाक्य प्रयोग कीजिए।)
2. अपराधी, प्रसन्न (एक-एक शब्द का विलोम शब्द लिखिए और उससे वाक्य प्रयोग कीजिए।)
3. मिठाई, चिमटा, सड़क (एक-एक शब्द का वचन बदलिए। वाक्य प्रयोग कीजिए।)

पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त प्रश्न :

1. बिजली, धरती, मन (एक-एक शब्द का वाक्य प्रयोग कीजिए और उसके पर्याय शब्द लिखिए।)
2. आवश्यक, लाभदायक (एक-एक शब्द का विलोम शब्द लिखिए और उससे वाक्य प्रयोग कीजिए।)

संचालन

- छात्रों से प्रश्न पढ़वायें।
- आवश्यक सूचनाएँ दें।
- सामूहिक चर्चा करवायें।
- अधिक से अधिक उदाहरण देने के लिए प्रोत्साहित करें।
- व्यक्तिगत रूप से उत्तर लिखवायें।

मूल्यांकन

- उचित शब्द प्रयोग
- उचित वाक्य प्रयोग
- वर्तनी की शुद्धता

''आ'' ''इ'' ''ई'' व्याकरण

उद्देश्य :- भाषा संबंधी जानकारी देते हुए, भाषिक संरचना की समझ का विकास करना। जिससे छात्र अधिक से अधिक उदाहरणों द्वारा व्याकरण के नियमों को समझ सकेंगे।

स्वभाव :-

1. ऐसे प्रश्न हैं, जिसके द्वारा बच्चे भाषा का प्रयोग कर सकें।
2. प्रश्न प्रायोगिक रूप में हैं।
3. भाषिक संरचना में सहायक हैं।

पाठ्यपुस्तक में दिये गये प्रश्न :

1. लौकिक, नैतिक, - प्रत्यय पहचानिए और वाक्य प्रयोग कीजिए।
2. सोना, पढ़ना, पीना, हँसना, कहना, उठना- इन शब्दों में से सकर्मक - अकर्मक क्रियाएँ चुनिए।
3. पवन, पावन, निराशा - (संधि विच्छेद कीजिए।)
4. भारतवासी, जीवनज्योत - (समास पहचानिए।)

पाठ्य-पुस्तक में दिये गये प्रश्नों से अतिरिक्ति प्रश्न

1. अपराधी, मार्मिक (प्रत्यय पहचानिए)
2. ऊँच-नीच, सुख-दुख (समास पहचानिए।)

संचालन

- छात्रों से प्रश्न पढ़वायें।
- आवश्यक सूचनाएँ दें।
- सामूहिक चर्चा करवायें।
- व्यक्तिगत रूप से लिखवायें।

मूल्यांकन

- सही शब्द चयन
- वाक्य - निर्माण का क्रम

4) छात्रों की अपेक्षित दक्षताएँ

(अ) अर्थग्राह्यता - प्रतिक्रिया द्वारा छात्रों की अपेक्षित दक्षताएँ

- पद्य, गीत, कविता, वार्तालाप, निबंध कहानी, नाटक आदि सुनकर समझ सकेंगे। अपने शब्दों में कह सकेंगे।
- संबंधित अंशों के कारण बता सकेंगे।
- पद्य, गीत धाराप्रवाह के साथ गा सकेंगे।
- सारांश अथवा भाव अपने शब्दों में बता सकेंगे।
- किसी भी विषय पर चर्चा कर सकेंगे। पक्ष-विपक्ष में अपने विचार बता सकेंगे।
- किसी भी विषय पर अपने अभिप्राय प्रकट कर सकेंगे।
- पंक्तियाँ क्रमानुसार लिख सकेंगे।
- कहानियाँ, कविताएँ, नाटक, निबंध - पढ़कर समझ सकेंगे।
- विभिन्न पुस्तिकाएँ, समाचार-पत्र, सूचनाएँ आदि पढ़कर समझ सकेंगे।
- अपठित/पठित अंशों को पढ़कर अर्थग्राह्यता के साथ उत्तर दे सकेंगे।
- भाव से संबंधित पंक्तियाँ पाठ में से ढूँढ़कर लिख सकेंगे।
- पात्र के स्थान पर स्वयं को रखकर अपने विचार बता सकेंगे।

(आ) अभिव्यक्ति - सृजनात्मकता से संबंधित अपेक्षित दक्षताएँ

- पाठ्यांश की घटनाओं, अंशों, पात्रों, स्थानों, विषयों के बारे में समझकर अपने शब्दों में लिख सकेंगे।
- पाठ का भाव अपने शब्दों में लिख सकेंगे।
- दिये गये विषय पर अपने विचार लिख सकेंगे।
- संदेश लिख सकेंगे।
- अंतर-स्पष्ट कर सकेंगे।
- अलग-अलग घटनाओं में स्वयं को रखकर घटना आगे बढ़ा सकेंगे।
- गद्य या पद्य को एक विधा में से दूसरी विधा में बदल सकेंगे।
- साक्षात्कार के लिए प्रश्न लिख सकेंगे।
- निमंत्रण, बधाई पत्र, दीवार-पत्रिका, पोस्टर, पावर पाइंट प्रस्तुतीकरण तैयार कर सकेंगे।
- नारे लिख सकेंगे। पद्य व गद्य के विविध रूपों व विधाओं की जानकारी रखते हुए उन्हें सृजनात्मक रूप दे सकेंगे।

- नयी कविता का सृजन कर सकेंगे।
- कवि या लेखकों की रचनाओं की प्रशंसा कर सकेंगे।
- प्रेरणा देने वाले किसी भी अंश की प्रशंसा लिंग, धर्म, वर्ग भेद के बिना कर सकेंगे।
- किसी भी तथ्य के महत्व को बता सकेंगे।

(इ) भाषा की बात से संबंधित अपेक्षित दक्षताएँ

- व्याकरणांशों की पहचान कर सकेंगे।
- मुहावरों के अर्थ बताकर उनका वाक्यों में प्रयोग कर सकेंगे।
- सरल, संयुक्त, मिश्र वाक्यों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। - पर्यायवाची शब्द बता सकेंगे।
- शब्दार्थ बताकर वाक्य प्रयोग कर सकेंगे।
- समुच्चय बोधक, संबंधबोधक, विस्मयादि बोधक शब्द जोड़ सकेंगे।
- पुनरुक्त शब्द समझ सकेंगे।
- विपरीतार्थक शब्द लिख सकेंगे।
- पद-परिचय बता सकेंगे।
- तत्सम, तद्भव, उपसर्ग, प्रत्यय शब्द पहचान सकेंगे।
- संधि विच्छेद कर सकेंगे।
- समास विग्रह कर सकेंगे।
- कारक पहचान सकेंगे।
- संयुक्त क्रिया का प्रयोग कर सकेंगे।
- अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिख सकेंगे।
- अकर्मक, सकर्मक क्रिया पहचान सकेंगे।
- वाक्य के प्रकार बता सकेंगे।

5) पाठानुसार अपेक्षित दक्षताएँ (दसवीं कक्षा द्वितीय भाषा हिंदी)

संख्या	पाठ का नाम	शैक्षिक मापदंड	सूचक/संकेतक
1.	**बरसते बादल** (कविता)	I **अर्थग्राह्यता - प्रतिक्रियाः**	
		'अ' सुनना - बोलना : सुने गये अंश को समझना और प्रति क्रिया करना।	1. प्रकृति से संबंधित किसी भी अंश के बारे में अपने विचार प्रकट कर सकेंगे।
		'आ' 'इ' 'ई' पढ़ना-लिखनाः पढ़े गये अंश को समझना और प्रतिक्रिया करना।	1. वाक्य उचित क्रम में लिख सकेंगे। 2. भाव से संबंधित पंक्तियाँ पाठ में से ढूँढ़कर लिख सकेंगे। 3. पद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे।
		II **अभिव्यक्ति - सृजनात्मकताः**	
		'अ' 'आ' लिखना-स्वरचना : अपने शब्दों में अभिव्यक्त कर सकना।	1. प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिख सकेंगे। 2. प्रकृति का वर्णन अपने शब्दों में लिख सकेंगे।
		'इ' सृजनात्मक-अभिव्यक्तिः नयी- नयी विधाओं का सृजन कर सकना।	1. प्रकृति सौंदर्य पर एक छोटी सी कविता लिख सकेंगे।
		'ई' प्रशंसा : किसी तथ्य या विषय के महत्व को समझकर उसकी प्रशंसा कर सकना।	1. दिये गये विषय पर अपने विचार लिख सकेंगे।
		III **भाषा की बात :**	
		'अ' शब्द भंडार : विभिन्न शब्दों का अर्थ समझकर दैनिक जीवन में प्रयोग कर सकना।	1. शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग कर सकेंगे। 2. पर्याय शब्द लिख सकेंगे। 3. शब्दों के तत्सम रूप लिख सकेंगे। 4. शब्दों के तद्भव रूप लिख सकेंगे।
		'आ' 'इ' 'ई' व्याकरणांश : भाषिक संरचना को समझकर, व्याकरण अंशों की जानकारी प्राप्त कर सकना।	1. शब्दों में अंतर स्पष्ट कर सकेंगे। 2. शब्द का पद परिचय दे सकेंगे। 3. शब्द-संक्षेप लिख सकेंगे। 4. समास पहचान सकेंगे। 5. क्रिया शब्द पहचानकर वाक्य में प्रयोग कर सकेंगे।

संख्या	पाठ का नाम	शैक्षिक मापदंड	सूचक/संकेतक
2.	**ईदगाह** (कहानी)	I **अर्थग्राह्यता - प्रतिक्रियाः** **'अ' सुनना - बोलना :** सुने गये अंश को समझना और प्रतिक्रिया करना।	1. कहानीकार के बारे में चर्चा कर सकेंगे। 2. पाठ के पात्रों के स्वभाव के बारे में चर्चा कर सकेंगे।
		'आ' 'इ' 'ई' पढ़ना-लिखनाः पढ़े गये अंश को समझना और प्रतिक्रिया करना।	1. ''हाँ'' या ''नहीं'' में उत्तर दे सकेंगे। 2. रिक्त स्थान की पूर्ति कर सकेंगे। 3. अनुच्छेद पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दे सकेंगे।
		II **अभिव्यक्ति - सृजनात्मकताः** **'अ' 'आ' लिखना-स्वरचना :** अपने शब्दों में अभिव्यक्त कर सकना।	1. प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिख सकेंगे। 2. कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिख सकेंगे।
		'इ' सृजनात्मक-अभिव्यक्तिः नयी- नयी विधाओं का सृजन कर सकना।	1. किसी घटना को संवाद रूप में लिख सकेंगे।
		'ई' प्रशंसा : किसी तथ्य या विषय के महत्व को समझकर उसकी प्रशंसा कर सकना।	1. बड़े-बुजुर्गों के प्रति आदर, श्रद्धा और स्नेह भावनाओं का महत्व अपने शब्दों में बता सकेंगे।
		III **भाषा की बात :** **'अ' शब्द भंडार :** विभिन्न शब्दों का अर्थ समझकर दैनिक जीवन में प्रयोग कर सकना।	1. शब्दों का वाक्य प्रयोग कर सकेंगे। 2. पर्याय शब्द लिख सकेंगे। 3. विलोम शब्द लिख सकेंगे। 4. वचन बदल सकेंगे।
		'आ' 'इ' 'ई' व्याकरणांश : भाषिक संरचना को समझकर, व्याकरण अंशों की जानकारी प्राप्त कर सकना।	1. 'उपसर्ग, प्रत्यय पहचान सकेंगे। 2. भाववाचक संज्ञा रूप लिख सकेंगे। 3. कारक चिह्नों को पहचान सकेंगे। 4. काल के अनुसार वाक्य बदल सकेंगे। 5. मुहावरे पहचान कर अर्थ बता सकेंगे और वाक्य में प्रयोग कर सकेंगे।

संख्या	पाठ का नाम	शैक्षिक मापदंड	सूचक/संकेतक
3.	**हम भारतवासी** (कविता)	I **अर्थग्राह्यता - प्रतिक्रियाः**	
		'अ' सुनना - बोलना : सुने गये अंश को समझना और प्रतिक्रिया करना।	1. गीत के बारे में चर्चा कर सकेंगे। 2. दुनिया को पावन धाम बनाने के लिए हमें क्या करना है बता सकेंगे।
		'आ' 'इ' 'ई' पढ़ना-लिखनाः पढ़े गये अंश को समझना और प्रतिक्रिया करना।	1. पद्यांश पढ़कर मुख्य शब्द पहचानकर लिख सकेंगे। 2. भाव से संबंधित पंक्तियाँ कविता में ढूँढ़कर लिख सकेंगे। 3. गद्यांश पढ़कर सही उत्तर पहचान सकेंगे।
		II **अभिव्यक्ति - सृजनात्मकताः** **'अ' 'आ' लिखना-स्वरचना :** अपने शब्दों में अभिव्यक्त कर सकना।	1. प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिख सकेंगे। 2. धरती को स्वर्ग बनाने में हम क्या सहयोग दे सकते हैं इसके बारे में लिख सकेंगे।
		'इ' सृजनात्मक-अभिव्यक्तिः नयी- नयी विधाओं का सृजन कर सकना।	1. साक्षात्कार में पूछे जानेवाले प्रश्नों की सूची तैयार कर सकेंगे।
		'ई' प्रशंसा : किसी तथ्य या विषय के महत्व को समझकर उसकी प्रशंसा कर सकना।	1. हमारे जीवन में सत्य, अहिंसा, त्याग आदि भावनाओं का महत्व बता सकेंगे।
		III **भाषा की बात :**	
		'अ' शब्द भंडार : विभिन्न शब्दों का अर्थ समझकर दैनिक जीवन में प्रयोग कर सकना।	1.वाक्य प्रयोग कर सकेंगे। 2. विलोम शब्द लिख सकेंगे। 3. वचन बदल सकेंगे।
		'आ' 'इ' 'ई' व्याकरणांश : भाषिक संरचना को समझकर, व्याकरण अंशों की जानकारी प्राप्त कर सकना।	1. संधि विच्छेद कर सकेंगे। 2. समास पहचान सकेंगे। 3. शब्द समझकर वाक्य प्रयोग कर सकेंगे। 4. क्रिया शब्दों का व्यावहारिक प्रयोग कर सकेंगे। 5. मुहावरे पहचान कर अर्थ बता सकेंगे और वाक्य में प्रयोग कर सकेंगे।

संख्या	पाठ का नाम	शैक्षिक मापदंड	सूचक/संकेतक
4.	**कण-कण का अधिकारी** (कविता)	I **अर्थग्राह्यता - प्रतिक्रियाः**	
		'अ' सुनना - बोलना : सुने गये अंश को समझना और प्रतिक्रिया करना।	1. भाग्य और कर्म की श्रेष्ठता के बारे में चर्चा कर सकेंगे। 2. श्रम के महत्व के बारे में चर्चा कर सकेंगे।
		'आ' 'इ' 'ई' पढ़ना-लिखनाः पढ़े गये अंश को समझना और प्रतिक्रिया करना।	1. पाठ पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे। 2. भाव से संबंधित पंक्तियाँ पाठ में से ढूँढ़कर लिख सकेंगे। 3. पद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे।
		II **अभिव्यक्ति - सृजनात्मकताः**	
		'अ' 'आ' लिखना-स्वरचना : अपने शब्दों में अभिव्यक्त कर सकना।	1. प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिख सकेंगे।
		'इ' सृजनात्मक-अभिव्यक्तिः नयी- नयी विधाओं का सृजन कर सकना।	1. मज़दूरों के अधिकारों का वर्णन अपने शब्दों में लिख सकेंगे।
		'ई' प्रशंसा : किसी तथ्य या विषय के महत्व को समझकर उसकी प्रशंसा कर सकना।	1. 'श्रम ही जीवन की सफलता का मार्ग है। इस पर अपने विचार व्यक्त कर सकेंगे।
		III **भाषा की बात :**	1. शब्दों का वाक्य प्रयोग कर सकेंगे। 2. पर्यायी शब्द लिख सकेंगे।
		'अ' शब्द भंडार : विभिन्न शब्दों का अर्थ समझकर दैनिक जीवन में प्रयोग कर सकना।	3. विलोम शब्द लिख सकेंगे। 4. पुनरुक्ति शब्दों से वाक्य प्रयोग कर सकेंगे। 5. वचन बदल सकेंगे। 6. भाववाचक संज्ञा का रूप बदल सकेंगे।
		'आ' 'इ' 'ई' व्याकरणांश : भाषिक संरचना को समझकर, व्याकरण अंशों की जानकारी प्राप्त कर सकना।	1. शब्दों के बीच अंतर पहचान सकेंगे। 2. संधि विच्छेद कर सकेंगे। 3. समास पहचान सकेंगे। 4. पद परिचय दे सकेंगे। 5. कारक चिह्न पहचान सकेंगे। 6. संयुक्त क्रियाओं का प्रयोग कर सकेंगे। 7. उपसर्ग, प्रत्यय पहचान सकेंगे। 8. लिंग बदलकर वाक्य लिख सकेंगे। 9. दो वाक्यों को एक वाक्य में बदल सकेंगे।

संख्या	पाठ का नाम	शैक्षिक मापदंड	सूचक/संकेतक
5.	**लोकगीत** (निबंध)	I **अर्थग्राह्यता - प्रतिक्रियाः**	
		'अ' सुनना - बोलना : सुने गये अंश को समझना और प्रतिक्रिया करना।	1. विभिन्न मनोरंजन के साधनों पर चर्चा कर सकेंगे। 2. हिंदी या अपनी मातृभाषा का कोई लोकगीत सुना सकेंगे।
		'आ' 'इ' 'ई' पढ़ना-लिखनाः पढ़े गये अंश को समझना और प्रतिक्रिया करना।	1. वाक्य उचित क्रम में लिख सकेंगे। 2. गद्यांश पढ़कर मुख्य शब्द पहचान सकेंगे। 3. लोकगीत पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे।
		II **अभिव्यक्ति - सृजनात्मकताः** **'अ' 'आ' लिखना-स्वरचना :** अपने शब्दों में अभिव्यक्त कर सकना।	1. प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिख सकेंगे। 2. पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिख सकेंगे।
		'इ' सृजनात्मक-अभिव्यक्तिः नयी- नयी विधाओं का सृजन कर सकना।	1. किसी भी विषय वस्तु का हिंदी में अनुवाद कर सकेंगे।
		'ई' प्रशंसा : किसी तथ्य या विषय के महत्व को समझकर उसकी प्रशंसा कर सकना।	1. ग्रामीण जनता की मार्मिक भावनाओं को अपने शब्दों में व्यक्त कर सकेंगे।
		III **भाषा की बात :** **'अ' शब्द भंडार :** विभिन्न शब्दों का अर्थ समझकर दैनिक जीवन में प्रयोग कर सकना।	1. शब्दों का वाक्य प्रयोग कर सकेंगे। 2. पर्यायवाची शब्द लिख सकेंगे। 3. विलोम शब्द लिखकर वाक्य प्रयोग कर सकेंगे। 4. वचन बदल कर लिख सकेंगे।
		'आ' 'इ' 'ई' व्याकरणांश : भाषिक संरचना को समझकर, व्याकरण अंशों की जानकारी प्राप्त कर सकना।	1. ''लोक'' शब्द से बनने वाले अन्य शब्द लिखेंगे। 2. लिंग बदलकर वाक्य बना सकेंगे। 3. 'इक' प्रत्यय जोड़कर शब्द बना सकेंगे। 4. शब्दों के अर्थ में अंतर स्पष्ट कर सकेंगे। 5. क्रिया का व्यावहारिक प्रयोग कर सकेंगे। 6. प्रश्नार्थक वाक्य बना सकेंगे।

संख्या	पाठ का नाम	शैक्षिक मापदंड	सूचक/संकेतक
6.	**अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी** (पत्र लेखन)	I **अर्थग्राह्यता - प्रतिक्रियाः**	
		'अ' सुनना - बोलना : सुने गये अंश को समझना और प्रतिक्रिया करना।	1. विश्व भाषाओं के संबंध में अपने विचार प्रकट कर सकेंगे। 2. हिंदी के महत्व के बारे में अपने विचार प्रकट कर सकेंगे।
		'आ' 'इ' 'ई' पढ़ना-लिखनाः पढ़े गये अंश को समझना और प्रतिक्रिया करना।	1. पाठ पढ़कर प्रश्नों के उत्तर हाँ या नहीं में दे सकेंगे। 2. पाठ के आधार पर उचित क्रम में वाक्य लिख सकेंगे। 3. विज्ञापन पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दे सकेंगे।
		II **अभिव्यक्ति - सृजनात्मकताः**	
		'अ' 'आ' लिखना-स्वरचना : अपने शब्दों में अभिव्यक्त कर सकना।	1. प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिख सकेंगे। 2. हिंदी के बारे में अपने विचार लिख सकेंगे।
		'इ' सृजनात्मक-अभिव्यक्तिः नयी- नयी विधाओं का सृजन कर सकना।	1. हिंदी भाषा पर निबंध लिख सकेंगे।
		'ई' प्रशंसा : किसी तथ्य या विषय के महत्व को समझकर उसकी प्रशंसा कर सकना।	1. हिंदी के महत्व, हिंदी भाषा सीखने से लाभ बता सकेंगे।
		III **भाषा की बात :**	
		'अ' शब्द भंडार : विभिन्न शब्दों का अर्थ समझकर दैनिक जीवन में प्रयोग कर सकना।	1. वाक्य प्रयोग करते हुए पर्याय शब्द लिख सकेंगे। 2. विलोम शब्द लिख सकेंगे।
		'आ' 'इ' 'ई' व्याकरणांश : भाषिक संरचना को समझकर, व्याकरण अंशों की जानकारी प्राप्त कर सकना।	1. वचन बदलकर वाक्य प्रयोग कर सकेंगे। 2. उपसर्ग और प्रत्यय पहचान सकेंगे। 3. कारक चिह्न पहचानकर लिख सकेंगे। 4. लिंग पहचानकर लिख सकेंगे। 5. शब्द संक्षेप कर सकेंगे। 6. शब्द विश्लेषण कर सकेंगे। 7. वाक्य रचना समझ सकेंगे।

संख्या	पाठ का नाम	शैक्षिक मापदंड	सूचक/संकेतक
7.	**भक्ति पद** (कविता)	I **अर्थग्राह्यता - प्रतिक्रियाः**	
		'अ' सुनना - बोलना : सुने गये अंश को समझना और प्रतिक्रिया करना।	1. विभिन्न कवियों की भक्ति भावना में अंतर स्पष्ट कर सकेंगे। 2. भक्ति भावना के महत्व के बारे में चर्चा कर सकेंगे।
		'आ' 'इ' 'ई' पढ़ना-लिखनाः पढ़े गये अंश को समझना और प्रतिक्रिया करना।	1. दिये गये वाक्यों को पाठ के आधार पर उचित क्रम में लिख सकेंगे। 2. अपठित पद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दे सकेंगे।
		II **अभिव्यक्ति - सृजनात्मकताः**	
		'अ' 'आ' लिखना-स्वरचना : अपने शब्दों में अभिव्यक्त कर सकना।	1. प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिख सकेंगे। 2. मीरा के पद का भाव अपने शब्दों में लिख सकेंगे।
		'इ' सृजनात्मक-अभिव्यक्तिः नयी- नयी विधाओं का सृजन कर सकना।	1. भक्ति भावना से संबंधित कविता का सृजन कर सकेंगे।
		'ई' प्रशंसा : किसी तथ्य या विषय के महत्व को समझकर उसकी प्रशंसा कर सकना।	1. भक्ति साहित्य की प्रशंसा कर सकेंगे।
		III **भाषा की बात :**	
		'अ' शब्द भंडार : विभिन्न शब्दों का अर्थ समझकर दैनिक जीवन में प्रयोग कर सकना।	1. शब्दों के वाक्य प्रयोग कर सकेंगे। पर्याय शब्द लिख सकेंगे। 2. विलोम शब्द लिख सकेंगे। 3. वर्तनी शुद्ध कर सकेंगे।
		'आ' 'इ' 'ई' व्याकरणांश : भाषिक संरचना को समझकर, व्याकरण अंशों की जानकारी प्राप्त कर सकना।	1. शब्दों के तत्सम रूप लिख सकेंगे। 2. शब्दों के अर्थ लिख सकेंगे। 3. वचन बदलकर वाक्य फिर से लिख सकेंगे। 4. पाठ के आधार पर उचित शब्द लिख सकेंगे।

संख्या	पाठ का नाम	शैक्षिक मापदंड	सूचक/संकेतक
8.	**स्वराज्य की नींव** (एकांकी)	I **अर्थग्राह्यता - प्रतिक्रियाः** **'अ' सुनना - बोलना :** सुने गये अंश को समझना और प्रतिक्रिया करना।	1. दिये गये वाक्य का भाव स्पष्ट कर सकेंगे। 2. स्वतंत्रता संग्राम के समय की परिस्थितियों के बारे में चर्चा कर सकेंगे।
		'आ' 'इ' 'ई' पढ़ना-लिखनाः पढ़े गये अंश को समझना और प्रतिक्रिया करना।	1. पाठ पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे। 2. पाठ के आधार पर वाक्यों के आशय को स्पष्ट कर सकेंगे। 3. अपठित गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे।
		II **अभिव्यक्ति - सृजनात्मकताः** **'अ' 'आ' लिखना-स्वरचना :** अपने शब्दों में अभिव्यक्त कर सकना।	1. प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिख सकेंगे। 2. स्वतंत्रता सेनानियों की देशभक्ति के बारे में अपने विचार लिखित रूप में व्यक्त कर सकेंगे।
		'इ' सृजनात्मक-अभिव्यक्तिः नयी- नयी विधाओं का सृजन कर सकना।	1. एकांकी को कहानी के रूप में लिख सकेंगे।
		'ई' प्रशंसा : किसी तथ्य या विषय के महत्व को समझकर उसकी प्रशंसा कर सकना।	1.साहस, वीरता, आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता की प्रशंसा कर सकेंगे।
		III **भाषा की बात :** **'आ' 'इ' 'ई' व्याकरणांश :** भाषिक संरचना को समझकर, व्याकरण अंशों की जानकारी प्राप्त कर सकना।	1. शब्दों का वाक्य में प्रयोग कर सकेंगे। 2. विलोम शब्द लिख सकेंगे। 3. वचन बदल सकेंगे। 4. उपसर्ग, प्रत्यय पहचान सकेंगे। 5. कृर्तृवाच्य को कर्मवाच्य में बदल सकेंगे। 6. जातिवाचक संज्ञाओं का व्यावहारिक प्रयोग कर सकेंगे।

संख्या	पाठ का नाम	शैक्षिक मापदंड	सूचक/संकेतक
9.	**दक्षिणी गंगा गोदावरी** (यात्रावृत्तांत)	I **अर्थग्राह्यता - प्रतिक्रियाः** **'अ' सुनना - बोलना :** सुने गये अंश को समझना और प्रतिक्रिया करना।	1. विभिन्न नदियों के जल के बारे में चर्चा कर सकेंगे। 2. किसी भी नदी का वर्णन अपने शब्दों में कर सकेंगे।
		'आ' 'इ' 'ई' पढ़ना-लिखनाः पढ़े गये अंश को समझना और प्रतिक्रिया करना।	1. पाठ के आधार पर प्रश्नों के उत्तर हाँ या 'नहीं' में दे सकेंगे। 2. अपठित गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे। 3. एक अनुच्छेद के मुख्य शब्द पहचान सकेंगे।
		II **अभिव्यक्ति - सृजनात्मकताः** **'अ' 'आ' लिखना-स्वरचना :** अपने शब्दों में अभिव्यक्त कर सकना।	1. प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिख सकेंगे। 2. लेखक की भावनाओं को अपने शब्दों में लिख सकेंगे। 3. 'गोदावरी को माता क्यों कहा गया'? इस बारे में अपने विचार लिख सकेंगे।
		'इ' सृजनात्मक-अभिव्यक्तिः नयी- नयी विधाओं का सृजन कर सकना।	1. यात्रा का वर्णन करते हुए मित्र को पत्र लिख सकेंगे।
		'ई' प्रशंसा : किसी तथ्य या विषय के महत्व को समझकर उसकी प्रशंसा कर सकना।	1.लेखक की यात्रा-वृत्तांत के अनुभवों की प्रशंसा कर सकेंगे।
		III **भाषा की बात :** **'अ' शब्द भंडार :** विभिन्न शब्दों का अर्थ समझकर दैनिक जीवन में प्रयोग कर सकना।	1. शब्द का वाक्य प्रयोग कर पर्याय शब्द लिख सकेंगे। 2. विलोम शब्द लिख सकेंगे।
		'आ' 'इ' 'ई' व्याकरणांश : भाषिक संरचना को समझकर, व्याकरण अंशों की जानकारी प्राप्त कर सकना।	1. शब्दों का संधि विच्छेद कर सकेंगे। 2. समास पहचान सकेंगे। 3. कारक चिह्नों के बारे में समझ सकेंगे। 4. अकर्मक व सकर्मक क्रियाँए पहचान सकेंगे।

संख्या	पाठ का नाम	शैक्षिक मापदंड	सूचक/संकेतक
10.	**नीति दोहे** (कविता)	I **अर्थग्राह्यता - प्रतिक्रियाः** **'अ' सुनना - बोलना :** सुने गये अंश को समझना और प्रतिक्रिया करना।	1. मानव जीवन पर नीति वचनों के प्रभाव के बारे में बता सकेंगे। 2. वस्तु विनियोग से संबंधित प्रश्नों के बारे में बता सकेंगे।
		'आ' 'इ' 'ई' पढ़ना-लिखनाः पढ़े गये अंश को समझना और प्रतिक्रिया करना।	1. ध्वनि साम्य वाले शब्दों को चुनकर लिख सकेंगे। 2. पानी के उपयोग के बारे में बता सकेंगे। 3. दोहा पढ़कर भाव लिख सकेंगे।
		II **अभिव्यक्ति - सृजनात्मकताः** **'अ' 'आ' लिखना-स्वरचना :** अपने शब्दों में अभिव्यक्त कर सकना।	1. प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिख सकेंगे। 2. दोहों के भाव अपने शब्दों में लिख सकेंगे।
		'इ' सृजनात्मक-अभिव्यक्तिः नयी- नयी विधाओं का सृजन कर सकना।	1. पाठ में दिये गये दोहों के आधार पर सूक्तियाँ लिख सकेंगे।
		'ई' प्रशंसा : किसी तथ्य या विषय के महत्व को समझकर उसकी प्रशंसा कर सकना।	1.दोहों की प्रशंसा कर सकेंगे। 2. कवि की प्रशंसा कर सकेंगे।
		III **भाषा की बात :** **'अ' शब्द भंडार :** विभिन्न शब्दों का अर्थ समझकर दैनिक जीवन में प्रयोग कर सकना।	1. शब्द के अर्थानुसार बेमेल शब्द पहचान सकेंगे।
		'आ' 'इ' 'ई' व्याकरणांश : भाषिक संरचना को समझकर, व्याकरण अंशों की जानकारी प्राप्त कर सकना।	1. शब्दों में प्रत्यय पहचानकर वाक्य में प्रयोग कर सकेंगे।

संख्या	पाठ का नाम	शैक्षिक मापदंड	सूचक/संकेतक
11.	**जल ही जीवन है** (कहानी)	I **अर्थग्राह्यता - प्रतिक्रियाः** **'अ' सुनना - बोलना :** सुने गये अंश को समझना और प्रतिक्रिया करना।	1. जल के महत्व के बारे में चर्चा कर सकेंगे। 2. जल के सदुपयोग के बारे में अपने विचार व्यक्त कर सकेंगे।
		'आ' 'इ' 'ई' पढ़ना-लिखनाः पढ़े गये अंश को समझना और प्रतिक्रिया करना।	1. पाठ पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दे सकेंगे। 2. पाठ के आधार पर पंक्तियों की व्याख्या कर सकेंगे। 3. अपठित अंश पढ़कर प्रश्न बना सकेंगे।
		II **अभिव्यक्ति - सृजनात्मकताः** **'अ' 'आ' लिखना-स्वरचना :** अपने शब्दों में अभिव्यक्त कर सकना।	1. प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिख सकेंगे। 2. जल की समस्या पर अपने विचार लिख सकेंगे।
		'इ' सृजनात्मक-अभिव्यक्तिः नयी- नयी विधाओं का सृजन कर सकना।	1. किसी भी विषय पर पोस्टर बना सकेंगे।
		'ई' प्रशंसा : किसी तथ्य या विषय के महत्व को समझकर उसकी प्रशंसा कर सकना।	1.जल संरक्षण करने वाले गाँवों की प्रशंसा कर सकेंगे।
		III **भाषा की बात :** **'अ' शब्द भंडार :** विभिन्न शब्दों का अर्थ समझकर दैनिक जीवन में प्रयोग कर सकना।	1. एक शब्द से कई शब्द बना सकेंगे। 2. विदेशज शब्दों को पहचान सकेंगे।
		'आ' 'इ' 'ई' व्याकरणांश : भाषिक संरचना को समझकर, व्याकरण अंशों की जानकारी प्राप्त कर सकना।	1. काल के प्रकार जान सकेंगे। 2. प्रश्नार्थक वाक्य बना सकेंगे। 3. अर्थ के आधार पर वाक्य पहचान सकेंगे।

संख्या	पाठ का नाम	शैक्षिक मापदंड	सूचक/संकेतक
12.	**धरती के सवाल अंतरिक्ष के जवाब** (साक्षात्कार)	I **अर्थग्राह्यता - प्रतिक्रियाः** **'अ' सुनना - बोलना :** सुने गये अंश को समझना और प्रतिक्रिया करना।	1. महापुरुषों के नाम बता सकेंगे। 2. अब्दुल कलाम और थॉमस के बारे में अपने विचार व्यक्त कर सकेंगे।
		'आ' 'इ' 'ई' पढ़ना-लिखनाः पढ़े गये अंश को समझना और प्रतिक्रिया करना।	1. पाठ के आधार पर प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे। 2. पाठ से संबंधित पंक्तियों की व्याख्या कर सकेंगे। 3. अपठित गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे।
		II **अभिव्यक्ति - सृजनात्मकताः** **'अ' 'आ' लिखना-स्वरचना :** अपने शब्दों में अभिव्यक्त कर सकना।	1. प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिख सकेंगे। 2. अच्छे नागरिक के गुण अपने शब्दों में लिख सकेंगे। 3. अब्दुल कलाम के आदर्शों के बारे में लिख सकेंगे।
		'इ' सृजनात्मक-अभिव्यक्तिः नयी- नयी विधाओं का सृजन कर सकना।	1. साक्षात्कार को निबंध के रूप में लिख सकेंगे।
		'ई' प्रशंसा : किसी तथ्य या विषय के महत्व को समझकर उसकी प्रशंसा कर सकना।	1.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के आदर्शों की प्रशंसा कर सकेंगे।
		III **भाषा की बात :** **'अ' शब्द भंडार :** विभिन्न शब्दों का अर्थ समझकर दैनिक जीवन में प्रयोग कर सकना।	1. पर्याय शब्द, वाक्य प्रयोग, विलोम शब्द, वचन बदलना कर लिख सकेंगे।
		'आ' 'इ' 'ई' व्याकरणांश : भाषिक संरचना को समझकर, व्याकरण अंशों की जानकारी प्राप्त कर सकना।	1. संधि विच्छेद कर सकेंगे। 2. समास पहचान सकेंगे। 3. शब्दों के प्रयोग को समझ सकेंगे। 4. दिये गये शब्दों का प्रयोग कर वाक्य बना सकेंगे।

अध्याय–IV

विधाएँ स्पष्टीकरण

1) निबंध
2) पत्र लेखन
3) कहानी आगे बढ़ाना
4) घटना वर्णन
5) नीति वाक्यों की व्याख्या : विषय वस्तु की जानकारी
6) विज्ञापन
7) पोस्टर
8) नारे
9) साक्षात्कार
10) नाटक
11) कविता
12) यात्रा-वृत्तांत

I. विधाएँ - स्पष्टीकरण

निबंध

- विषयवस्तु की समझ निबंध के सोपानों का क्रम।
- वाक्य निर्माण का क्रम।
- भावों की मौलिकता।
- भाषा की शुद्धता।

पत्र लेखन

- विषय के अनुसार हो।
- निर्माण क्रमबद्ध हो।
- पत्र के प्रारूप का क्रम सही हो।
- वर्तनी की शुद्धता

कहानी आगे बढ़ाना

- कहानी अर्थयुक्त तरीके से आगे बढ़ाना।
- वाक्यों का निर्माण ठीक हो।
- भाषा व्यावहारिक हो, सरल हो।
- भाषा शुद्ध, बिना अक्षर विन्यासों के हो।
- उपसंहार अर्थ युक्त हो।

घटना वर्णन

- घटना की जानकारी।
- घटना वास्तविक हो।
- वाक्य क्रम ठीक तरह से हो।
- भाषा शुद्ध, व्यावहारिक, अक्षर विन्यास के बिना हो।
- घटना वर्णन की पूर्ति भी अर्थयुक्त हो।

नीति वाक्यों की व्याख्या : विषयवस्तु की जानकारी

- वाक्य निर्माण नीति को प्रकट करने में प्रभावित हो।
- व्याख्या जीवन से संबंधित हो।
- वाक्य सरल, भाषा मधुर, तथा शुद्ध हो।

विज्ञापन

- विषय का ज्ञान हो।
- शैली प्रभावपूर्ण हो।
- प्रभावोत्पादक शब्दों का चयन हो।

पोस्टर

- प्रभावशाली हो।
- चित्र स्पष्ट हो।
- चित्रों के अनुसार रंगों का चयन हो।

- शब्द प्रभावपूर्ण हो।
- वाक्य की सटीकता हो।

नारे

- विषय का ज्ञान हो।
- वाक्य तुकांत हो।
- वाक्य निर्माण शुद्ध और सरल भाषा में हो।
- प्रभावोत्पादक हो।
- भाव सीधा हो।

साक्षात्कार : साक्षात्कार विधा की जानकारी

- विषय का ज्ञान हो।
- व्यक्तिगत विषयों की जानकारी प्राप्त करनेवाले प्रश्न हो।
- विषयगत जानकारी प्राप्त करनेवाले प्रश्न हो।
- प्रश्नों में क्रम बद्धता हो।

करपत्र की तैयारी :

- विषय का ज्ञान होना हो।
- शीर्षक विषय के अनुकूल हो।
- भाषा की शुद्धता हो।
- विषय संदेशात्मक हो।

नाटक

- पात्र विषय के अनुकूल हो।
- भाषा पात्रोचित हो।
- विषय संदेशात्मक हो।
- भाषा सरल, अर्थयुक्त हो।
- वाक्य निर्माण क्रमबद्ध हो।

कविता

- सौंदर्यानुभूति प्राप्त होने लायक हो।
- भाषा सरल एवं स्पष्ट हो।
- भाषा तुकांत हो।
- लयबद्ध हो।
- काव्य पर आकृष्ट करने लायक हो।

यात्रा-वृत्तांत

- विषय ज्ञान की जानकारी हो।
- वर्णन शैली हो।
- विषय क्रमबद्ध हो।
- प्रभावपूर्ण शब्दावली हो।
- वाक्य निर्माण दर्शनीय स्थान के अनुरूप हो।
- संस्कृति - धर्म आदि की जानकारी भी हो।

अध्याय–V

शिक्षण व्यूह
(Teaching Strategies)

1) **KWL व्यूह**
2) **मनोरेखा चित्र (Mind Mapping)**
3) **नृत्याभिनय (Choreography)**
4) **एकल अभिनय (Mono Action)**
5) **मूकाभिनय (Mime)**
6) **सामूहिक कार्य (Group Work)**
7) **परियोजना कार्य (Project Work)**
8) **चर्चा (Discussion)**
9) **स्व - अवगाहन - प्रदर्शन (Self Understanding Expression)**
10) **Zigsaw विधि**
11) **Cloze Test विधि**
12) **साहित्यिक कार्यक्रम (Literature Activities)**
13) **पुस्तक की समीक्षा (Book Review Read & Reflect doubt)**

शिक्षण व्यूह

1) KWL **व्यूह :**

(मुझे क्या पता है? मुझे क्या पता लगाना चाहिए? मैने क्या सीखा?)

किसी एक विषय पर चर्चा करने से पहले छात्रों से पूछना चाहिए कि उन्हें क्या पता है? यह पहला सोपान है। इसके पश्चात वह क्या जानना चाहते है? उन के विचार सुनने चाहिए यह दूसरा सोपान है। पाठ-पठन, संदर्भ ग्रंथों को पढ़ाना, क्रिया कलापों में भाग लेना, सामूहिक कार्यों में भाग लेना तीसरा सोपान है। इस प्रकार - विषय बोध के द्‌वारा चर्चा के उपरांत छात्रों ने क्या सीखा यह पूछना चाहिए।

इस व्यूह में किसी एक अंश को छात्रों से परिचय कराते समय उन्हें इस अंश का पूर्व ज्ञान, रूचि विषय बोध की जानकारी कहाँ तक है इस विषय की जानकारी प्राप्त की जाती है। इसमें बच्चों की कल्पनाशक्ति और पूर्व ज्ञान के आधार पर तथ्यों को जानने का अवसर प्राप्त होता है।

2) **मनोरेखा चित्र (Mind Mapping)**

छात्र अपने आसपास की परिस्थितियों से प्रभावित होते हैं। वह अपने तरीके से उसे अपनी शैली में प्रतिक्रिया दिखाते हैं। Mind Mapping का अर्थ है, बालक किसी एक विषय के बारे में अपने अनुभवों को कक्षा-कक्ष से बाहर प्राप्त ज्ञान को कक्षा में प्रदर्शित करने से उस विषय की जानकारी बांटता है।

इसके लिए उस अंश से संबंधित मूल शब्द को श्यामपट पर लिख कर उस शब्द के भावों पर चर्चा करवायी जाती है।

छात्र स्वयं सोचकर अपने भाव विचार व्यक्त करते हैं। अपनी भावाभिव्यक्ति लिखित रूप में व्यक्त करने की पूर्ण स्वतंत्रता छात्र को मिलती है जिससे छात्र में स्वाभिव्यक्ति करने की क्षमता का विकास होता है।

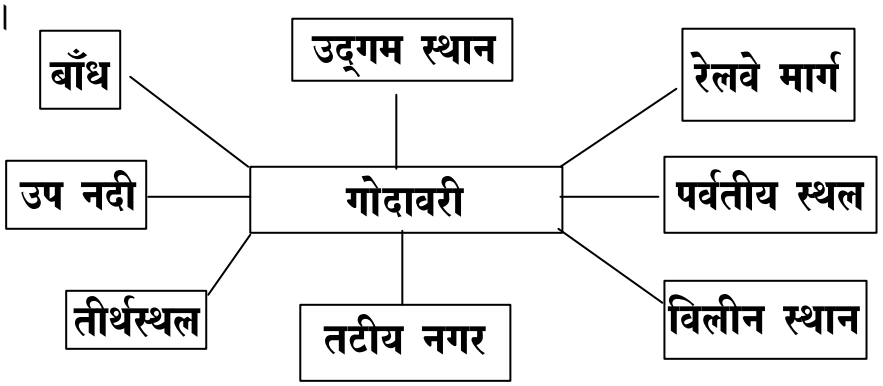

उपरोक्त मनोरेखा चित्र द्‌वारा छात्रों में निबंध, निबंधात्मक प्रश्नों के उत्तर देने की क्षमता बढ़ेगी।

3) **नृत्याभिनय** (Choreography)

छात्रों द्‌वारा सुनी हुई, पढ़ी हुई घटना/अंश को अभिनय/नृत्य के रूप प्रदर्शित करना ही नृत्याभिनय (Choreography) है। इसमें बच्चों को नृत्यरूपी पाठ्‌यांशों को प्रदर्शित करने का अवसर मिलता है। इसके लिए पाठ्‌यांशों को पढ़कर अभिनय करने वाले पात्रों (छात्रों) का चुनाव करना

चाहिए। प्राकृतिक दृश्य जैसे - वृक्ष, पौधों आदि दर्शाने के लिए भी छात्रों का चुनाव करना चाहिए। छात्रों से अभ्यास करवाकर प्रदर्शन के लिए तैयार करना चाहिए। अभिनय के समय गीत को गाने वाले छात्रों का चुनाव कर उन्हें भी अभ्यास करवाना चाहिए।

जैसे :- हम भारतवासी कविता

जिस देश में गंगा बहती है....

इसके द्वारा छात्रों में कविता, गीत, नृत्य आदि की रचना शैली का विकास होता है।

4) **एकल अभिनय :-** (Mono Action)

पाठ्यांश या किसी एक अंश में आनेवाले पात्र द्वारा किये गये अभिनय को एकल अभिनय, कहते हैं।

जैसे :- स्वराज्य की नींव (एकांकी) X लक्ष्मीबाई, जूही जैसे पात्र

यक्ष-प्रश्न में युधिष्ठिर - IX

इससे पात्र के स्वभाव के बारे में अवगत करवाया जा सकता है।

5) **मूकाभिनय** (Mime) :

मौन रूप से अभिनय के द्वारा किसी घटना को जैसे के तैसे प्रेक्षकों के समझने लायक प्रस्तुत करना ही मूकाभिनय है। इसमें संभाषण (Dailogue) नहीं होता है।

जैसे - गुटर गूँ - गुटर गूँ (SAB TV Programme) या चार्ली चापलीन का मूकाभिनय

6) **सामूहिक कार्य (Group work)**

सामूहिक कार्यों से बच्चों में मिलजुलकर काम करना, विचार-विनियम करना, प्रतिवेतन लिखना आदि को प्रोत्साहन मिलता है। इससे, बच्चे आपस में चर्चा करके प्रदर्शन के समय अपने-आप को सक्षम बनाते हैं। सामूहिक कार्य में परियोजना कार्य, प्रस्तुत कार्य, संगोष्ठी, पाठ पठन, शब्द-भंडार आदि समयानुकूल कर सकते हैं। समाचारों का अर्जन कर प्रतिवेदन बनाना आदि इसी के अंग हैं।

7) **परियोजना कार्य** (Project Work)

परियोजना कार्य विविध आकडों के संग्रहण का साधन है। इसे गृहकार्य के रूप में दे सकते हैं। गृहकार्य देते समय इसे व्यक्तिगत व सामूहिक कार्य के रूप में दे सकते हैं। समूह में दिये गये कार्य में प्रत्येक छात्र को व्यक्तिगत रूप से निर्देश देना चाहिए। किये गये परियोजना कार्य का प्रस्तुतीकरण व प्रदर्शन कक्षा में करवाना चाहिए। प्रदर्शन या प्रस्तुतीकरण के दौरान उत्पन्न त्रुटियों के लिए आवश्यक सुझाव दें।

8) **चर्चा** (Discussion)

किसी अंश के संबंध में छात्रों के विचार जानना, जानकर चर्चा में भाग लेना।

जैसे :- 1. जल का संरक्षण कैसे करें?

2. पर्यावरण को कैसे संतुलित करें। पर्यावरण का संतुलन कैसे करें?

9) **स्व-अवबोध - प्रदर्शन** (Self understanding-Expression)

किसी एक अंश को छात्र स्वयं पढ़कर उसे समझकर उसे एकल अभिनय, नाटक के रूप में या कठपुतली किसी भी विधा में छात्र स्वयं निर्णय करके उसे प्रदर्शित करेंगे।

जैसे : लक्ष्मीबाई, गाने वाली चिड़िया

10) Zigsaw **विधि**

इस विधि में पाठ को विभाजित कर अनुच्छेदों में बाँटा जाता है। छात्रों को भी दलों में विभाजित कर एक-एक दल को एक एक अनुच्छेद दिया जाता है। सभी छात्र अपने समूह में प्राप्त अनुच्छेद को पहुँचते हैं। फिर एक के पश्चात् एक समूह अपने द्वारा पढ़े गये अंश का विवरण प्रस्तुत करते हैं। इसमें एक दूसरे के द्वारा उठाये गये संदेहों का भी निवारण किया जाता है। समझकर अपने विचार प्रकट करते हैं। आपस में सभी दल मिलकर उत्पन्न समस्याओंया संदेहों का निवारण चर्चा के द्वारा करेंगे।

11) Cloze Test **विधि**

इस व्यूह से पढ़ना-अर्थग्राह्यता कौशलों का विकास होता है। इसमें एक अंश के हर पाँचवें शब्द को रिक्त स्थान के रूप में दिया जाता है। उस अंश को पढ़ व समझकर रिक्त स्थान वाले शब्द की पूर्ति करना होता है।

12) **साहित्यिक कार्यक्रम :-** (Literature Activities)

चार-चार बच्चों को चार दलों में विभाजित कर प्रत्येक दल को भाषाई क्षमताओं का विकास करने के लिए अभ्यास दिया जाता है। ऐसे पढ़े हुए अंश में से एक दल को शब्द-भंडार मुहावरे आदि दूसरे दल को पढ़े हुए अंश से भाषा की महानता के बारे में, तीसरे दल को पढ़े हुए अंश का चित्र बनाना तथा चौथे दल को पढ़े हुए अंश में प्रश्न बनाना या व्याख्या लिखने के लिए निर्देश दिये जाते हैं। अर्थात् एक ही अंश पर सभी समूह साहित्यिक रुप से कार्य करते हैं।

इससे सभी दल के छात्र भाषाई क्षमताओं के विकास का अभ्यास करेंगे इन सभी अंशों को कक्षा में प्रदर्शित कराना चाहिए।

13) **पुस्तक की समीक्षा** (Book Review)

छात्रों में पठन क्षमता विकास करने के लिए पुस्तक पठन का आयोजन किया जाता है। छात्रों को पुस्तकालय की विविध प्रकार की पुस्तकें पढ़ने के लिए प्रेरित करना चाहिए और उन पुस्तकों पर समीक्षा करवानी चाहिए। समीक्षा में -

1) कौनसी पुस्तक पढ़ी?
2) पढ़ी हुई पुस्तक पर अपने विचार व्यक्त करना।
3) अपने अनुभव बताना।
4) पात्रों व घटनाओं का विवरण देना।
5) कवि ने किस उद्देश्य से उस अंश को लिखा होगा इस विषय पर चर्चा होनी चाहिए।

अध्याय–VI

अध्यापक की तैयारी

1) **शिक्षण के लिए**

2) **आकलन के लिए**

3) **परीक्षाओं के लिए** (Public Examination)

4) **बालक के सर्वांगीण विकास के लिए**

I. अध्यापक की सन्नद्धता

किसी भी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए यह आवश्यक है कि उस कार्य को सर्वप्रथम योजनाबद्ध कर लिया जाय। उसकी पहले से ही तैयारी कर ली जाय तो कार्य आसानी से संपन्न हो सकता है। दसवीं कक्षा में भी द्वितीय/प्रथम भाषा अधिगम के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अध्यापक को निम्नलिखित तैयारियाँ करनी होगी।

I **शिक्षण के लिए तैयारी**

II **आकलन के लिए तैयारी**

III **वार्षिक परीक्षा के लिए तैयारी**

I **शिक्षण के लिए तैयारी :-**

- दसवीं कक्षा की पुस्तक पूरी तरह से पढ़ें। पाठ्यांश पूरी तरह से समझें।
- वाक्य निर्माण, रचना शैली के बारे में जानकारी प्राप्त करें।
- वार्षिक, मासिक, पाठ योजना तैयार करें।
- पाठ्यक्रम नियमित रूप से पूर्ण करने की योजना बनायें।
- पद्य भाग के पाठ राग व भाव से पढ़ने का अभ्यास करें।
- गद्य भाग के विभिन्न पाठों को स्वयं समझाने के बजाय बच्चों से चर्चा करवाने वाले अंशों को लिख लें।
- विषय सामग्री को एक विधा से दूसरी विधा में बदलवाने का कार्य करवायें। इसके लिए पहले स्वयं इसका अभ्यास करें।
- प्रश्न पत्र स्वयं तैयार करें। उत्तर - पुस्तिका जाँचने के लिए सूचक निर्धारित करें।
- भाषा अध्ययन में विचार व्यक्त करना मुख्य है इसीलिए पद्य भाग, गद्य भाग दोनों पर बच्चों से विचार प्रकट करवाने की योजना बनायें।
- बच्चों को पढ़ना, लिखना पूर्ण रूप से न आता हो तो, इस प्रकार के बच्चों को पढ़ना, लिखना सिखाने की योजना तैयार कर उसे अमल में लायें।
- पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त पुस्तकालय-पुस्तकें, मैगज़ीन, पत्रिकाएँ आदि कक्षा-कक्ष में प्रचुर मात्रा में रखें। बच्चों से पढ़वायें।
- शिक्षण - अधिगम आकलन के लिए लिखने के अभ्यास देने के बदले, बच्चों द्वारा किसी अंश पर स्वयं लिखने वाले अभ्यासों की तैयारी कर लें।
- कक्षा -कक्ष में सृजनात्मक अभिव्यक्ति के लिए दीवार-पत्रिका लगानी चाहिए। बच्चों द्वारा लिखी गयी कविताएँ, कहानियाँ, गीत, चुटकुले आदि दीवार-पत्रिका पर प्रदर्शित करने के लिए दीवार-पत्रिका तैयार कर लें।
- बच्चों द्वारा किये गये कार्यों का संकलन करने के लिए पुस्तिका तैयार कर लें।
- पाठ से संबंधित संदर्भों को एकत्रित करना, लिखने से संबंधित परियोजना कार्य को मास में एक बार कक्षा-कक्ष में प्रदर्शित करने से संबंधित सामग्री एकत्रित कर लें।
- पाठ पढ़ाते समय उस पाठ से किन-किन दक्षताओं की प्राप्ति करना है इससे संबंधित योजना बना लें।

- दक्षताओं के स्वभाव अनुरूप उचित आयोजन रणनीति अपनायें।
- अभ्यासों के आयोजन में सलाहकार की भूमिका निभायें।

शिक्षण के लिए आवश्यक संसाधन :- पुस्तकें, समाचार - पत्र, मैगज़ीन, संदर्भ पुस्तकें, बाल साहित्य, पाठ्य-पुस्तक, चार्ट, पी.पी.टी., आदि।

II **आकलन की तैयारी :-**

- अध्यापक ने अपने शिक्षण कार्य में कहाँ तक सफलता प्राप्त की है, या किन दक्षताओं को प्राप्त करने में छात्र में सुधार आवश्यक है, यह जानने के लिए आकलन की आवश्यकता होती है। इसके लिए अध्यापक को निम्न लिखित तैयारी करनी होगी।
- सतत् समग्र मूल्यांकन का निर्वहन करने की योजना बनायें।
- इसमें छात्रों द्वारा किये गये दत्त कार्यों, परियोजनाओं और उनके द्वारा लिखित सामग्री को ध्यान में रखकर उनका आकलन करने की योजना बनायें।
- इसमें छात्रों की मौखिक क्षमताओं के आकलन के साथ-साथ लिखित व सृजनात्मक अभिव्यक्ति संबंधी दक्षताओं के आकलन का ध्यान रखें।
- अब तक आकलन केवल परीक्षाओं पर ही निर्भर था। इससे बच्चों में हीन भावना और दबाव बढ़ रहा था। इससे परिवर्तन लाने के लिए ए.पी.एस.सी. एफ - 2011 ने निम्न बिंदुओं को प्रस्तावित किया है -
- मूल्यांकन व परीक्षाएँ बच्चों के लिए केवल आकलन तक सीमित न होकर बच्चों के सीखने में सहायक होनी चाहिए।
- बच्चों के आकलन के लिए केवल परीक्षाओं तक सीमित न रहकर परियोजना कार्य, प्रदत्त कार्य, पोर्टफोलियो, संगोष्ठी, प्रदर्शन, अनेक्डाट, पर्यवेक्षण आदि का भी प्रयोग करें। इन अंशों को वार्षिक परीक्षा में समुचित भार दिया जाय।
- इसके लिए मूल्यांकन को शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में समावेशित किया जाय।
- प्रश्नों के स्वभाव बदलना, पाठ्यपुस्तकों में निहित सूचनाओं के आधार पर बच्चे स्वयं सोचकर लिखें। अपने अनुभवों को व्यक्त कर सकें, विविध प्रकार के समाधान देने वाले प्रश्न, विषय को दैनिक जीवन से जोड़ने वाले प्रश्न होने चाहिए।

  उपर्युक्त बिंदुओं के आधार पर आकलन संबंधी अपनी पूर्व योजना तैयारी कर लें।

III **वार्षिक परीक्षाओं के लिए तैयारी :-**

- बच्चों को वार्षिक परीक्षा के लिए तैयार करना एक अध्यापक का दायित्व होता है। इसके लिए उसे निम्न तैयारी करनी चाहिए।
- नमूना (मॉडल) प्रश्न पत्र अच्छी तरह पढ़ लें। ब्लू प्रिंट भली-भाँति समझ लें।
- ब्लू प्रिंट के आधार पर परीक्षा उपयोगी प्रश्नों की सूची बना लें।
- व्याकरणांशों की सूची बना लें।
- नमूना प्रश्न पत्र को ध्यान में रखते हुए पाठ्यपुस्तक में दिये गये प्रश्नों के अतिरिक्त अन्य प्रश्न भी तैयार करें।
- कक्षा के औसत और कम औसत वाले बच्चों के लिए विशेष तैयारी करें।
- प्रश्न-पत्र के आधार पर, वार्षिक परीक्षा से संबंधित तैयारी की मासवार योजना बना लें।
- पूर्व मासवार योजना के परिणामों के आधार पर आगामी मास की योजना में फेरबदल करने की तैयारी कर लें।
- समय-समय पर छात्रों की दक्षता की जाँच के लिए परीक्षा के आयोजन की भी योजना बना लें।

अध्याय–VII

योजनाएँ

1) वार्षिक योजना

2) पाठ-योजना

(i) सोपानों का विवरण

(ii) गद्य नमूना पाठ

(iii) पद्य नमूना पाठ

किसी भी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए एक योजना (Plan) का होना आवश्यक है। भाषा - शिक्षण के उद्देश्य की प्राप्ति बालकों में शैक्षिक मापदंडों के विकास व अपनाये जाने वाले व्यूहों के लिए, एक अध्यापक को चाहिए कि निम्न योजनाएँ बनायें। ये योजनाएँ हैं :

(1) **वार्षिक योजना** (Year Plan)

(2) **पाठ योजना** (Lesson Plan)

वार्षिक योजना

वर्तमान वार्षिक योजना में एक कक्षा से संबंधित, तत्संबंधी विषय में शैक्षिक वर्ष की समाप्ति पर बालक किन-किन शैक्षिक मापदंडों की प्राप्ति करें, एक-एक पाठ के लिए कितने कालांश चाहिए? इसका विवरण लिखना चाहिए।

शिक्षण प्रक्रिया सुचारु रूप से चलने के लिए किन-किन शिक्षण अधिगम सामग्रियों की आवश्यकता पड़ती है? प्रत्येक माह शैक्षिक मापदंडों की प्राप्ति के लिए किन-किन कार्यक्रमों का आयोजन करना चाहिए? सी.सी.ई. से संबंधित किन-किन जानकारियों का अंकन करना चाहिए? जैसे अंशों को वार्षिक योजना में स्थान देना चाहिए। निम्नलिखित सोपानों के द्वारा वार्षिक योजना लिखनी चाहिए।

I कक्षा

II विषय

III आवश्यक कालांशों की संख्या

IV शैक्षिक वर्ष की समाप्ति पर बालकों द्वारा अर्जित की जाने वाली शैक्षिक दक्षताएँ

V माहवार पाठों का विभाजन

VI अध्यापक की प्रतिक्रियाएँ

VII प्रधानाध्यापक के सुझाव, निर्देश।

अ) वार्षिक योजना - नमूना

1. **कक्षा** :

2. **विषय** :

3. **आवश्यक कालांशों की संख्या :**

   अ) कुल कालांश :

   आ) शिक्षण अधिगम के लिए आवश्यक कालांशों की संख्या :

4. **वर्ष की समाप्ति पर अर्जित किये जाने वाले शैक्षिक मापदंड :**
   - अर्थग्राह्यता - प्रतिक्रिया
   - अभिव्यक्ति - सृजनात्मकता
   - भाषा की बात

5. मासवार पाठों का विभाजन :

महीना	शिक्षण हेतु पाठ का नाम	आवश्यक कालांशों की संख्या	संसाधन	आयोजित किये जाने वाले कार्यक्रम, सी.सी.ई.
जून	1 2			

6. अध्यापक की प्रतिक्रिया :

7. प्रधानाध्यापक के सुझाव व निर्देश :

आ) वार्षिक योजना के सोपानों का विवरण

I. कक्षा : जिस किसी कक्षा की वार्षिक योजना लिख रहे हैं, उस कक्षा की संख्या यहाँ लिखें।(उदाः 6वीं, 7वीं, 8वीं, 9वीं)

II. विषय : विषय लिखें।(उदाः हिंदी, तेलुगु, अंग्रेज़ी आदि।)

III. आवश्यक कालांशों की संख्या :पाठ्यपुस्तक के सभी पाठों को पूर्ण करने के लिए आवश्यक कालांशों की संख्या यहाँ लिखें। इनमें-

अ) कुल कालांश : 110 (यानी इसमें वर्ष की कुल कालांशों की संख्या लिखेंगे।)

आ) शिक्षण के लिए आवश्यक कालांशों की संख्या : 90 (यानी कुल शिक्षण कालांश 110 हैं, तो पाठ्यपुस्तक शिक्षण के लिए 90 कालांश निर्धारित हैं।)

IV. वर्ष की समाप्ति तक अर्जित किये जाने वाले शैक्षिक मापदंड :

शैक्षिक वर्ष की समाप्ति तक छात्रा का अपनी कक्षा के स्तरानुसार किन-किन शैक्षिक मापदंडों को अर्जित करना चाहिए इसके बारे में लिखना चाहिए। इन्हें लिखते समय पाठ्यपुस्तक को ध्यान में रखना चाहिए।

1. अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया :
   बालक किसके बारे में किस तरह बातचीत करें, के बारे में लिखें।
   बालक किसके बारे में पढ़कर व समझकर प्रतिक्रिया करें, के बारे में लिखें।
2. अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता :
   बालक किसके बारे में अपने शब्दों में लिखना है, के बारे में लिखें।
   सृजनात्मक रूप में किन-किन विधाओं में प्रस्तुतीकरण है, उसके बारे में लिखना है।
   किनकी प्रशंसा कर सकें, उन्हें लिखना है।
3. भाषा की बात : व्याकरणांश में किन अंशों की प्राप्ति करना है, उन्हें लिखना है।
4. परियोजना कार्य :
   पाठ के आधार पर बालक को किस तरह के परियोजना कार्य करना है, के बारे में लिखना है। इस तरह शैक्षिक वर्ष की समाप्ति पर बालक किन-किन दक्षताओं में क्या प्राप्त करना है, के बारे में उन-उन दक्षताओं के नीचे लिखना है।

V. माहवार पाठों का विभाजन - योजना :

पूरे साल भर में किस महीने में क्या पढाऩा है? उस पाठ की समाप्ति के लिए आवश्यक कालांशों की संख्या कितनी होगी? (यहाँ पाठ का शिक्षण यानी प्रस्तावना चित्र से लेकर परियोजना कार्य तक के क्रियाकलाप करवाना है। अध्यापक को इन सबका ध्यान रखकर पाठ कालांशों का विभाजन करना चाहिए।)। उसी तरह पाठ शिक्षण के लिए अतिरिक्त सामग्री क्या चाहिए, आदि के बारे में लिखना चाहिए।

शैक्षिक मापदंडवार विकास के लिए प्रति महीने किन कार्यक्रमों का आयोजन करने वाले हैं, आदि के बारे में विवरण देने चाहिए। (उदा : निबंध लेखन, भाषण प्रतियोगिता, कविता वाचन, नाटक मंचन आदि।)

तालिका को निम्नलिखित ढंग से लिखना चाहिए।

माह	पाठ का नाम	आवश्यक कालांशों की संख्या	सामग्री	आयोजित किये जाने वाले कार्यक्रम, सी.सी.ई.
जून	जिस देश में गंगा बहती है	7	चित्र, वीडियो आदि।	गायन प्रतियोगिता

इस तरह सभी पाठों के लिए लिखना चाहिए। इस बात का पूरा ध्यान रखना चाहिए कालांशों का विभाजन पाठ के स्वभाव को ध्यान में रखकर करना चाहिए। इस तरह एक पाठ के लिए औसत छह कालांश प्राप्त होते हैं।

शिक्षण के लिए संसाधन एवं शिक्षण अधिगम सामग्री (Resources for teaching & TLM) :

प्रत्येक अध्यापक को चाहिए कि वह शिक्षण करने वाले पाठ के लिए संसाधन इकट्ठा कर लें। यहाँ संसाधन का अर्थ है- उपयुक्त ग्रंथः (reference books), अध्यापक सहायक पुस्तिका, शिक्षण में उपयोगी सामग्री, शब्दकोश, सी.डी., वीडियो, पत्रिकाएँ, समाचार पत्र के मुख्यांश, शिक्षण टिप्पणियाँ आदि। अध्यापक इनके अतिरिक्त अन्य सामग्रियों का उपयोग भी कर सकते हैं।

आयोजित किये जाने वाले कार्यक्रम (Activities / Programmes to be performed) :

अपेक्षित दक्षताओं की प्राप्ति के लिए संबंधित विषय में कुछ कार्यक्रम आयोजित करने चाहिए। इनका आयोजन स्थानीय परिवेश का उपयोग करते हुए करना चाहिए। इसके अंतर्गत कुछ कार्यक्रम कक्षा में तो कुछ कार्यक्रम बाहर आयोजित करने चाहिए। इनमें क्षेत्र पर्यटन (field visit), सांस्कृतिक कार्यक्रम (cultural activities), विज्ञान यात्राएँ (educational tours), सामाजिक संस्थाओं का पर्यटन (visiting of social institutions), समाज सेवा (social service), कूटप्रश्न प्रतियोगिता (quiz),सेमिनार (seminars), विविध तरह की कविताएँ, कहानियाँ, करपत्र, पोस्टर आदि बनाने के लिए कार्यशालाएँ (workshops for material development), समाचार पत्र के लिए लेख लिखना (writing articles / case studies to newspapers), कवि सम्मेलन, विषय विशेषज्ञों द्वारा भाषण (lecturers from experts), पद्य वाचन, निबंध लेखन, भाषण प्रतियोगिता, चित्रलेखन, कविता लेखन, कहानी लेखन आदि सृजनात्मक क्रियाकलापों (creative activities) का आयोजन करना चाहिए। इन्हें वार्षिक योजना में दर्शाना तथा अमल में लाना चाहिए। इन कार्यक्रमों से छात्रों में विविध दक्षताओं, रुचियों का विकास होता है तथा पाठशाला मनोरंजन का केंद्र बनता है। इसके लिए प्रत्येक अध्यापक, प्रधानाध्यापक को व्यावसायिक ढंग से सोचते हुए अपने व्यवसाय के प्रति न्याय करना चाहिए। उसी तरह सी.सी.ई से संबंधित किस महीने में रचनात्मक मूल्यांकन आयोजित व दर्ज करना है तथा सारांशात्मक मूल्यांकन के लिए प्रश्न पत्र तैयार करना है, आदि वार्षिक योजना में दर्शाना चाहिए।

VI. अध्यापक की प्रतिक्रियाएँ :

वर्ष समाप्त होने तक अध्यापक शैक्षिक मापदंडों की प्राप्ति के लिए किन-किन क्रियाकलापों का आयोजन किया है? छात्रों की भागीदारी कैसी है? किन शैक्षिक मापदंडों में छात्रों ने प्रगति की है? किनमें पिछड़े हैं? सृजनात्मक, प्रशंसापूर्वक कार्य, परियोजना कार्य किस तरह किये? शैक्षिक मापदंडों की प्राप्ति के लिए वह और क्या कर सकता है? आदि के बारे में अध्यापक को अपनी प्रतिक्रियाएँ लिखनी चाहिए। इसके लिए कुछ पृष्ठ रखने चाहिए। वार्षिक योजना के सोपान एक से पाँच तक कोई बड़े परिवर्तन देखने को नहीं मिलेंगे। किंतु अध्यापक की प्रतिक्रियाएँ पाठवार बदलती रहती हैं। इसीलिए माहवार प्रतिक्रियाएँ लिखनी चाहिए। प्रधानाध्यापक के सुझाव व निर्देश भी माहवार होते हैं, जिन्हें वार्षिक योजना के सोपान संख्या सात में दर्ज करने होते हैं। इस तरह अध्यापक की प्रतिक्रियाएँ, प्रधानाध्यापक के सुझाव व निर्देश लिखने के उपरांत अगले वर्ष के लिए एक नया पृष्ठ रखना चाहिए। अतः वार्षिक योजना के इन सोपानों के लिए अलग से पृष्ठ रखने चाहिए।

VII. प्रधानाध्यापक के सुझाव व निर्देश :

प्रधानाध्यापक को चाहिए कि वह मासवार अपने सुझाव व निर्देश दर्ज करें। इस तरह वर्ष समाप्त होने पर अगले वर्ष के लिए एक और पृष्ठ आबंटित करना चाहिए।

वार्षिक योजना

I **कक्षा : दसवीं**

II **विषय : हिंदी**

III **आवश्यक कालांशों की संख्या :**

अ) कुल कालांश : 220

आ) शिक्षण के लिए आवश्यक कालांश : 110

IV **शैक्षिक वर्ष की समाप्ति पर छात्र द्वारा प्राप्त की जाने वाली दक्षताएँ**

I **अर्थग्राह्यता - प्रतिक्रिया :-**

- दिये गये विषय पर चर्चा कर सकेंगे।
- पंक्तियाँ क्रमानुसार लिख सकेंगे।
- भाव से संबंधित पंक्तियाँ पाठ में से ढूँढ़कर लिख सकेंगे।
- पाठ पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे।
- गद्यांश पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे।
- किसी एक विषय पर अपने विचार प्रकट कर सकेंगे।
- दिये गये विषय के महत्व के बारे में बता सकेंगे।
- पाठ के आधार पर वाक्य जोड़कर सही वाक्य लिख सकेंगे।
- पात्र के स्थान पर स्वयं को रखकर अपने विचार बता सकेंगे।
- कवियों के नाम बता सकेंगे।
- कवियों के बारे में बता सकेंगे।
- रिक्त स्थानों की पूर्ति कर सकेंगे।
- पाठ पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे।
- पद्य, गीत, कविता, वार्तालाप आदि सुनकर समझ सकेंगे। अपने शब्दों में कह सकेंगे।
- संबंधित अंशों के कारण बता सकेंगे।
- पद्य, गीत धारा प्रवाह के साथ गा सकेंगे। अपने शब्दों में कह सकेंगे।
- छात्र समाज के प्रति संवेदनशील बन सकेंगे।

II **अभिव्यक्ति सृजनात्मकता :-**

- पाठ्यांशों की घटनाओं, अंशों, पात्रों, स्थानों, विषयों के बारे में समझकर अपने शब्दों में लिख सकेंगे।

- अधूरे विषय, कहानी, कविता, संवाद आदि आगे बढ़ा सकेंगे।
- अलग-अलग घटनाओं में स्वयं को रखकर घटना आगे बढ़ा सकेंगे।
- शब्दों का विविध संदर्भों में सही पद्धति में वाक्य प्रयोग कर सकेंगे।
- पर्याय शब्दों के अर्थग्रहण कर दैनिक जीवन में उपयोग कर सकेंगे।
- पद्य या गद्य को एक विधा से दूसरी विधा में बदल सकेंगे।
- निमंत्रण, बधाई पत्र, दीवार पत्रिका, पोस्टर, पावर पाइंट प्रस्तुतीकरण तैयार कर सकेंगे।
- पाठ का भाव अपने शब्दों में लिख सकेंगे।
- दिये गये विषय पर अपने विचार लिख सकेंगे।
- संदेश लिख सकेंगे।
- साक्षात्कार के लिए प्रश्न लिख सकेंगे।
- दिये गये विषय का महत्व लिख सकेंगे।
- किसी पात्र, लेखक या कवि, व्यक्ति, मित्र आदि की प्रशंसा लिख सकेंगे।
- प्रेरणा देने वाले किसी भी अंश की प्रशंसा लिंग, धर्म, वर्ग और भेद के बिना कर सकेंगे।
- भिन्न संस्कृति, संप्रदायों की प्रशंसा कर सकेंगे।

III **भाषा की बात :-**

- व्याकरणांशों को पहचान सकेंगे।
- मुहावरों के अर्थ बताकर उनका वाक्य में प्रयोग कर सकेंगे।
- सरल, संयुक्त, मिश्र वाक्यों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- शब्दार्थ बताकर वाक्य प्रयोग कर सकेंगे।
- पर्यायवाची शब्द बता सकेंगे।
- समुच्चय बोधक, संबंध बोधक, विस्मयादि बोधक शब्द जोड़ सकेंगे।
- पुनरुक्त शब्द समझ सकेंगे।
- विपरीतार्थक शब्द लिख सकेंगे।
- पद-परिचय बता सकेंगे।
- तत्सम, तद्भव, उपसर्ग, प्रत्यय शब्द पहचान सकेंगे। लिख सकेंगे।
- संधि-विग्रह कर सकेंगे।
- समास पहचान सकेंगे।
- कारक शब्द पहचान सकेंगे।
- संयुक्त क्रिया का प्रयोग समझ सकेंगे।
- अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिख सकेंगे।
- अकर्मक, सकर्मक क्रिया पहचान सकेंगे।
- वाक्य के प्रकार बता सकेंगे।

V माहवार पाठ योजना का विभाजन :-

इकाई	मास	पढ़ानेवाले पाठ का नाम	आवश्यक कालांशों की संख्या	संसाधन	आयोजित किये जानेवाले कार्यक्रम
	जून	1. बरसते बादल	8	वर्षा से संबंधित कुछ चित्र।	• हावभाव के साथ कविता का प्रदर्शन। • वर्षा से संबंधित कविताओं का संग्रहण।
I	जुलाई	2. ईदगाह	8	कुछ त्यौहारों से संबंधित संदर्भों के चित्र, रमज़ान से संबंधित चित्र, किसी मेले का चित्र।	• कहानी का नाटकीकरण। पाठशाला में मेले का आयोजन छात्रों से करवाना।
		• यह रास्ता कहाँ जाता है? (पठन हेतु नाटक)	1		
		3. हम भारतवासी	8	महान व्यक्तियों के चित्र, देश भक्तों के चित्र	• हावभाव के साथ कविता का प्रदर्शन • देश भक्ति से संबंधित कविता, गीत का संग्रहण।
		• शांति की राह में			
II	अगस्त	4. कण-कण का अधिकारी	8	गाँधीजी का चरखा चलाते हुए चित्र, कुछ मेहनती व्यक्तियों के चित्र।	• हावभाव के साथ कविता का प्रदर्शन • छात्रों से श्रम दान करवाना। • श्रम से संबंधित प्रेरणा दायक कविताओं का संग्रहण।

		5. लोकगीत	8	कई प्रकार के लोकगीतों का आडियो सुनवाना जिस संदर्भों में लोकगीत गाये जाते हैं उनके चित्र।	• हावभाव के साथ कुछ लोकगीतों का प्रदर्शन • एक अंश देकर उस विषय पर निबंध लिखाना।
		• उलझन (पठन हेतु)	1		
II	सितंबर	6. अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी	8	महान व्यक्तियों द्वारा लिखे पत्र।	• हिंदी दिवस का आयोजन भाषण प्रतियोगिता का चर्चा आयोजन
		दो कलाकार (उपवाचक)	2		
III	सितंबर /अक्तूबर	भक्ति पद	8	रैदास, मीराबाई के चित्र, हिंदू, मुसलमान, सिख, ईसाई देवताओं के चित्र। संबंधित लोक कथाएँ	• भजन प्रतियोगिता का आयोजन। हाव-भाव के साथ पद, चौपाइयों का गायन
	अक्तूबर	स्वराज्य की नींव	8	लक्ष्मीबाई से संबंधित कहानियाँ। तात्या, लक्ष्मीबाई के चित्र, तोप, नूपुर के चित्र	नाटकीकरण
	अक्तूबर /नवंबर	माँ मुझे आने दे!	1		चर्चा
		दक्षिणी गंगा गोदावरी	8	गोदावरी नदी पी.पी.टी., भारत के मानचित्र में गोदावरी को दर्शाना	यात्रा - वर्णन चर्चा
		अपने स्कूल को एक उपहार (उपवाचक)	2		चर्चा
IV	दिसंबर	नीति दोहे	8	रहीम, बिहारी के चित्र, दोहों का चार्ट	• राग व हाव-भाव के साथ दोहों का गायन पाठशाला में नीति संबंधी सूक्तियों के चार्ट लगाना।

	दिसंबर	जल ही जीवन है	8	जल के विभिन्न उपयोगों को दर्शाता चार्ट	सरकार की ओर से जल संरक्षण के लिए किये जाने वाले कार्यों की सूची बनवाना।
	दिसंबर /जनवरी	क्या आपको पता है? (पठन हेतु)	1		चर्चा
	जनवरी	धरती के सवाल अंतरिक्ष के जवाब	8	दो, तीन विशिष्ट व्यक्तियों से लिये गये साक्षात्कार	साक्षात्कार का आयोजन।
	जनवरी	अनोखा उपाय (उपवाचक)	2		चर्चा

VI अध्यापक की प्रतिक्रियाएँ (Teacher's reflections) :

VII प्रधानाध्यापक के सुझाव व निर्देश :

पाठ - योजना

पहले पाठ-योजना के अंतर्गत पाठ के उद्देश्य - स्पष्टीकरण, विषय ज्ञान, साहित्य ज्ञान, भाषा ज्ञान, रुचि, अभिप्राय, शिक्षण पद्धतियाँ, शिक्षण सामग्री आदि लिखा करते थे। उसी तरह एक पाठ शिक्षण का अर्थ था - एक पाठ को तीन-चार हिस्सों में विभाजित कर उसी में शीर्षक की घोषणा, कवि परिचय, व्याकरणांश बताना, गृहकार्य देना आदि कार्य किया करते थे। इसके कारण छात्र पाठ के बारे में जान लेना ही ज्ञान समझते थे। पाठ के अभ्यासों का अधिक महत्व नहीं था। उन अभ्यासों के उत्तर भी पाठ से संबंधित होते थे। उन पर किसी भी प्रकार की चर्चा नहीं होती थी।

अब नवीन पाठ्य पुस्तकों की भाषाई दक्षताओं का अनुसरण करते हुए उनके अनुरूप पाठ योजना लिखनी पड़ती है। अब पाठ योजना में अध्यापक कार्य, छात्र कार्य, श्यामपट कार्य जैसे कार्य नहीं होंगे। पूरे पाठ के लिए एक ही बार यानी उन्मुखीकरण से लेकर परियोजना कार्य तक के लिए पाठ योजना बनानी होगी। वार्षिक योजना में तत्संबंधी पाठ की पूर्ति के लिए आवश्यक कालांशों की संख्या लिखनी चाहिए। उसका अनुसरण करते हुए एक कालांश में क्या करना चाहिए? कैसी रणनीतियों को अपनाना चाहिए? के बारे मं बताते हुए पाठ योजना का निर्माण करना चाहिए।

अ) पाठ योजना - नमूना

I. पाठ का नाम :

II. पाठ के लिए आवश्यक कालांशों की संख्या :

III. पाठ के द्वारा अर्जित की जाने वाली दक्षताएँ :

1. **अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया** : .....
2. **अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता** : .....
3. **भाषा की बात** : .....

IV. कालांशवार विभाजन - योजना :

कालांश संख्या	शिक्षण बिंदु	शिक्षण रणनीतियाँ	सामग्री	मूल्यांकन

V. अतिरिक्त जानकारी का संग्रहण :

VI. अध्यापक की प्रतिक्रियाएँ :

आ) हिंदी पाठ योजना के सोपानों का विवरण

I. पाठ का नाम : जिस किसी पाठ की पाठ योजना लिखनी है, उस पाठ का नाम लिखें। जैसेः जिस देश में गंगा बहती है...

II. पाठ के लिए आवश्यक कालांशों की संख्या : वार्षिक योजना में इस पाठ के लिएआवश्यक कालांशें की संख्या लिखें। इस पाठ के लिए7 कालांश हैं।

III. पाठ के द्वारा अर्जित की जाने वाली दक्षताएँ :

1. छात्र इस पाठ की समाप्ति पर अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया शैक्षिक मापदंड में जो दक्षताएँ अर्जित करेंगे, वे यहाँ पर लिखें।

   .....

   .....

2. छात्र इस पाठ की समाप्ति पर अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता शैक्षिक मापदंड में जो दक्षताएँ अर्जित करेंगे, वे यहाँ पर लिखें।

   .....

   .....

3. छात्र इस पाठ की समाप्ति पर भाषा की बात शैक्षिक मापदंड में जो दक्षताएँ अर्जित करेंगे, वे यहाँ पर लिखें।

   .....

   .....

ऊपर दर्शाये गये शैक्षिक मापदंड छात्रों द्वारा अर्जित करने हेतु प्रेरित करना चाहिए।

IV. कालांशवार विभाजन - योजना :

पूरे पाठ के लिए आवश्यक कालांशों की संख्या ध्यान में रखकर किस शिक्षण अंश के लिए कितने कालांश आबंटित किये गये, के बारे में लिखना चाहिए। इसमें उस कालांश की संख्या लिखकर शिक्षण अंश, शिक्षण रणनीति, सामग्री, मूल्यांकन आदि लिखना चाहिए।

कालांश संख्या	शिक्षण अंश	शिक्षण अधिगम प्रक्रिया/ अधिगम अनुभव	सामग्री	मूल्यांकन
1	प्रस्तावना	प्रत्येक से प्रश्न पूछते हुए पूर्ण कक्षा-कक्ष क्रियाकलाप आयोजित करना चाहिए।	अतिरिक्त सामग्री	इस कालांश में संपन्न शिक्षण अंश का मूल्यांकन

अब तालिका में दी गयी जानकारी के बारे में पता लगाते हैं।

कालांश संख्या : जिस किसी कालांश का आयोजन हो रहा है, उसकी संख्या लिखनी चाहिए। (जैसेः 1ला, 2रा, 3रा आदि।)

शिक्षण अंश : पाठ में उन्मुखीकरण चित्र से लेकर परियोजना तक के सभी अंश शिक्षण अंश ही हैं। जिस शिक्षण अंश का आप शिक्षण कर रहे हैं, उसका शीर्षक यहाँ लिखना चाहिए। (जैसेः उन्मुखीकरण, उद्देश्य, संदर्भ, कवि परिचय, पाठ शिक्षण, अभ्यास आदि।)

शिक्षण रणनीतिः पूर्व में शिक्षण अध्यापक केंद्रित था। वर्तमान में यह छात्र केंद्रित है। इसीलिए छात्रों की

भागीदारी, स्वाध्ययन के अवसर बढ़ गये हैं। अतः शिक्षण इसके अनुरूप होना चाहिए। यानी शिक्षण अंश द्वारा अपेक्षित शैक्षिक मापदंड के लिए किस तरह की रणनीति अपनानी चाहिए, के बारे में लिखना चाहिए। (जैसेः व्यक्तिगत क्रियाकलाप, समूहिक क्रियाकलाप, पूर्ण कक्षाकक्ष क्रियाकलाप।) अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया, अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता, भाषा की बात शैक्षिक मापदंड के क्रियान्वयन के लिए निम्नलिखित रणनीतियाँ अपनानी चाहिए। वे हैं-

- समूह क्रियाकलाप, व्यक्तिगत क्रियाकलाप, पूर्ण कक्षाकक्ष क्रियाकलाप (पठन, लेखन, सृजनात्मक, श्रवण-संवाद संबंधित क्रियाकलाप आदि।)
- परस्पर चर्चाएँ, परियोजना कार्य, अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया, प्रदर्शन-चर्चा, प्रतिवेदन की तैयारी चर्चा, भाषाई विकास के कार्यक्रम आदि।

भाषा शिक्षण निम्नलिखित सोपानों के अनुसार होना चाहिए। वे हैं-

- प्रस्तावनाः उन्मुखीकरण, शीर्षक घोषणा, कवि परिचय, उद्देश्य आदि।
- अर्थसंग्रहण / पठन क्रियाकलापः सस्वर वाचन, मौन वाचन, शब्दकोश में ढूँढ़ना।
- पाठ्यांश विषय पर चर्चा, अवगत कराना, पाठ के मुख्य शब्द, मुहावरे-कहावतें, संदेशात्मक वाक्य, शैली, निगूढ़ अर्थ, कवि का उद्देश्य, समकालीन अंशों के साथ जोड़ते हुए चर्चा।

सामग्री : शिक्षण अंश से अवगत कराने व सुदृढ़ बनाने के लिए पाठ से जुड़े अभ्यासों के लिए किन अतिरिक्त सामग्रियों का उपयोग करते हैं, के बारे में लिखना चाहिए। (जैसेः कवि का चित्र, शब्दकोश, अंतरजाल, संदर्भ ग्रंथ, नमूने आदि।)

मूल्यांकन : शिक्षण अंश की पूर्ति के बाद छात्रों को दक्षतावार निपुणता प्राप्त करने के लिए उन्हें सोच-समझ कर बातचीत करने योग्य प्रश्न पूछने चाहिए। अभ्यास के प्रश्न भी पूछ सकते हैं।

V. अतिरिक्त जानकारी संकलन :

पाठ शिक्षण के लिए आवश्यक अतिरिक्त जानकारी संकलन, समाचार, विवरण, क्रियाकलाप से जुड़ी पुस्तकों से जानकारी इकट्ठा कर लिखना चाहिए।

VI. अध्यापक की प्रतिक्रियाएँ :

पाठ की समाप्ति के बाद अपने अनुभव, प्रतिक्रियाएँ, छात्रों के अधिगम के बारे में लिखना चाहिए।

पाठ योजना (पद्य पाठ)

I **पाठ का नाम : कण-कण का अधिकारी**

II **पाठ के लिए आवश्यक कालांशों की संख्या :** 8

III **पाठ द्वारा अपेक्षित उपलब्धियाँ / दक्षताएँ :**

I **अर्थग्राह्यता - प्रतिक्रिया :-**

- भाग्य और कर्म के बारे में अपने विचार व्यक्त कर सकेंगे।
- श्रम के महत्व पर अपने विचार व्यक्त कर सकेंगे।

- कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' के बारे में बता सकेंगे।
- कविता से संबंधित प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे।
- दिये गये भाव से संबंधित पंक्तियाँ कविता में से चुनकर लिख सकेंगे।
- दिये गये पद्यांश पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे।

II. **अभिव्यक्ति - सृजनात्मकता :-**

- अनुचित तरीके से धन कमाने व मेहनत से कमाये गये धन में अंतर स्पष्ट कर सकेंगे।
- मेहनती व्यक्ति की श्रेष्ठता के बारे में लिख सकेंगे।
- श्रम करने वालों के अधिकारों के बारे में लिख सकेंगे।
- 'समानता' का अर्थ जानकर उससे संबंधित कहानी लिख सकेंगे।
- 'जीवन की सफलता का मार्ग श्रम है।' इस पर अपने विचार व्यक्त कर सकेंगे।

III. **भाषा की बात :-**

- दिये गये शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखकर वाक्य प्रयोग कर सकेंगे।
- दिये गये शब्दों के विलोम शब्द लिखकर वाक्य प्रयोग कर सकेंगे।
- दिये गये शब्दों के पुनरुक्ति शब्द लिखकर वाक्य प्रयोग कर सकेंगे।
- दिये गये शब्दों के वचन बदल कर वाक्य प्रयोग कर सकेंगे।
- दिये गये शब्दों के भाववाचक संज्ञा रूप लिख सकेंगे।
- दिये गये शब्दों का संधि विग्रह कर सकेंगे।
- दिये गये शब्दों का समास पहचान सकेंगे।
- दिये गये शब्दों का पद परिचय दे सकेंगे।
- रेखांकित शब्दों का पद परिचय दे सकेंगे।
- कारक पहचान सकेंगे।
- संयुक्त क्रियाओं का प्रयोग कर सकेंगे।
- दिये गये शब्दों में अंतर बता सकेंगे।
- उपसर्ग, प्रत्यय पहचान सकेंगे।
- वाक्य का रूप बदलकर लिख सकेंगे।

कालांश संख्या	पाठ्यांश/ शिक्षण बिंदु	शिक्षण व्यूह	पाठ्य सामग्री	मूल्यांकन
1.	उन्मुखीकरण अंश पर बातचीत, उद्देश्य, कवि परिचय।	1. प्रस्तावना ● संबोधन ● उन्मुखीकरण अंश पर बातचीत ● कक्षा के सभी बच्चों से बातचीत ● शीर्षक घोषणा (कण-कण का अधिकारी) ● उद्देश्य (पाठ में दिया गया उद्देश्य छात्रों से पढ़वाना।) ● कवि परिचय (रामधारी सिंह दिनकर) का परिचय छात्रों से पढ़वाना।)	गाँधी जी का चार्ट (विभिन्न कार्य करते हुए) रामधारी सिंह दिनकर का चार्ट	1. आप कौन-कौन से कार्य करते हैं? 2. बच्चों को कौन-कौन से कार्य स्वयं करने चाहिए?
2.	पाठ-पठन अर्थग्रहण कविता पाठ के अन्य चित्रों के बारे में चर्चा काठिन्य निवारण	1. प्रस्तावना ● संबोधन ● पुनरावृत्ति (उन्मुखीकरण प्रसंग व कवि के बारे में पुनरावृत्ति करना) 2. पठन-पाठन, चर्चा, अर्थग्राह्यता ● आदर्श वाचन - अध्यापक द्वारा ● सस्वर वाचन - छात्रों द्वारा ● मौन वाचन - छात्रों द्वारा ● कठिन शब्दों का रेखांकन ● शब्दकोश का प्रयोग ● सामूहिक चर्चा ● शब्दों के अर्थ चर्चा द्वारा श्यामपट पर लिखना। जैसे - (मनुज, संचित, छल, विनीत, विजीत, न्यास्त)	शब्द कोश	1. सीखे गये नवीन शब्द लिखकर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

3.	पाठ-पठन कविता की प्रथम 8 पंक्तियाँ	1. परिचय ● बच्चों से बातचीत ● पुनरावृत्ति 2. पठन-पाठन, चर्चा, अर्थग्राह्यता ● आदर्श वाचन - अध्यापक द्वारा ● सस्वर वाचन - छात्रों द्वारा ● मौन वाचन - छात्रों द्वारा ● कविता का विवरण, चर्चा, अवधारणा (विचारोत्तेजक प्रश्न द्वारा जैसे :- मनुष्य किन-किन तरीकों से धन का अर्जन करता है?	पाठ्यपुस्तक	क्या हमें भाग्य पर निर्भर रहना चाहिए? क्यों?
4.	पाठ पठन पाठ्यांश पर चर्चा कविता की अंतिम 8 पंक्तियाँ	1. प्रस्तावना ● संबोधन ● पुनरावृत्ति (सीखे गये प्रश्नों के बारे में पुनरावृत्ति करना।) 2. पठन-पाठन, चर्चा, अर्थग्राह्यता ● आदर्श वाचन - अध्यापक द्वारा ● सस्वर वाचन - छात्रों द्वारा ● मौन वाचन - छात्रों द्वारा ● कविता की अंतिम 8 पंक्तियों पर विचारोत्तेजक प्रश्नों द्वारा चर्चा जैसे :- ● कैसे व्यक्ति का सम्मान किया जाना चाहिए? ● परियोजना कार्य पर निर्देश	पाठ्यपुस्तक	प्रकृति की वस्तुओं पर पहला अधिकार किसका है? क्यों? विश्व श्रम दिवस (मई दिवस) के बारे में जानकारी इकट्ठा कीजिए

5.	शैक्षिक मापदंडों का अभ्यास अर्थग्राह्यता प्रतिक्रिया अ,आ,इ,ई	1. प्रस्तावना ● संबोधन ● पुनरावृत्ति 2. दक्षताओं की प्राप्ति - अभ्यास (अ) छात्रों से प्रश्न पढ़वाना। ● कक्षा के प्रत्येक छात्र से प्रश्न पूछना। ● चर्चा करना। ● उपसंहार बताना। (आ) छात्रों से प्रश्न पढ़वाना। ● पाठ पढ़ने के लिए कहना। ● व्यक्तिगत रूप से उत्तर लिखवाना ● अनुच्छेद पढ़ने के लिए कहना। ● प्रश्नोत्तरों का आयोजन ● व्यक्तिगत रूप से उत्तर लिखवाना (पूर्ण रूप से कक्षा क्रियाकलाप)	पाठ्यपुस्तक समाचार-पत्र की कतरन, लेख आदि	1. अभिव्यक्ति सृजनात्मकता में 'अ' शीर्षकीय लघु प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिए कहना।
6.	अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता अ, आ	1. प्रस्तावना ● संबोधन ● पुनरावृत्ति (उदाः श्रम का क्या महत्व है? अपने विचार बताइए।) 2. आप किस प्रकार धन अर्जित करना चाहेंगे और क्यों? II. दक्षताओं की प्राप्ति - अभ्यास ● अभ्यास मे 'आ', 'इ', 'ई' के प्रश्न श्यामपट पर लिखना।	छात्रों द्वारा लिखे गये उत्तरों के चार्ट, कविता	(ई) 'नर समाज का भाग्य एक है, वह श्रम, वह भुजबल है। जीवन की सफलता का मार्ग श्रम है', अपने विचार व्यक्त कीजिए।

		कवि ने मज़दूरों के अधिकारों का वर्णन कैसे किया है? अपने शब्दों में लिखिए। ● पूरी कक्षा के प्रत्येक छात्र से चर्चा करवाना। ● व्यक्तिगत या समूह में उत्तर लिखवाना। लिखी हुई सामग्री पढ़वाना। ● भाव, वाक्य, शब्द, अक्षर, त्रुटियों का संशोधन ● परियोजना कार्य का प्रदर्शन - चर्चा - संशोधन		
7,8	शैक्षिक मापदंडों का अभ्यास भाषा की बात व पुनरावृत्ति सुनना - बोलना	1. प्रस्तावना ● संबोधन ● पुनरावृत्ति 2. दक्षताओं की प्राप्ति - अभ्यास ● भाषा की बात के अंश पढ़वाना, समझाना, संशोधन करना। ● उदाहरण देना। (जन, पृथ्वी, धन, पर्याय शब्द) ● चर्चा- अर्थग्राह्यता सूत्रीकरण ● पाठ में पिछड़े छात्रों के लिए पुनरावृत्ति करना।	पाठ्यपुस्तक	1. सीखे गये शब्दों से वाक्य प्रयोग कीजिए।

पाठ योजना (गद्य पाठ)

I **पाठ का नाम :** **ईदगाह**

II **पाठ के लिए आवश्यक कालांशों की संख्या :** 9

III **पाठ द्वारा अपेक्षित उपलब्धियाँ / दक्षताएँ :**

1.
- पात्र के बारे में अपने विचार बता सकेंगे।
- पाठ के कहानीकार प्रेमचंद के बारे में बता सकेंगे।
- पाठ पढ़कर रिक्त स्थानों की पूर्ति कर सकेंगे।
- पाठ के आधार पर हाँ या नहीं में उत्तर दे सकेंगे।
- अनुच्छेद पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे।

II.
- पाठ के आधार पर क्यों, कैसे प्रश्नों के उत्तर लिख सकेंगे।
- पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिख सकेंगे।
- पाठ की किसी घटना को संवाद रूप में लिख सकेंगे।
- बड़े-बुजुर्गों के प्रति आदर, स्नेह आदि की भावनाओं का महत्व अपने शब्दों में लिख सकेंगे।

III.
- दिये गये शब्दों के पर्यायवाची लिखकर वाक्य प्रयोग कर सकेंगे।
- दिये गये शब्दों के विलोम शब्द लिखकर वाक्य प्रयोग कर सकेंगे।
- दिये गये शब्दों के वचन बदलकर वाक्य प्रयोग कर सकेंगे।
- दिये गये शब्दों के उपसर्ग पहचान सकेंगे।
- प्रत्यय पहचान सकेंगे।
- दिये गये शब्दों को भाववाचक संज्ञा रूप में लिख सकेंगे।
- दिये गये क्रिया शब्द का प्रयोग करते हुए उसके विभिन्न रूप बता सकेंगे।
- मुहावरे पहचानकर उनका अर्थ बताते हुए वाक्य प्रयोग कर सकेंगे।

संख्या	पाठ्यांश	शिक्षण व्यूह	पाठ्य सामग्री	मूल्यांकन
1.	उन्मुखीकरण अंश पर बातचीत, उद्देश्य, लेखक परिचय।	1. प्रस्तावना ● संबोधन ● उन्मुखीकरण अंश के बारे में कक्षा के सभी बच्चों से बातचीत। ● शीर्षक की घोषणा (श्यामपट पर लिखना) ● उद्देश्य (छात्रों के द्वारा उद्देश्य पढ़ाना चाहिए) 2. पाठ शिक्षण - चर्चा - अर्थग्राह्यता ● लेखक परिचय (छात्रों से पढ़वाना चाहिए।)	पेड़, फूल का चित्र, प्रेमचंद का चित्र	चित्र के आधार पर शब्द वाक्य लिखना
2.	पाठ-पठन अर्थ ग्रहण काठिन्य निवारण	1. प्रस्तावना ● संबोधन ● पुनरावृत्ति (लेखक के बारे में पुनरावृत्ति करना।) 2. पठन - पाठन, चर्चा, अर्थग्राह्यता ● पाठ के चित्र के बारे में बातचीत करवाना। ● व्यक्तिगत वाचन ● आदर्श वाचन ● मौन वाचन ● कठिन शब्दों का रेखांकन ● शब्दकोश का प्रयोग ● सामूहिक चर्चा ● शब्दों के अर्थ चर्चा द्वारा श्यामपट पर लिखना	शब्दकोश, पाठ्यपुस्तक	शब्दों का वाक्यों में प्रयोग।

सुंदरता बिना श्रृंगार के ही मन को मोहती है। -शेख सादी

संख्या	पाठ्यांश	शिक्षण व्यूह	पाठ्य सामग्री	मूल्यांकन
3. 4.	पाठ-पठन पाठ्यांश पर चर्चा	1. प्रस्तावना ● संबोधन ● पुनरावृत्ति (सीखे गये नवीन शब्दों के बारे में पुनरावृत्ति करना।) 2. पठन-पाठन - चर्चा, अर्थग्राह्यता ● आदर्श वाचन ● मौन वाचन पाठ्यांश पर चर्चा (विचारोत्तेजक प्रश्न पूछना। जैसे :-) ● बच्चे कौन-कौनसी दुकान पर गये? ● हामिद ने क्या खरीदा? ● प्रशंसा	खिलौने, मिठाइयाँ, बिगुल, गेंद आदि का चार्ट। ईद का चार्ट	1. हामिद किसके साथ रहता था? 2. बच्चे कहाँ जा रहे थे? 3. हामिद ने चिमटा ही क्यों खरीदा? 4. रमज़ान के महीने में कितने रोज़े होते हैं?
5.	शैक्षिक मापदंडों का अभ्यास अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया	1. प्रस्तावना ● संबोधन ● पुनरावृत्ति (सीखे गये प्रश्नों के बारे में पुनरावृत्ति) 2. दक्षता की प्राप्ति अभ्यास ● अर्थग्राह्यता प्रतिक्रिया प्रश्न श्यामपट पर लिखना। ● छात्रों से प्रश्न पढ़वाना। ● कक्षा के हर छात्र से प्रश्न पूछना ● उपसंहार बताना (आ) छात्रों से प्रश्न पढ़वाना। ● पाठ पढ़ने के लिए कहना। ● समूह कार्यके रूप में अर्थग्राह्यता के प्रश्नों के उत्तर लिखवाना। ● प्रदर्शन-चर्चा-उपसंहार परियोजना के अभ्यास के बारे में निर्देश देना।	समाचार पत्र, अन्य पुस्तकें	अभिव्यक्ति - सृजनात्मकता में 'अ' शीर्षकीय लघु प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिए कहना।

संख्या	पाठ्यांश	शिक्षण व्यूह	पाठ्य सामग्री	मूल्यांकन
6.	शैक्षिक मापदंडों का अभ्यास- अभिव्यक्ति सृजनात्मकता, प्रशंसा, परियोजना कार्य	1. प्रस्तावना ● संबोधन ● पुनरावृत्ति 2. दक्षताओं की प्राप्ति - अभ्यास ● श्यामपट पर आ, प्रश्न लिखना। ● छात्रों से प्रश्न पढ़वाना। ● सामूहिक रूप से छात्रों को अलग-अलग समूहों में बाँटकर प्रश्न के उत्तर पर चर्चा करवाना। ● प्रश्न के उत्तर पर चर्चा करवायें। ● व्यक्तिगत रूप से उत्तर लिखवायें ● भाव, वाक्य, शब्द, अक्षर, त्रुटियों का संशोधन ● प्रशंसा कार्य का प्रदर्शन - चर्चा संशोधन करना। ● परियोजना कार्य का प्रदर्शन	पाठ्य पुस्तक	हामिद ने अन्य बच्चों की तरह मिठाई और खिलौने क्यों नहीं खरीदे? वरिष्ठ नागरिकों के प्रति आदर-सम्मान की भावना से जुड़ी कहानी ढूँढ़कर लाइए।
7.	अभिव्यक्ति- सृजनात्मकता इ, ई	1. प्रस्तावना ● संबोधन ● पुनरावृत्ति 2. दक्षता की प्राप्ति अभ्यास ● श्यामपट पर प्रश्न लिखना। ● छात्रों से प्रश्न पढ़वाना। ● छात्रों को समूह में बाँटकर चर्चा करवाना। ● व्यक्तिगत या समूह रूप से उत्तर लिखवायें। 3. अर्थग्राह्यता की जाँच ● भाव, वाक्य, शब्द, अक्षर त्रुटियों का संशोधन ● परियोजना कार्य का प्रदर्शन-चर्चा-संशोधन करना।) ● व्यक्तिगत तौर पर प्रतिवेदन लिखना।	पाठ्य-पुस्तक	हामिद की प्रशंसा में चार वाक्य लिखिए।

मानव ही केवल ऐसा प्रणी है, जिसमें हँसने की शक्ति है। -ग्रेवाइल

संख्या	पाठ्यांश	शिक्षण व्यूह	पाठ्य सामग्री	मूल्यांकन
8.	भाषा की बात अ, आ, इ, ई	1. परिचय ● संबोधन ● पुनरावृत्ति 2. दक्षता की प्राप्ति हेतु अभ्यास ● छात्रों से प्रश्न पढ़वाना ● चर्चा करवाना ● अन्य उदाहरणों पर चर्चा करना। ● व्यक्तिगत रूप से उत्तर लिखने के लिए कहना। 3. अर्थग्राह्यता की जाँच	व्याकरण की पुस्तक	(ई) अभ्यास कार्य करने के लिए कहना
9.	भाषा की बात परियोजना कार्य	1. परिचय ● संबोधन ● पुनरावृत्ति 2. पठन - पाठन ● छात्रों से प्रश्न पढ़वाना। ● अन्य उदाहरणों पर चर्चा करना जैसे मुहावरे कहने के लिए कहना। ● व्यक्तिगत रूप से उत्तर लिखने के लिए कहना। ● परियोजना कार्य का प्रदर्शन करवाना। 3. अर्थग्राह्यता की जाँच।	व्याकरण पुस्तक	पाठ की पुनरावृत्ति हेतु अभ्यास संबंधी प्रश्न

अध्याय–VIII

सतत् समग्र मूल्यांकन

(Continuous Comprehensive Evalution)

1) सतत् समग्र मूल्यांकन
2) रचनात्मक आकलन
3) सारांशात्मक आकलन
4) प्रश्नों का भारपात
5) प्रश्नों के प्रकार
6) प्रश्नों का स्वभाव
7) नमूना प्रश्न पत्र (कक्षा - IX द्वितीय भाषा)
8) नमूना प्रश्न पत्र (कक्षा - X द्वितीय भाषा)
9) नमूना प्रश्न पत्र (कक्षा X प्रथम भाषा)
10) नमूना उत्तर पुस्तिका
11) उत्तर पुस्तकों की जाँच-सूचनाएँ व मार्गदर्शन

1) सतत् समग्र मूल्यांकन - IX और X कक्षाओं के लिए

हमारे राज्य में शिक्षा का अधिकार अधिनियम वर्ष 2010 में लागू हुआ। इस कानून के अनुसार शिक्षण में मूल्यांकन के लिए सतत् समग्र मूल्यांकन प्रविधि का प्रयोग करना अनिवार्य है। यह अधिनियम इस बात पर बल देता है कि शिक्षा प्रणाली बालक के शारीरिक और मानसिक विकास में किसी प्रकार भी बाधक न बनें। इसी पृष्ठभूमि के आधार पर पाठ्यपुस्तकों का निर्माण किया गया और उनमें सतत् समग्र मूल्यांकन के भरपूर अवसर देने के प्रयास किये गये हैं।

स्वरूप :-

- सतत् समग्र मूल्यांकन का मुख्य उद्देश्य मूल्यांकन को बोझरहित बनाना है। इसका मुख्य उद्देश्य मूल्यांकन को शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के अंतर्गत लाना है। अर्थात् शिक्षण अधिगम क्रियाकलाप के समय ही छात्र का आकलन हो जाना चाहिए। यह प्रक्रिया निरंतर चलती रहनी चाहिए।
- छात्र के आकलन के लिए किसी एक पक्ष को आधार नहीं बनाना चाहिए। अपेक्षित दक्षताओं और उनकी समग्रता के आधार पर आकलन करना चाहिए।

अपेक्षित परिणाम :-

- इससे छात्र का समग्र या व्यापक आकलन होता है।
- परंपरागत रटने की प्रवृत्ति में कमी आती है।
- अर्जित ज्ञान के उपयोग के अवसर प्राप्त होते हैं।
- छात्र ज्ञान का सोच-समझकर विविध परिस्थितियों में उपयोग करने की क्षमता का विकास करते हैं।
- इसके कारण सीखने-सिखाने के लिए अधिक समय मिलता है।

हमारे राज्य में I से लेकर VIII कक्षा तक सतत् समग्र मूल्यांकन का क्रियान्वन हो चुका है। IX और X कक्षाओं के लिए इसका प्रारुप इस प्रकार है -

जैसे कि आप जानते हैं कि यह आकलन दो प्रकार का होता है।

I रचनात्मक आकलन (Formative Assessment)

II सारांशात्मक आकलन (Summative Assessment)

2) रचनात्मक आकलन :-

IX और X कक्षाओं के लिए यह आंतरिक आकलन (Internal Assessment के रूप में होगा।)

बालक कैसे सीखते हैं? क्या सीखते हैं? कहाँ पिछड़ रहे हैं? इसके लिए शिक्षक को क्या करना चाहिए? जैसी बातों का उत्तर और समाधान आप शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के दौरान पाते हैं तो इसका अर्थ है कि आप कक्षाकक्ष गतिविधियों के दौरान रचनात्मक आकलन का निर्वहण कर रहे हैं। हमारी पाठ्यपुस्तकों में रचनात्मक आकलन के समुचित अवसर उपलब्ध हैं। पाठ्यपुस्तक में रखे गये पाठों का इकाइयों में विभाजन इसका उदाहरण है। रचनात्मक आकलन के कुछ मुख्य सूचक निम्नलिखित हैं:-

- इसका आयोजन वर्ष में चार बार (जुलाई, अगस्त, नवंबर और फरवरी) में किया जायेगा।
- यह पूरे शैक्षिक वर्ष में औपचारिक और अनौपचारिक तरीके से चलता रहेगा।

- इसका आयोजन स्वाभाविक परिस्थिति में होना चाहिए अर्थात् बच्चों को इस बात का आभास नहीं होना चाहिए कि उनका मूल्यांकन हो रहा है।
- इसका आयोजन शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया (कक्षाकक्ष क्रियाकलाप) के अंतर्गत होना चाहिए।
- यह परीक्षा 20 अंकों के लिए आयोजित की जायेगी।

साधन

1. पुस्तक पठन प्रतिक्रिया (Book Reading - Reflection)
2. लिखित कार्य (Written Works)
3. परियोजना कार्य (Project Work)
4. पर्ची या लघु परीक्षा (Slip Test)

आयोजन

रचनात्मक आकलन कुल 20 अंकों के लिए आयोजित किया जायेगा। इसमें अंकों का विभाजन इस प्रकार होगा-

क्र.सं.	अंश	निर्धारित अंक	साधन
1	पुस्तक पठन-प्रतिक्रिया	05	विभिन्न कहानियों की पुस्तकें, बाल-साहित्य, समाचार-पत्र आदि।
2	लिखित कार्य	05	कक्षा-कार्य, गृहकार्य, दत्तकार्य, अभ्यास कार्य, (मुख्य रूप से स्वलेखन पर बल)
3	परियोजना कार्य	05	परियोजना संबंधी कार्य
4	पर्ची या लघु परीक्षा	05	बालकों की उत्तर पुस्तिकाएँ
	कुल अंक	20	

पुस्तक पठन - प्रतिक्रिया :-

इसके अंतर्गत बालकों को कहानी की पुस्तकों में से कहानी बाल-साहित्य या समाचार-पत्र के किसी अंश को पढ़ने के लिए कहना चाहिए। पढ़ने के पश्चात् बालक से पठित अंश पर लिखित प्रतिक्रिया (प्रतिवेदन के रूप में) करवानी चाहिए। कक्षा में इसका प्रस्तुतीकरण भी होना चाहिए। इसके लिए 5 अंक निर्धारित हैं।

इसके आकलन के लिए अध्यापक को चाहिए कि वह निम्न बातों पर ध्यान दें-

- पठन अंशों का चयन (बालक द्वारा)
- लिखित अभिव्यक्ति
- प्रस्तुतीकरण का ढंग

2. लिखित कार्य :-

बालकों को पाठों के प्रश्न और अभ्यास लिखने के लिए देने चाहिए। उन्हें अपने शब्दों में (स्वरचना) लिखने के लिए कहना चाहिए। बालक को गाइड या क्वश्चन बैंक का सहारा लेने के लिए मना करना चाहिए। उन्हें स्वयं सोचकर लिखने के लिए प्रेरित करना चाहिए। इसके लिए 5 अंक निर्धारित हैं।

आकलन

- भावों की मौलिकता
- वाक्य निर्माण का क्रम
- शुद्ध वर्तनी

3. परियोजना कार्य :-

पाठ्यपुस्तक के हर पाठ के अंत में एक परियोजना कार्य दिया गया है। बालकों को परियोजना कार्य से संबंधित निर्देश देना चाहिए। किये गये परियोजना कार्य का प्रस्तुतीकरण प्रदर्शन कक्षा में करवाना चाहिए। इसके लिए 5 अंक निर्धारित हैं।

आकलन

- विषय की समझ
- सामग्री का संकलन
- जानकारी का संग्रहण, प्रतिवेदन लिखना
- प्रस्तुतीकरण/प्रदर्शन

4. पर्ची या लघु परीक्षा

इस परीक्षा का आयोजन अनौपचारिक रूप से किया जा सकता है। इसमें बहुत बड़े-बड़े प्रश्नों के उत्तर लिखवाने के स्थान पर छोटे-छोटे प्रश्नों के उत्तर, शब्दार्थ, व्याकरणांश या पठित/अपठित गद्यांश/ पद्यांश देकर उससे संबंधित प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिए कहा जा सकता है। इसके लिए 5 अंक निर्धारित है।

आकलन

- छात्रों द्वारा लिखे गये उत्तर
- वर्तनी की शुद्धता
- वाक्य निर्माण का क्रम

सूचना :- हर छात्र को 1) पुस्तक पठन - प्रतिक्रिया 2) लिखित कार्य के लिए 3) परियोजना कार्य के लिए एक पृथक पुस्तिका रखनी होगी 4) लघु परीक्षा के लिए एक उत्तर पुस्तिका रखनी होगी। 1,3,4, के लिए एक पुस्तिका व 2 के लिए एक उत्तर पुस्तिका रखी जानी चाहिए। इन उत्तर पुस्तिकाओं द्वारा जहाँ छात्रों के किये गये कार्यों को दर्शाया जा सकेगा वही समय-समय पर यह जाँच अधिकारियों के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगी।

- चार रचनात्मक आकलनों का औसत 20% के रूप में बोर्डपरीक्षा में लिया जायेगा। हर छात्र को रचनात्मक आकलनके 20% में कम से कम 7 अंक लाना अनिवार्य होगा।
- अध्यापकों को आंतरिक परीक्षाओं से संबंधित उत्तर पुस्तिकाओं को रिकार्ड के रूप में सुरक्षित रखना होगा।

आंतरिक आकलन का उदाहरण

FA–1

	नाम	पु.प	लिखित कार्य	परियोजना कार्य	लघु परीक्षा	कुल
		5	5	5	5	20
1.	राजू	3	2	3	2	10
2.	रवि	4	3	3	4	14

FA–2

	नाम	पु.प	लिखित कार्य	परियोजना कार्य	लघु परीक्षा	कुल
		5	5	5	5	20
1.	राजू	4	2	3	3	12
2.	रवि	3	3	4	3	13

FA–3

	नाम	पु.प	लिखित कार्य	परियोजना कार्य	लघु परीक्षा	कुल
		5	5	5	5	20
1.	राजू	3	4	4	2	13
2.	रवि	4	2	3	2	11

FA–2

	नाम	पु.प	लिखित कार्य	परियोजना कार्य	लघु परीक्षा	कुल
		5	5	5	5	20
1.	राजू	2	4	3	3	12
2.	रवि	3	4	3	2	12

राजू के चार FA के कुल अंक : 10+12+13+12 = 47

रवि के चार FA के कुल अंक : 14+13+11+12 = 50 हैं।

आंतरिक परीक्षा के 20 अंकों के लिए 4 रचनात्मक आकलनों के कुल अंकों को 4 परीक्षाओं के हिसाब से विभाजित करने पर इनके औसत अंक प्राप्त होंगे।

राजू के अंक होंगे -11.8 (12) और रवि के अंक होंगे -12.2 (12) अर्थात् राजू को 20 में से 12 और रवि को भी 20 में से 12 अंक प्राप्त हुए हैं।

सारांशात्मक मूल्यांकन (बोर्ड परीक्षाओं का आयोजन)

A. दक्षताओं के आधार पर भारपात

हिंदी द्वितीय भाषा - कक्षा 9 वीं व 10 वीं

दक्षता	अंक विभाजन	पूर्णांक	
I	अर्थग्राह्यता - प्रतिक्रिया	20 अंक	20
II	अभिव्यक्ति - सृजनात्मकता		
	अ) स्वरचना	30 अंक	40
	आ) सृजनात्मकता	10 अंक	
III	सामान्य हिंदी व व्याकरण		
	अ) शब्द	10 अंक	20
	आ) वाक्य	10 अंक	
	कुल	80	80

द्वितीय भाषा - हिंदी

4) दक्षताओं के आधार पर प्रश्नों के प्रकार, प्रश्नों की संख्या, प्रश्नों का स्वभाव व अंक

दक्षता	प्रश्न-प्रकार	दिये गये प्रश्नों की संख्या	लिखने वाले प्रश्नों की संख्या	दिये गये अंक	कुल अंक	दक्षता के लिए निर्धारित पूर्णांक	प्रश्नों का स्वभाव	प्रश्नों का चयन
I अर्थग्राह्यता प्रतिक्रिया	पढ़कर अर्थग्रहण करने की क्षमता की जाँच	4	4	5	4x5 = 20	20	1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न 2. सत्य, असत्य की पहचान 3. रिक्त स्थानों की पूर्ति - सभी प्रश्न बहुविकल्पीय होंगे।	पढ़कर अर्थग्रहण करने की क्षमता की जाँच के लिए प्रश्न पूछ जाने चाहिए। 1. परिचित/पठित गद्य इसे उपवाचक पाठों से लिया जाय। यहाँ उपवाचक के किसी पाठ का एक अनुच्छेद या पाँच, छः पंक्तियाँ हो। 2. अपिरिचित/अपठित गद्य इस गद्यांश को किसी कहानी, संवाद, नाटक, या निबंध से लिया जाय। इसकी भाषा, वाक्य सरल हो, जो 9 वीं या 10 वीं कक्षा के स्तरानुकूल हो, जिसमें सरल व सामान्य शब्दावली हो। यह गद्यांश प्रथम भाषा की पहली, दूसरी, तीसरी, चौथी, पाँचवी व छठवीं कक्षा की पुस्तकों से भी ले सकते हैं।

दक्षता	प्रश्न-प्रकार	दिये गये प्रश्नों की संख्या	लिखने वाले प्रश्नों की संख्या	दिये गये अंक	कुल अंक	दक्षता के लिए निर्धारित पूर्णांक	प्रश्नों का स्वभाव	प्रश्नों का चयन
II अभिव्यक्ति सृजनात्मकता अ) स्वलेखन	लघु उत्तरीय प्रश्न (2,3 वाक्यों में उत्तर हो।)	4	4	3	4x3= 12	30		पद्य पाठों से दो प्रश्न गद्य पाठों से दो प्रश्नों का चयन करें। प्रश्न विषय से संबंधित हो लेकिन पुस्तक में से जैसे के वैसे वही प्रश्न न हो।
	पाँच-छः वाक्यों में उत्तरानुकूल प्रश्न	6	3	6	6x3= 18		● विश्लेषणात्मक ● विचार व्यक्तिकरण ● व्याख्या ● सारांश ● कारण विश्लेषण ● पाठ के प्रतिभागी के रूप में अपने विचार	पद्य, गद्य पाठों से संबंधित प्रश्न हो, पाठ व अभ्यासों में प्रश्नों को कुछ बदलकर दिया जा सकता है।/साहित्यकार का परिचय दिया जायेगा।
आ) सृजनात्मकता	भाषा व्यावहारिक रूप	3	2	5	2x5= 10	10	पत्रलेखन, निबंध लेखन अनिवार्य रूप से हो। एक प्रश्न पाठ्य पुस्तक में दिये गये सृजनात्मक प्रश्नों से संबंधित हो।	पाठ्यपुस्तक से संबंधित हो, लेकिन जैसे के वैसे प्रश्न न हो।

दक्षता	प्रश्न-प्रकार	दिये गये प्रश्नों की संख्या	लिखने वाले प्रश्नों की संख्या	दिये गये अंक	कुल अंक	दक्षता के लिए निर्धारित पूर्णांक	प्रश्नों का स्वभाव	प्रश्नों का चयन
III भाषा की बात अ) शब्द विश्लेषण	लक्ष्यात्मक प्रश्न	10	10	1	10x1= 10	10	शब्दार्थ/पर्याय/ उपसर्ग/प्रत्यय/संधि/ समास/लिंग/वचन/ विलोम/शब्द संक्षेप/ कारक	पाठ्यपुस्तक में से पाठों से और भाषा की बात से ये प्रश्न लिये जा सकते हैं।
आ) वाक्य विश्लेषण	लक्ष्यात्मक प्रश्न	10	10	1	10x1= 10	10	शुद्ध-अशुद्ध वाक्य, वाक्य क्रम, काल, वाच्य, मुहावरा, कहावत, सरल संयुक्त, मिश्र वाक्य, अर्थ की दृष्टि से वाक्य सकारात्मक नकारात्मक वाक्य विराम चिह्न	पाठ्यपुस्तक में से पाठों से और भाषा की बात से ये प्रश्न लिये जा सकते हैं।

5) प्रश्नों के प्रकार - उसका महत्व

सब यह जानते हैं कि रटंत उत्तरीय प्रश्न अब नहीं पूछे जायेंगे। नये प्रश्न पत्र में छात्रों की क्षमता व दक्षताओं के अनुरूप प्रश्न रहेंगे।

दक्षताओं के आधार पर प्रश्न :

1. पढ़कर अर्थग्रहण करने की जाँच करनेवाले प्रश्न
2. स्वरचना/अपने शब्दों में उत्तर लिखने वाले प्रश्न
3. सृजनात्मक अभिव्यक्ति वाले प्रश्न
4. भाषा व व्याकरण संबंधी प्रश्न

1. **पढ़कर अर्थग्रहण करने की जाँच करनेवाले प्रश्नः-**

इस में मुख्यतः गद्य व पद्य संबंधी प्रश्न होते हैं। गद्य में पठित व अपठित गद्यांश देकर प्रश्न पूछे जाते हैं। पद्य में भी पठित व अपठित पद्यांश देकर प्रश्न पूछे जाते हैं। पद्य में केवल आधुनिक पद्य से ही प्रश्न पूछे जाय। पद्य हो या गद्य पाँच-छः पंक्तियों तक देकर प्रश्न पूछे जाय।

महत्व :- इस प्रकार के प्रश्नों के अभ्यास के लिए छात्र कई गद्यांशों व पद्यांशों का पठन करते हैं। उसका अर्थ, भाव समझने के लिए शब्दकोश का सहारा भी लेते हैं। ऐसे अभ्यास से छात्रों में पढ़कर अर्थग्रहण करने की क्षमता का विकास होता है। छात्र स्वयं पुस्तकालय में विविध समाचार पत्रों पत्र-पत्रिकाओं और साहित्यिक पुस्तकों का पठन कर विषय समझ सकते हैं।

2. **रचना/अपने शब्दों में उत्तर लिखने वाले प्रश्नः-**

ऐसे प्रश्नों के उत्तर में छात्र स्वयं सोचकर अपने विचार व्यक्त करता है। अपनी भावाभिव्यक्ति लिखित रूप में व्यक्त करने की पूर्ण स्वतंत्रता छात्र को मिलती है, जिससे छात्र में लिखित रूप में स्वाभिव्यक्ति करने की प्रवृत्ति का विकास होता है। इसमें मुख्यतः दो प्रकार के प्रश्न पूछे जाते हैं।

(i) (लघु उत्तरीय प्रश्न) दो-तीन वाक्यों में उत्तर दिये जा सकते हैं।

(ii) (पाँच-छः वाक्यों में उत्तर दिये जा सकते हैं।) निबंधात्मक प्रश्न

(i) **लघु उत्तरीय प्रश्न :-**

इन प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दिये जा सकते हैं। ये प्रश्न छात्रों को सोच-विचार कर उत्तर देने के लिए प्रेरित करते हैं।

महत्व :- छात्रों में संक्षेप में उत्तर देने की योग्यता का विकास होता है।

(ii) **निबंधात्मक प्रश्न :-**

इन प्रश्नों के उत्तर पाँच-छः वाक्यों में लिखे जाते हैं। ये प्रश्न भी छात्रों को सोच विचार कर उत्तर देने के लिए प्रेरित करते हैं।

महत्व :- वर्णन, व्याख्या की क्षमताओं का विकास होता है।

(iii) **सृजनात्मक अभिव्यक्ति के प्रश्न :-**

कहानी आगे बढ़ाना, कविता आगे बढ़ाना, विधा रूपांतर करना, नारे, सूक्तियाँ, वचन, कहानी, कविता, पत्र, निबंध आदि का सृजन करना, इसके अंतर्गत हैं।

महत्व :- ऐसे प्रश्न छात्रों की सृजनात्मकता का विकास कर उन्हें भावी जीवन में भाषा के आधार पर आगे बढ़ने के भरपूर अवसर देते हैं।

3. **भाषा की बात :-**

इसमें व्याकरण व भाषा परीक्षण संबंधी प्रश्न पूछे जाते हैं ये दो भागों में पूछे जाते हैं।

(i) शब्द संबंधी व्याकरणांश प्रश्न

(ii) वाक्य व भाषा संबंधी प्रश्न

(i) **शब्द संबंधी प्रश्न :-** छात्रों में भाषागत विकास के लिए शब्द भंडार का विकास होना आवश्यक है। इसलिए शब्दार्थ, पर्याय, लिंग, वचन, उपसर्ग, प्रत्यय, संधि, समास, शब्द संक्षेप, युग्म शब्द, शब्दभेद आदि से संबंधित प्रश्न पूछे जाते हैं।

महत्व :- शब्द भंडार का ज्ञान भाषा पर अधिकार प्रदान करता है और यह समय व संदर्भ के अनुकूल भाषा का प्रयोग करने में सहायक होता है।

(ii) **वाक्य संबंधी व्याकरणांश प्रश्न :-**

इसमें वाक्य रचना, अर्थ की दृष्टि से वाक्य, सकारात्मक व नकारात्मक वाक्य, काल, वाच्य, मुहावरे, कहावतें शुद्ध-अशुद्ध वाक्य, वाक्य क्रम व सामान्य भाषा प्रयोग, व्यावहारिक भाषा संबंधी प्रश्न होते हैं।

महत्व :- वाक्य निर्माण व उसके रूपों की जानकारी से छात्र भाषा की विविध शैलियों व विधाओं का ज्ञान प्राप्त करते हैं और सुंदर ढंग से व्यावहारिक भाषा का प्रयोग कर सकते हैं।

सारांशात्मक मूल्यांकन - I

नमूना प्रश्न - पत्र

विषय : हिंदी **अंक : 80**

कक्षा : नवीं **समय : 3 घंटे**

I. अ) नीचे दिये गये गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 5x1=5

बच्चे ओस की बूँदों की तरह शुद्ध और पवित्र होते हैं। वे कल के नागरिक हैं। आजकल प्रयाः घर-घर में 'टॉपर्स' और 'रैंकर्स' तैयार करने की कोशिश की जा रही है। आठ वर्षीय ईशान अवस्थी (दर्शाल सफ़ारी) का मन पढ़ाई के बजाय कुत्तों, मछलियों और पेंटिंग में लगता है।

1. बच्चे किस की तरह होते हैं?

   1. ओस की बूँद 2. शुद्ध 3. पवित्र 4. नागरिक

2. बच्चे कल के क्या है?

   1. नागरिक 2. खिलाडी 3. ओसकी बूँद 4. नेता

3. आजकल घर में किसे तैयार करने की कोशिश की जा रही है।

   1. टॉपर्स और रैंकर्स 2. नेता 3. नागरिक 4. ओस की बूँदें

4. ईशान का मन किसमें लगता था?

   1. कुत्ते 2. मछलियाँ 3. पेंटिंग 4. ये सभी

5. ''नागरिक'' शब्द का अर्थ बताइए।

   1. नगर में रहने वाला 2. नगर में स्थायी रूप से रहनेवाला

   3. देश में स्थायी रूप से रहनेवाला 4. ये सभी

आ) नीचे दिये गये गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए - 5x1=5

साहित्य, कला, नृत्य, गीत आमोद-प्रमोद अनेक रूपों में राष्ट्रीय जन अपने-अपने मानसिक भावों को प्रकट करते हैं। आत्मा का जो विश्वव्यापी आनंद भाव है वह इन विविध रूपों में साकार होता है।

1. यहाँ मानसिक भाव प्रकट करने वाले कौन है?

   1. राष्ट्रीय जन 2. साहित्यकार 3. कलाकार 4. गीतकार

2. राष्ट्रीय जन अपने मानसिक भावों को किन-किन रूपों में प्रकट करते हैं?

   1. साहित्य 2. कला 3. नृत्य 4. ये सभी

3. किस का विश्वव्यापी भाव है?

1. आत्मा का 2. जनता का 3. राष्ट्र का 4. कला का

4. आत्म <u>का</u> विश्वव्यापी भाव विविध रूपों में प्रकट होता है। रेखांकित शब्द है?

1. संबंध काराक 2. कर्ता कारक 3. कर्म कारक 4. इनमें से कुछ नहीं

5. ''साकार'' शब्द का विलोम लिखिए।

1. आकार 2. निराकार 3. विकार 4. ये सभी

इ) नीचे दिये गये पद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए - 5x1=5

मैंने हँसना सीखा है, मैं नहीं जानती रोना।
बरसा करता पल पल पर मेरे जीवन में सोना।
मैं अब तक जान न पाई कैसी होती है पीडा?
हँस हँस जीवन में कैसे करती हैं चिंता क्रीडा?

1. मैने ..... सीखा है।

अ) हँसना आ) रोना इ) खोना ई) होना

2. कवयित्री के जीवन में क्या बरसता है .....

अ) सोना आ) चाँदी इ) हीरा ई) ये सभी

3. ''हँसना'' शब्द का विलोम।

अ) खेलना आ) दौडना इ) रोना ई) यह सभी

4. कवयित्री क्या नहीं जान पाई?

अ) मोड़ा आ) घोडा इ) सोडा ई) पीडा

5. हँस हँस कर जीवन में ..... करती है।

अ) चिंता क्रीडा आ) मधुक्रीडा
इ) सुधा क्रीडा ई) यह सभी

ई) नीचे दिये गये पद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए - 5x1=5

नित्य वेद पाठ, नित्य जप करें
नित्य-गंगा धार में तिरे तरे
प्रेम जो न तो मनुज अशुद्ध है,
प्रेम तो सदैव ही समृद्ध है।

1. ''नित्य'' का अर्थ बताइए।

अ) हमेशा आ) हर दिन इ) नित्य दिन ई) इनमें से कुछ भी नहीं

2. मानव नित्य क्या करता है?

अ) पुण्य आ) पाप इ) धाप ई) यह सभी

3. समृद्धता कैसे प्राप्त होगी?

अ) समृद्ध व्यवहार आ) नित्य व्यवहार

इ) व्यवहार पूर्ण ई) प्रेम पूर्ण व्यवहार

4. ''अशुद्ध'' शब्द का विलोम लिखिए।

अ) शुद्ध आ) शुद्धता इ) शुद्धपूर्ण ई) यह सभी

5. ''सदैव'' शब्द का संधि-विच्छेद कीजिए।

अ) सद + इव आ) सदा + एव

इ) सदइ + व ई) सत् + एव

II. अभिव्यक्ति सृजनात्मकता 4 x 3 = 12

अ) नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर 2 **या** 3 **पंक्तियों में लिखिए।**

1. जीवन में हँसने का क्या महत्व है?
2. कवि के अनुसार तरंगें हमें क्या संदेश देती है?
3. वस्तु की प्रामाणिकता से आप क्या समझते हैं?
4. अंतरिक्ष का अर्थ बताते हुए अंतरिक्ष यात्रियों के नाम बताइए।

आ) नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर 5 **या** 6 **पंक्तियों में लिखिए।** 3 x 6 = 18

1. हमारे जीवन में अतिथि का क्या महत्व है? अपने विचार बताइए।

या

हमें कैसे प्रयत्नों से सफलता मिल सकती है?

2. युधिष्ठिर की जगह तुम होते तो किसे जीवित करवाना चाहते और क्यों?

या

सुनीता विलियम्स भावी नागरिकों को क्या संदेश देती है।

3. सोहन लाल द्विवेदी का साहित्यिक परिचय दीजिए।

या

कबीरदास जी का साहित्यिक परिचय दीजिए।

इ) ग्रामीण जीवन के सौंदर्य के बारे में अपने विचार लिखिए?

या

सीखने से संबंधित कोई एक कविता लिखिए।

ई) तीन दिन की छुट्टी माँगते हुए अपने प्रधान-अध्यापक के नाम पत्र लिखिए।

या

अपने मित्र को पोंगल की छुट्टियों में आने का आमंत्रण देते हुए पत्र लिखिए।

III. व्याकरणांश

अ) नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर विकल्पों से पहचानिए। 20 x 1 = 20

1. हमारे भारत में <u>हिंसा</u> प्रवृत्ति बढ़ रही है। (विलोम शब्द)

   अ) दुहिंसा आ) सहिंसा इ) अहिंसा ई) यह सभी

2. नानी हमें रोज़ नई <u>कहानी</u> सुनाती है। (वचन बदलकर)

   अ) कहानियाँ आ) कहाने इ) कहीने ई) कहानियी

3. 'अभि' उपसर्ग लगाकर एक शब्द बनाइए?

   अ) अनु आ) मान ई) नाम ई) यह सभी

4. मानव जीवन <u>सुख-दुख</u> का संगम है।

   अ) सुख व दुख आ) सुख-सुख

   इ) सुख और दुख ई) दुख - दुख

5. 'आसमान' शब्द का अर्थ लिखिए।

   अ) गगन आ) विहंग इ) खग ई) पवन

6. दार्शनिक शब्द का प्रत्यय चुनिए।

   अ) एक आ) इक इ) दार्श ई) यह सभी

7. 'वयोवृद्ध' संधि-विच्छेद कीजिए।

   अ) वय + अवृद्ध आ) व + योवृद्ध

   इ) वयव + ऋद्ध ई) वयः + वृद्ध

8. 'चोली दामन का साथ' मुहावरे का अर्थ क्या है?

   अ) घनिष्ठ संबंध होना आ) रक्षित स्थल होना

   इ) दामन का साथ ई) प्रकाशित होना

9. <u>बादल</u> बरसते है (रेखांकित शब्द का पद-परिचय दीजिए।)

   अ) सर्वनाम आ) संज्ञा इ) क्रिया ई) विशेषण

10. निम्न विकल्पों में अकर्मक क्रियाएँ पहचानिए।

    अ) सोना, पढ़ना आ) पीना, हँसना

    इ) खाना, लिखना ई) उठना, चलना

11. बूढ़ा (भाववाचक संज्ञा में बदलिए)

अ) बूढ़ाना आ) बुढ़ापा इ) बूढावा ई) यह सभी

12. हमारे पूर्वजो ने हमें स्वच्छ ..... स्वस्थ ग्रह दिए।

(सम्मुच्य बोधकों से रिक्त स्थान भरिए।)

अ) बल्कि आ) के इ) और ई) पास

13. यहाँ अनेक धर्मों व जातियों ..... लोग रहते हैं।

(उचित कारक चिह्नों से भरिए।)

अ) के आ) को इ) कै ई) का

14. सुनीता विलियम्स देश का नाम ऊँचा ..... हैं।

अ) करतो आ) करती इ) करते ई) यह सभी

15. ..... मुझे अच्छे अंक मिले।

(रिक्त स्थान की पूर्ति उचित अव्ययों से कीजिए।)

अ) वाह! आ) ओह! इ) अरे! ई) इनमें से कुछ भी नहीं

16. फुटबाल अच्छा खेल है। (इसे प्रश्नवाचक में बदलिए।)

अ) फुटबाल अच्छा खेल है क्या?

आ) क्या फुटबाल अच्छा है?

इ) फुटबाल कैसा खेल है?

ई) इनमें से कुछ भी नहीं

17. हम लोग अपना मिशन चुपचाप पूरा करना चाहते थे। (काल पहचानिए।)

अ) भूतकाल आ) वर्तमान काल

इ) भविष्य काल ई) ये सभी

18. हम सब मेले में जायेंगे। (नकारात्मक रूप में बदलिए।)

अ) हम सब मेले में जायेंगे नहीं।

आ) हम सब मेले में नहीं जायेंगें।

इ) नही हम सब मेले में जायेंगे।

ई) यह सभी

19. ''जो उपासना करने वाला'' शब्द समूह लिखिए।

अ) उपासना करनेवाला आ) भक्त

इ) उपासक ई) यह सभी

20. अपनी गलती पर अफसोस ..... कीजिए।

अ) मत आ) मात इ) तम ई) नहीं

सारांशात्मक मूल्यांकन - I
नमूना उत्तर पुस्तिका

विषय : हिंदी **अंक : 80**

कक्षा : नवीं **समय : 3 घंटे**

I. **अ)** 1. ओस की बूँद
2. नागरिक
3. 'टॉपर्स' और 'रैंकर्स'
4. कुत्तों, मछलियों और पैंटिंग
5. देश में स्थायी रूप से रहने वाला

आ) 1. राष्ट्रीय जन
2. ये सभी
3. आत्मा
4. संबंध कारक
5. ''निराकार''

इ) 1. अ) हँसना
2. आ) सोना
3. इ) रोना
4. ई) पीडा
5. अ) चिंता क्रीडा

ई) 1. अ) हमेशा
2. अ) पुण्य
3. ई) प्रेम पूर्ण व्यवहार
4. अ) शुद्ध
5. आ) सदा + एव

II. अभिव्यक्ति सृजनात्मकता

अ)

1. मानव जीवन में सुख-दुख दोनों रहते हैं। मानव सुखमय जीवन ही बिताना चाहता है। हँसते रहने वाले का दिल स्वच्छ और शांत रहता है। हँसते बोलनेवाले के सभी मित्र बनते हैं। सबसे हँसते प्रेमपूर्वक बरताव करने से मानव सुखी बन सकता है। चाहे कितना भी कष्ट का सामना करना पडे दिल को तसल्ली पहुँचाने हँसते रहना और हँसते बोलना है। इससे मानसिक शांति मिलती है।
2. समुद्र के चंचल तरंग उठ-उठकर गिरती है वे कहना चाहती है कि तुम भी उनके जैसे अपने दिल में मीठी और कोमल आशाएँ भर लो। क्योंकि आशा को सफल बनाने के प्रयत्न जरूर करते हो। हर काम करने का उत्साह उमड़ता रहता है।
3. लोगों को विनियम के लिए वस्तुएँ बनायी व तैयार की जाती है। ऐसी वस्तुएँ कुछ प्रामाणिक तथ्यों और सिद्धांतों के आधार पर ही बनायी जाती है। एक जागरूक उपभोक्ता होने के नाते किसी चीज़ को खरीदते है तब हम उस चीज़ की प्रामाणिकता सिद्ध करनेवाले विषयों पर जरूर ध्यान देना चाहिए। उस वस्तु के बनाने ''इस्तेमाल किए गए पदार्थ उनकी माप-तोल उसके लाभ उपयोग वजन आदि से वस्तु की प्रामाणिकता का परिचय मिलता है। सरकार ने आई.एस.आई., एगमार्क आदि चिह्नवाले चीज़े ही खरीदने की सलाह देती है। सरकार जाँच-पडताल के बाद ही प्रामाणिक चिह्न अंकित करने की अनुमति देती है।
4. पृथ्वी और सूर्य आदि लोकों के बीच के स्थान को अंतरिक्ष के बारे में जानने की कोशिश में रहा है। इसी आशय की सिद्धि के लिए समय-समय पर अंतरिक्ष यान भेजे गये है। उन यानों में अंतरिक्ष यात्री (एस्ट्रोनाट्स) जाते है। उनमें बज एलड्रिन, नील आर्मस्ट्रांग, राकेशशर्मा, यूरी गागरिन, कल्पना चावला, सुनिता विलियम्स आदि प्रमुख है।

आ) नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर 5 या 6 पंक्तियों में लिखिए।

1. मेहमान का अर्थ है अतिथि। अतिथि देवो भव, अतिथि हमारे लिए भगवान की प्रतिमूर्ति के समान है। अतिथि का सत्कार भारतीय संप्रदाय का जन्मसिद्ध गुण है। ऐसे अतिथि की भलाई या अतिथि को खुश रखने अपनी हानि की परवाह भी नहीं करते है। अतिथि सत्कार को ही परम धर्म मानकर जी जान से उसकी सेवा में जुड या निमग्न हो जाते हैं।

   या

   मानव जीवन में कोई भी काम असंभव नहीं है। मन लगाकर प्रयत्न करने से हर काम संभव होता है। मन में श्रद्धा रखकर काम की सफलता पर विश्वास रखते, भगवान पर भरोसा रखकर, संदेह या संशय छोड़कर एकाग्र चित्त होकर काम करते रहने से ज़रूर सफलता मिल सकती है। इस तरह हमें श्रद्धा, विश्वास, कडी मेहनत, शक्ति से युक्त प्रयत्नों से सफलता ज़रूर मिल सकती है।
2. युधिष्ठिर महान चरित्रवान और शील संपन्न व्यक्ति था। धर्मपरायण होने के कारण उसने यक्ष के कहने पर नकुल को जीवित करवाना चाहा। अगर उसकी जगह मैं होता तो पराक्रमी साहसी, धनुर्विद्या प्रवीण अर्जुन को जीवित करवाना चाहता। क्योंकि

अर्जुन महान गुणों वाला और तेज संपन्न था। अनेक देवों की कृपा से 92 और अस्त्र-शस्त्र प्राप्त किया हुआ महान व्यक्ति था। अपने पराक्रम से किसी भी तरह वह तीनों भाइयों को जीवित कर सकता है।

या

अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष केंद्र पर कदम रखने वाली पहली भारतीय महिला सुनीता विलियम्स हैं। वह अपने महान प्रयत्नों के फलस्वरूप सफल अंतरिक्षयात्री बन सकी। श्रद्धा और लगन से उसने यह ख्याति प्राप्त की। भावी नागरिकों को यह संदेश देती है - सौभाग्य से मेरा जन्म भारत में हुआ है। मैं एक साधारण पढ़ी-लिखी नारी हूँ। सभी सुशिक्षित हो कर आगे बढ़ें और देश का नाम उज्जवल व उन्नत करें।

3. श्री सोहनलाल द्विवेदी जी का जीवनकाल 1962-1988 है। उनकी अमूल्य रचनाएँ हिंदी साहित्य में प्रसिद्ध हुई है। उनकी प्रमुख रचना 'सेवाग्राम' है। भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री से विभूषित किया।

या

कबीरदास जी हिंदी साहित्य के निर्गुण धारा के ज्ञानमार्गीय शाखा के प्रमुख कवि थे। इनका जन्म 1398 को हुआ और उनकी मृत्यु 1528 में हुई। कबीर पढ़े लिखे नहीं थे। स्वामी रामानंद इनके गुरु थे। कबीर की रचनाएँ 'बीजक' नामक ग्रंथ में संकलित है।

इ) ग्रामीण जीवन के सौंदर्य

रूपरेखा :- प्रस्तावना, ग्रामीण सौंदर्य, ग्रामीण जीवन, उपसंहार

प्रस्तावना :- कहा जाता है कि गाँव को ईश्वर ने बनाया है और नगर को मनुष्य ने बनाया है। 'ग्राम' का तद्भव रूप 'गाँव' है। ग्राम का अर्थ होता है। 'समूह' याने कुछ घर-बार, नर नगरी और पशु-पक्षियों का समूह। गाँव भारत की रीढ़ है।

ग्रामीण सौंदर्य : गाँव प्रकृति की गोद है। गाँव में साँप की चाल जैसी टेढ़ी-मेढ़ी गलियाँ, कच्चे पक्के, पर साफ भले किसान सीधी-सादी औरतें, बच्चे पालतू पशु-मुर्गी आदि दृश्य मनमोहक होते हैं। गाँव का जीवन सरल व सात्विक होता है।

उपसंहार : गांधीजी के अनुसार ''गाँवों में ही सेवा और परिश्रम के अवतार किसान बसते हैं। भारत का हृदय गाँवों में बसता है। गाँवों की उन्नति से ही भारत की उन्नति हो सकती है''। अतः ग्राम का पुनरुद्धार कर ग्रामीण जीवन को स्वर्गतुल्य बनाना हमारा प्रथम कर्त्तव्य है।

या

फूलों से नित हँसना सीखो
भौरों से नित गाना
तरू की झुकी डालियों से
नील सीखो शीश झुकाना

ई) तीन दिन की छुट्टी पत्र :-

दिनांक : 14
हैदराबाद।

सेवा में,

प्रधानाध्यापक जी,
दसवीं कक्षा,
नालंदा हाईस्कूल,
हैदराबाद।

महोदय,

मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि मेरे बड़े भाई की शादी अगले सोमवार विजयवाड़ा में होने वाली है। मुझे वहाँ जाना है और माँ बाप की सहायता करनी है। इसलिए शादी में सम्मिलित होने के कारण मैं विद्यालय आने में असमर्थ हूँ इसलिए मुझे20.05.2014 से 23.05.2014 तक तीन दिन की छुट्टी देने की कृपा करें। आशा करता हूँ कि छुट्टी अवश्य मंजूर करेंगे।

सधन्यवाद

आपका आज्ञाकारी छात्र
x x x x

पता :-
प्रधानाध्यापक जी,
नालंदा हाईस्कूल
हैदराबाद

(या)

मित्र को पत्र

दिनांक : 14
हैदराबाद।

प्रिय मित्र,

मैं यहाँ कुशल हूँ। आशा करता हूँ कि तुम भी वहाँ कुशल हो। अगले हफ्ते से हमारी पोंगल की छुट्टियाँ शुरू हो जायेंगी। मैं इस पत्र के द्वारा मुख्य रूप से तुम्हें आमंत्रित कर रहा हूँ। हमारे यहाँ पोंगल का उत्सव बड़े धूम-धाम से मनाया जाता है। यहाँ विशेष मेला और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन होगा। यही नहीं हमारे देखने लायक अनेक स्थान है। इसलिए तुम ज़रूर आना।

तुम्हारे माता-पिता को मेरा प्रणाम। तुम्हारे आने की प्रतीक्षा करता हूँ।

आपका आज्ञाकारी छात्र
x x x x

पता :-
ए रामाराव, दसवीं कक्षा
नालंदा हाईस्कूल, हैदराबाद। हैदराबाद

III. व्याकरणांश

अ)

1. इ) अहिंसा
2. अ) कहानियाँ
3. आ) मान
4. इ) सुख और दुख
5. अ) गगन
6. आ) इक
7. ई) वयः + वृद्ध
8. अ) घनिष्ठ संबंध होना
9. आ) संज्ञा
10. ई) उठना, चलना
11. आ) बूढ़ापा
12. इ) और
13. अ) के
14. आ) करती
15. अ) वाह!
16. इ) फुटबाल कैसा खेल है?
17. अ) भूतकाल
18. आ) हम सब मेले में नहीं जायेंगे।
19. इ) उपासक
20. अ) मत

सारांशात्मक मूल्यांकन - I

नमूना प्रश्न - पत्र

विषय : हिंदी द्वितीय भाषा **अंक : 80**

कक्षा : दसवीं **समय : 3 घंटे**

I. अ) नीचे दिये गये गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **5 x 1 = 5**

कई साल पहले की बात है। एक राज्य था। जिसका नाम हरितनगर था। हरितनगर का राजा कुमार वर्मा था। वह अच्छा शासक था। कुमार वर्मा के शासन काल में राज्य हरा-भरा रहता था। लेकिन एक समय ऐसा आया, राज्य में सारी फसलें सूख गयी। तालाब, गड्ढ़े सूख गये। केवल दो ही जीव नदियाँ बची थी। जो छोटी-छोटी नहरें बनकर रह गयीं।

1. हरितनगर राज्य के राजा कौन थे?

   1. कुमार शर्मा 2. कुमार वर्मा 3. कुमार गिरि 4. इनमें से कोई नहीं

2. हरित नगर राज्य कैसा था?

   1. हरा-भरा 2. सूखा 3. पीले-हरे 4. हरा-नीला

3. राज्य में क्या सूख गया?

   1. तालाब 2. फसलें 3. गड्ढे 4. ये सभी

4. कितनी जीव नदियाँ बची हुई थी?

   1. चार 2. एक 3. तीन 4. दो

5. इस गद्यांश में आए पुनरूक्ति शब्द पहचानिए।

   1. छोटी-छोटी 2. हरा-भरा 3. तालाब गड्ढे 4. जीव-नदी

आ) नीचे दिये गये गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

कन्नौज का राजा हर्षवर्धन कट्टर बौद्ध था। उनका महायान संप्रदाय अनेक रूपों में हिंदूवाद से मिलता - जुलता था। उन्होंने बौद्ध और हिंदू दोनों धर्मों को बढ़ावा दिया। हर्षवर्धन कवि और नाटककार थे। कन्नौज की राजधानी उज्जैन को सांस्कृतिक गतिविधियों का प्रसिद्ध केंद्र बनाया था। इनकी मृत्यु 648 ई.में. हुई थी।

1. कन्नौज के राजा कौन थे?

   1. हर्ष वर्धन 2. बोद्ध 3. पृथ्वीराज 4. श्री हर्ष

2. महायान संप्रदाय किससे मिलता-जुलता था?

   1. जैन 2. सिक्ख 3. हिंदवाद 4. इस्लाम

3. हर्षवर्धन ने किन धर्मों को बढ़ावा दिया?

1. सिक्ख 2. बौद्ध और हिंदू 3. इस्लाम 4. जैन

4. सांस्कृतिक गतिविधियों का प्रसिद्ध केंद्र कौनसा था?

1. कटक 2. उज्जैन 3. कन्नौज 4. हस्तिनापुर

5. हर्षवर्धन की मृत्यु कब हुई?

1. 646 2. 618 3. 648 4. 658

इ) नीचे दिये गये पद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर चुनकर कोष्टक में लिखिए।

कदम-कदम बढाए जा, सफलता तू पायेजा,
ये भाग्य है तुम्हारा, तू कर्म से बनायेजा
निगाहें रखो लक्ष्य पर, कठिन नहीं ये सफर,
ये जन्म है तुम्हारा तू सार्थक बनाये जा

1. कवि के अनुसार बिना रुके आगे बढ़ते जाने से क्या प्राप्त हो सकती है?

अ) सफलता आ) विमुखता इ) इठलता ई) विफलता

2. भाग्य किससे बनाया जा सकता है?

अ) कर्म आ) काम इ) पाप ई) पुण्य

3. हमारी पूरी दृष्टि ..... पर केंद्रित होती है।

अ) मोक्ष्य आ) लक्ष्य इ) केंद्रित ई) इनमें से कुछ भी नहीं

4. 'कठिन' शब्द का विलोम लिखिए।

अ) कठिन आ) सरल इ) काठिन्य ई) ये सभी

5. ये जन्म है तुम्हारा तू ..... बनाये जा

अ) सार्थक आ) निरर्थक इ) साक्षर ई) निरक्षर

ई) निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर सही उत्तर दीजिए।

हम दीवानों की क्या हस्ती, है आज यहाँ, कल यहाँ चले,
मस्ती का आलम साथ चला, हम धूल उडाते जहाँ चले

1. हस्ती शब्द का अर्थ क्या है?

अ) अस्तित्व आ) हस्तीत्व इ) ईस्तित्व ई) इनमेंसे कुछ भी नहीं

2. ..... का आलाम साथ चला।

अ) मेहनत आ) मस्ती इ) महान ई) महानता

3. 'मस्ती' शब्द का अर्थ क्या है?

अ) आनंद आ) उल्लास इ) उन्माद ई) प्रेम

4. हम ..... उडाते जहाँ चले।

अ) धूल आ) धूम इ) धूप ई) धीर

5. 'आज' का विलोम शब्द लिखिए।

अ) काम आ) कल इ) कर ई) काज

II. अभिव्यक्ति - सृजनात्मकता 4 x 3 = 12

अ) नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर 2 **या** 3 **पंक्तियों में लिखिए।**

1. रैदास व मीरा की भक्ति भावना में क्या अंतर है? स्पष्ट कीजिए।
2. प्रकृति की कौन-कौन सी चीज़ मन को छू लेती हैं?
3. जूही का कौनसा कथन तुम्हें अच्छा लगा?क्यों?
4. ''हामिद के अंदर प्रकाश है, बाहर आशा की किरण' ऐसा लेखक ने क्यों कहा होगा?

आ) नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर 5 **या** 6 **पंक्तियों में लिखिए।** 3 x 6 = 18

1. कवि ने मज़दूरों के अधिकारों का वर्णन कैसे किया है? अपने शब्दों में लिखिए।

   या

   हमारे जीवन में भक्ति भावना का क्या महत्व है? चर्चा कीजिए।
2. वीरांगना लक्ष्मीबाई देशभक्ति की एक अद्‌भुत मिसाल थी - स्पष्ट कीजिए।

   या

   गोदावरी नदी का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
3. सुमित्रानंदन पंत का साहित्यिक परिचय दीजिए।

   या

   ''विष्णु प्रभाकर'' का साहित्यिक परिचय दीजिए।

इ) नीचे दिए गए प्रश्नों में से एक का उत्तर दीजिए। 1 x 5 = 5

1. आज दुनिया के सभी देशों में जल की समस्या बनी हुई है। इसके समाधान में हम सब की क्या जिम्मेदारी है?
2. भक्ति भावना से संबंधित छोटी सी कविता का सृजन कीजिए।

ई) नीचे दिए गए प्रश्नों में से एक का उत्तर दीजिए। 1 x 5 = 5

1. किसी रोचक घटना का वर्णन करते हुए अपने मित्र को पत्र लिखिए।
2. आवश्यक पुस्तकों के लिए किसी पुस्तक विक्रेता के नाम पर पत्र लिखिए।

III. व्याकरणांश

अ) नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर विकल्पों से पहचानिए। 20 x 1 = 20

1. 'प्रगति' इसमें उपसर्ग पहचानिए।

   अ) प्र आ) प्रग इ) गति ई) ती

2. ''प्रसन्नता'' शब्द का पर्याय लिखिए।

   अ) संतोष, हर्ष आ) मोद, मोहक

   इ) संतोष, संपर्क ई) हर्ष, पय

3. ''आंखो का तारा'' मुहावरे का अर्थ?

   अ) अतिरिक्त आ) अत्यंत

   इ) अतिप्रिय ई) अन्य

4. ''घृणा'' शब्द का विलोम लिखिए।

   अ) प्रेम आ) द्वेस इ) शांत ई) अमर

5. ''सर्वोत्तम'' शब्द का संधि विच्छेद कीजिए।

   अ) सर्वो + तम आ) सव + उत्तम

   इ) सर्व + उत्तम ई) स्व + उत्तम

6. 'मानवता'' इसमें प्रत्यय पहचानिए।

   अ) वता आ) मा इ) नवता ई) ता

7. राजू धीरे-धीरे चलने लगा। रेखांकित शब्द का शब्द भेद पहचानिए।

   अ) क्रिया आ) विशेषण

   इ) क्रिया विशेषण ई) सर्वनाम

8. हमारे यहाँ जल होता ..... हम पृथ्वी पर न आते।

   अ) तो आ) तुम इ) न ई) नही

9. यह तो कोई यान है। (भूत काल में बदलकर लिखिए।)

   अ) यह तो कोई यान होगा। आ) यह तो कोई यान था।

   इ) यह तो कोई यान हुआ होगा। ई) इनमें कुछ भी नहीं।

10. देश को एकता .....सूत्र में बांधने के लिए भाषा की आवश्यकता हुई

    अ) के आ) मं इ) से ई) पर

11. ''बैर'' शब्द का अर्थ क्या है?

    अ) मित्र आ) मित्रता

    इ) शत्रु ई) शत्रुता

12. दिये गये विकल्पों में स्त्री लिंग पहचानिए।

अ) भाषा आ) नज़र इ) मेहनत ई) ये सभी

13. राजू पुस्तक ..... है।

अ) पढ़ेगा आ) पढ़ता इ) पढ़ायेगा ई) पढ़वायेगा

14. मीत, रीत, मित्र, दोस्त बेमेल शब्द पहचानिए।

अ) मीत आ) रीत इ) मित्र ई) दोस्त

15. लोकगीत, लोकतंत्र (इस तरह के 'लोक' शब्द बने दो शब्द लिखिए।)

अ) लोकगीत, लोकेंद्र आ) लोककथा, लोकनृत्य

इ) लोकतंत्र, लोकगीत ई) इनमें से कुछ भी नहीं

16. यह हमारे लिए गर्व की बात है कि सारा विश्व हिंदी का महत्व जान चुका है। वाक्य पहचानिए।

अ) सरल वाक्य आ) संयुक्त वाक्य

इ) मिश्र वाक्य ई) प्रश्नार्थक वाक्य

17. अध्यापक के द्वारा कविता पढ़ाई ..... है।

अ) होता आ) जा रही होगी

इ) होती ई) जाती

18. ''सौ वर्षों का समय'' - इस वाक्यांश के लिए एक शब्द का उपयोग कर सकते हैं? वह क्या है

अ) दशाब्दी आ) शताब्दी

इ) शतक ई) यह सभी

19. ..... स्त्रियाँ ढ़ोलक की मदद से गाती है? (रिक्त स्थान में सही शब्द से प्रश्नवाचक में बदलिए।)

अ) क्या आ) कौन इ) कैसा ई) किस

20. ''भारतवासी'' समास विग्रह कीजिए।

अ) भारत को वासी आ) भारत और वासी

इ) भारतवासी ई) भारत के वासी

सारांशात्मक मूल्यांकन - I
नमूना उत्तर पुस्तिका

विषय : हिंदी द्वितीय भाषा **अंक : 80**

कक्षा : दसवीं **समय : 3 घंटे**

I. **अ)**
1. राजा कुमार वर्मा
2. हरा-भरा
3. ये सभी
4. दो
5. छोटी-छोटी

आ)
1. हर्षवर्धन
2. हिंदूवाद
3. बौद्ध और हिंदू
4. उज्जैन
5. 648 ई.

इ)
1. अ) सफलता
2. अ) कर्म
3. आ) लक्ष्य
4. आ) सरल
5. अ) सार्थक

ई)
1. अ) अस्तित्व
2. आ) मस्ती
3. अ) आनंद
4. अ) धूल
5. आ) कल

II. **अभिव्यक्ति सृजनात्मकता**

अ) 1. रैदास की भक्ति भावना निर्गुण है। इनका भगवान निराकार निर्गुण ब्रह्म हैं। इन्होंने भगवान की तुलना अनेक रूपों में की जबकि मीराबाई की भक्ति भावना सगुण हैं। इनकी माधुर्य की भक्ति है। इनके भगवान श्रीकृष्ण हैं। इन्होंने राम का कृष्ण का अभेद बताया।

2. सावन के बरसनेवाले बादल, बारीश की बूँदे, चकाचौंध करने वाली बिजली, रिमझिम बरसनेवाली बूँदे बहती जल-धाराएँ आदि चीजें मन को छू लेती हैं।
3. ''हाँ, मैं उनको अपना स्वामी मानती हूँ। और मानती रहूँगी। लेकिन उनसे भी अधिक मैं महारानी को अपना स्वामी मानती हूँ और महारानी से भी बढ़कर मैं अपने देश को अपना स्वामी मानती हूँ देश के लिए मैं सरदार को भी ठुकरा सकती हूँ, ठुकरा चुकी हूँ। जूही का कथन मुझे इसलिए अच्छा लगा क्योंकि वह देश की रक्षा के लिए अपने प्रिय व्यक्ति को भी छोड़ना चाहती है इसलिए देश की रक्षा में अपने स्वामी सरदार को भी ठुकराना चाहती है।
4. हामिद को उम्मीद है कि उसके अब्बाजान रूपये कमाकर लाएँगे। अम्मीजी बहुत सी अच्छी चीजें लाएँगी। उसके दिल में पूरा विश्वास है, यही प्रकाश पुँज है। उसके भीतर से विश्वास रूपी प्रकाश-पुँज से बाहर आशा रूपी किरण फूट पड़ती है।

आ) नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर 5 या 6 पंक्तियों में लिखिए।

1. कवि कवितांश में भीष्म पितामह के माध्यम से कुरूक्षेत्र युद्ध से विचलित धर्मराज को समुचित उपदेश देते हैं। कहते है - हे धर्मराज! कुछ लोग पाप से कुछ लोग भाग्यवाद की आड़ में अनुचित तरीके से धनार्जन करते हैं। प्राकृतिक संपदा सबकी है, न कि मुट्ठी भर लोगों की। मानव समाज का भाग्य परिश्रम भुजबल ही है। श्रमिक को सभी नर और सुर गौरव देते हैं। वही प्राकृतिक संपदा का सर्व प्रथम अधिकारी है। भाग्यवादी शोषक श्रमशक्ति का महत्व, संपत्ति पर श्रम जीवी का समान अधिकार सहज संपदा पर समान अधिकार आदि भी भीष्म के मुँह से कहलाते हैं।

या

हमारे जीवन में भक्ति का बड़ा महत्व है। तुलसीदास के अनुसार संतों की संगति, भगवान की कथा में अनुराग, गुरूसेवा, भगवान का गुणगान, निष्काम कर्म, विश्व को ईश्वरमय समझना, दूसरों के अपगुणों पर दृष्टिपात नहीं करना और निष्कपट रहना सद्गुण देती है। वह संकल्प की दृढता देती है। वह शांति और आनंद देती है।

2. भारत के राज्यों के राजा विलासित में डूबे जाते हैं, लेकिन वीरांगना लक्ष्मीबाई स्वराज्य प्राप्ति के लिए जूझती है। वे कहते है - देशभक्तों की आवश्यकता है। नूपूरों की झंकार के स्थान पर तोपों का गर्जन होने दो। हमें स्वराज्य लेना है। हमें रणभूमि में मौत से जूझना है। सीधी युद्ध भूमि में जाते समय अंत में कहती है कि स्वराज्य प्राप्त करके रहेंगे या स्वराज्य की नींव के पत्थर बनेंगे। वे सचमुच देशभक्ति एवं राष्ट्रप्रेम की अद्भुत मिसाल थी।

या

मैंने कई नदियों के दर्शन किए। गोदावरी नदी के दर्शनार्थ उसका जन्मस्थान नासिक त्रयंबक से निकल पड़ा। इसके दौरान रेल से, बस से, पैदल यात्रा करनी पड़ी। नासिक

चंबक में गोदावरी का नवजात शिशुरूप है। कालेश्वरम पहुँची तो उसका बाला रूप है। भद्राचलम में उसका कुमारी रूप है। राजमहेंद्री में नवयुवती रूप है। उसका विराट रूप उसकी छटा का वर्णन कैसे कर सकते है। मैं एकटक देखता ही रहा। उसकी चाल अजगर की तरह और कहीं - कहीं कोडे सांप सी होती है। गोदावरी हमें उपदेश देती है। चैखति-चैखति चलते-रहना चलते रहना। चलते समय गिर जाय तो भी अच्छी तरह चलना सीख लेते हैं - और आगे विकसित होते हैं।

3. प्रकृति के बेजोड़ कवि माने जाने बाले सुमित्रानंदन पंत का जन्म सन् 1900 अल्मोड़ा में हुआ। साहित्य लेखन के लिए इन्हें 'साहित्य अकादमी' 'सोवियत रूस और ज्ञानपीठ पुरस्कार' दिया गया इनकी प्रमुख रचनाएँ है - वीणा, ग्रंथि, पल्लव गुंजन, युगांत, ग्राम्या, स्वर्ण किरण, कला और बूढ़ा चाँद तथा चिदंबरा आदि। इनका निधन सन् 1977 में हुआ।

या

विष्णु प्रभाकर का जन्म सन् 1912 में हुआ। वे आदर्श प्रिय व्यक्ति थे। इन्हें प्रेमचंद परंपरा का आदर्शोन्मुख यथार्थवादी लेखक कहा जाता है। 'आवारा मसीहा' नामक रचना पर इन्हें 'सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार' से सम्मानित किया गया है। भारत सरकार ने इन्हें 'पदम-भूषण से सम्मानित किया है।

इ) 1. हमें पानी को बरबाद नहीं करना चाहिए। हमें जितना ज़रूरी है उतने का ही उपयोग करना चाहिए। जलाशयों में नहाना, पशुओं को धोना, कपडे धोना, कूड़ा करकट फेंकना आदि को मना करना है। कल कारखानों के कचरे का या रासयनिक पानी से प्रदूषित नहीं करना चाहिए। जल में विष मिलानेवाले असामाजिक तत्वों के प्रति सावधानी बरतनी चाहिए।

2. भक्ति भावना संबंधित कविताः

ऐ मालिक तेरे बंदे हम ऐसे हो हमारे करम
नेकी पर चले और बदी से टले ताके हंसते हुए निकले दम।

ई) नीचे दिये गये प्रश्नों में से एक का उत्तर दीजिए।

1.

दिनांक .....

हैदराबाद।

प्रिय मित्र,

मैं यहाँ कुशल हूँ। आशा करता हूँ कि तुम भी वहाँ कुशल हो। मैं एक रोचक घटना के बारे में लिख रहा हूँ। मैं एक छोटे बच्चे को नाले में से निकालकर उनके माँ-बाप को सौंप दिया। इस तरह मैंने एक छोटे बच्चे की जान बचायी। वह एक कागज़ की नाव निकालने नाले से प्रयास कर रहा था। तब अचानक वह उसमें गिर पड़ा। तब मैं उधर से जा रहा था। तुरंत उसे मैंने उठाकर बाहर लाया। तुम भी अपनी कोई रोचक घटना के बारे में लिखो।

माताजी एवं पिताजी को मेरा प्रणाम।

तुम्हारा प्रिय मित्र

xxxx

पता

xxxx

द न . 6-117

निवास,

हैदराबाद -59

2.

दिनांक .....

हैदराबाद।

प्रेषक

xxxx

दसवीं कक्षा,

सी.वी. निकेतन विद्यालय,

हैदराबाद।

सेवा में,

व्यवस्थापक जी

पुस्तक विक्रेता विभाग,

विद्या बुक डिपो,

हैदराबाद।

महोदय,

मुझे कुछ पुस्तकों की आवश्यकता है। इसलिए निम्नलिखित पुस्तकें ऊपर दिए गए पते पर वी.पी.पी. के जरिए भेजने की कृपा कीजिए। अग्रिम तौर पर पांच सौ रूपए भेज रहा हूँ। बाकी पैसे वी.पी.पी. के आते ही भेंज दूँगा।

1. सरल हिंदी व्याकरण, भाग - 1-5 प्रतियाँ
2. हिंदी तेलुगु कोष - 5 प्रतियाँ
3. हिंदी निबंध रचना भाग-1 - 3 प्रतियाँ
   भाग-2

आपका विश्वसनीय

xxxx

दसवीं कक्षा, क्रम संख्याः

पता

श्री व्यवस्थापक जी,

पुस्तक विक्रय विभाग

विद्या बुक डिपो

हैदराबाद

III. व्याकरणांश

अ) 1. अ) प्र

2. अ) संतोष, हष

3. इ) अतिप्रिय

4. अ) प्रेम

5. इ) सर्व + उत्तम

6. ई) ता

7. इ) जगत् + नाथ

8. अ) तो

9. आ) यह तो कोई यान था।

10. अ) के

11. ई) शत्रुता

12. इ) असफलता

13. आ) पढ़ता

14. आ) रीत
15. आ) लोककथा, लोकनृत्य
16. 'अ) वान
17. ई) जाती
18. आ) शताब्दी
19. अ) क्या
20. ई) भारत के वासी

अंक प्रदान करने के - सूचक

दसवीं कक्षा की नवीन पुस्तकों के आधार पर नमूना प्रश्न पत्र तैयार किया गया है। इसमें किस प्रकार के प्रश्न दिए गए हैं? किस दक्षता के लिए कितने अंक निर्धारित किए गए हैं? उत्तरों का किन सूचकों के आधार पर मूल्यांकन किया जाना चाहिए? इसकी अध्यापक को स्पष्ट जानकारी होनी आवश्यक है। प्रश्न -पत्र के आधार पर उसका अवलोकन करें।

I. **अर्थग्राह्यता - प्रतिक्रिया (20 अंक)**

(अ) पठित गद्यांश देकर पाँच प्रश्न पूछना। 5 (अंक)

गद्यांश उपवाचक से ही लिया जायेगा।

(आ) अपठित गद्यांश देकर पाँच प्रश्न पूछना। 5 (अंक)

यह किसी भी साहित्यिक या सामाजिक अंश से लिया जाएगा।

(इ) पठित पद्यांश देकर पाँच प्रश्न पूछना। 5 (अंक)

यह पाठ्य पुस्तक से लिया जायेगा।

(ई) अपठित पद्यांश देकर पाँच प्रश्न पूछना। 5 (अंक)

यह किसी भी साहित्यिक अंश से लिया जाएगा।

II. **अभिव्यक्ति - सृजनात्मकता (40 अंक)**

(क) स्वरचना - (30 अंक)

(अ) लघु प्रश्न - 12 (अंक) (4x3 = 12)

इसके अंतर्गत चार प्रश्न दिए जायेंगे। पाठ्य पुस्तक में दिए गए प्रश्नों को जैसे का तैसा न देकर उसी स्वभाव वाले अन्य प्रश्न दिए जाएँगे। एक-एक प्रश्न के लिए तीन अंक निर्धारित है।

- लघु प्रश्नों के उत्तर को अंक प्रदान करने के तरीके :-

- विषय वस्तु की समझ, वाक्य निर्माण का क्रम	- 2 अंक
- वर्तनी की शुद्धता	- 1 अंक
	3 अंक

(आ) निबंधात्मक प्रश्न - 18 (अंक)

इसके अंतर्गत 6 प्रश्न दिए जाएँगे। दो प्रश्न गद्य भाग से दो प्रश्न पद्य भाग से तथा दो प्रश्न साहित्यकारों से संबंधित दिए जाएँगे। इसमें से तीन प्रश्न करने होंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिए छह अंक निर्धारित हैं।

- निबंधात्मक प्रश्नों के उत्तर को अंक प्रदान करने के तरीके :-

- विषय वस्तु की समझ	- 2 अंक
- वाक्य निर्माण क्रम	- 2 अंक
- उचित शब्द का उपयोग	- 1 अंक
- शुद्ध वर्तनी	- 1 अंक
	6 अंक

(ख) सृजनात्मकता - (10 अंक)

पाठ्य पुस्तक में सृजनात्मक अभिव्यक्ति के अंतर्गत दिए गए प्रश्नों को न देकर उसी प्रकार के अन्य प्रश्न दिए जाएँगे। इसके अंतर्गत तीन प्रश्न दिए जाएँगे। एक प्रश्न पत्र एक निबंध तथा तीसरा अन्य विधा से संबंधित होगा। दो प्रश्नों के उत्तर लिखने होंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिए पाँच अंक निर्धारित है।

- सृजनात्मक प्रश्नों के उत्तर को अंक प्रदान करने के तरीके :-

1. वार्तालाप / संभाषण

- पात्रानुसार संवाद	- 3 अंक
- वाक्य निर्माण क्रम	- 1 अंक
- वर्तनी की शुद्धता	- 1 अंक
	4 अंक

2. लेखन (पत्र लेखन के नियम)

- स्थान, दिनांक, संबोधक, पता, हस्ताक्षर	- 2 अंक
- विषय की अनुकूलता	- 2 अंक
- वाक्य निर्माण, वर्तनी की शुद्धता	- 1 अंक
	5 अंक

3. गीत / कविता पाँच से आठ पंक्तियों में लिखना

- विषय की अनुकूलता	- 2 अंक
- उचित शब्द प्रयोग	- 2 अंक
- वर्तनी की शुद्धता	- 1 अंक
	5 अंक

4. निबंध

- प्रस्तावना या भूमिका	- 1 अंक
- विषय विस्तार	- 2 अंक
- उपसंहार	- 1 अंक
- वाक्य निर्माण, वर्तनी की शुद्धता	- 1 अंक
	5 अंक

5. नारे / सूक्तियाँ

- विषय की अनुकूलता	- 2 अंक
- उचित शब्द चयन	- 1 अंक
- वाक्य निर्माण	- 1 अंक
- वर्तनी की शुद्धता	- 1 अंक
	5 अंक

6. साक्षात्कार

- व्यक्तिगत जानकारी प्राप्त करने के लिए पूछे जाने वाले प्रश्न	- 1 अंक
- विषयगत प्रश्न	- 2 अंक
- प्रश्नों का क्रम - अनुसंधान	- 1 अंक
- वर्तनी की शुद्धता	- 1 अंक
	5 अंक

7. कथा/कहानी	- विषयारंभ/प्रभावोत्पादकता	- 1 अंक
	- घटनाक्रम	- 2 अंक
	- समापन	- 1 अंक
	- वाक्य निर्माण, वर्तनी की शुद्धता	- 1 अंक
		5 अंक
8. करपत्र	- शीर्षक	- 1 अंक
	- संदेश	- 2 अंक
	- विषय-आवश्यकता	- 1 अंक
	- वाक्य निर्माण, वर्तनी की शुद्धता	- 1 अंक
		5 अंक
9. कहानी आगे बढ़ाना	- अर्थपूर्ण तरीके से आगे बढ़ाने पर	- 2अंक
	- उपसंहार	- 2 अंक
	- वाक्य निर्माण, वर्तनी की शुद्धता	- 1 अंक
		5 अंक
10. घटना वर्णन	- आरंभ / प्रभावोत्पादकता	- 1 अंक
	- कथोपकथन	- 2 अंक
	- उपसंहार	- 1 अंक
	- वाक्य निर्माण, वर्तनी की शुद्धता	- 1 अंक
		5 अंक

III. **भाषा की बात :- (20 अंक)**

(अ) शब्द भंडार - (10 अंक)

पाठ्य पुस्तक में दिए गए शब्दों के पर्यायवाची, भिन्नार्थ, व्युत्पदार्थ, मुहावरे, वाक्य प्रयोग, तत्सम, तद्भव आदि में से किसी भी अंश से संबंधित 10 प्रश्न दिए जाएँगे। प्रत्येक प्रश्न के लिए एक अंक निर्धारित है।

(आ) व्याकरणांश - (10 अंक)

इसके अंतर्गत संधि, समास, उपसर्ग, प्रत्यय, कारक, शब्द-भेद, वाक्य-नकारात्मक, संयुक्त, सरल, मिश्र वाक्य, आदि अंशों से संबंधित दस प्रश्न पूछे जायेंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिए एक अंक निर्धारित है।

सारांशात्मक मूल्यांकन - I

नमूना प्रश्न - पत्र

विषय : हिंदी प्रथम भाषा **अंक : 80**

कक्षा : दसवीं **समय : 3 घंटे**

I. अर्थग्राह्यता - प्रतिक्रिया

अ) नीचे दिए गए गद्यांश पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **5 x 1 = 5**

विपदाएँ और रुकावटें बाहरी हस्तक्षेप हैं। हमारी अपनी आंतरिक शक्ति इन बाहरी हमलों की चिंता नहीं करती। किसी ने सही कहा है 'मन चंगा तो कठौती में गंगा'। हमारा बल और निर्बलता मन के हाथ में है। मजाल कि अँधेरा अंधेर रच जाए। सोच-विचार कर कार्य करना और कार्य करने में आनंद लेना मेरा लक्ष्य है। फल की चिंता मेरे मन में जगती ही नहीं, लेकिन फल-प्राप्ति का आनंद भी बिना किसी प्रदर्शन और प्रचार के ले लेता हूँ। यदि हम समाधान के मोर्चे पर संकल्पवान बनें तो समस्याएँ जीवन को तोड़ नहीं सकती हैं।

1. हमारी आंतरिक शक्ति को किसकी चिंता नहीं है?
2. बाहरी हमलों से यहाँ तात्पर्य क्या है?
3. हमारी सामर्थ्य और कमज़ोरियाँ किस पर निर्भर है?
4. लेखक का लक्ष्य क्या है?
5. संकल्पवान बनने का क्या परिणाम होता है?

आ) निम्नलिखित गद्यांश ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए। **5 x 1 = 5**

यदि हमारे पास दुनिया का सारा वैभव और सुख साधन उपलब्ध है परंतु शांति नहीं है तो वैसे सुख साधन व्यर्थ हैं। संसार में मानव द्वारा जितने भी कार्य किये जा रहे हैं सबका एक ही उद्देश्य है - 'शांति'। सबसे पहले तो हमें यह जान लेना चाहिए कि शांति क्या है? शांति का केवल यह अर्थ नहीं कि मुख से चुप रहें अवितु मन को नियंत्रित कर उसे बुराई के रास्ते पर चलने से रोकना ही वास्तविक 'शांति' है। इसीलिए जहाँ शांति है, वहाँ सुख है, जहाँ सुख है वही स्वर्ग है और जहाँ स्वर्ग है वही दुनिया का श्रेष्ठ स्थान है। युद्ध, दुख, लालच और सभी पीड़ाओं को मिटाने का एक मात्र साधन है - 'शांति'।

1. संसार का सारा सुख-वैभव किसके बिना अधूरा है?
2. वास्तविक शांति है -
3. शांति का अंतिम परिणाम है -
4. युद्ध, दुख, लालच को किसकी संज्ञा दी गयी है -
5. इस गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है -

इ) निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए। **5 x 1 = 5**

मानवता की मर्यादा जनतंत्र है
अनुशासन ही जीवन का गुरुमंत्र है
शूल-फूल से भरे हमारे रास्ते
लेकिन मंज़िल पर अपना विश्वास है।
सत्य, अहिंसा, शांति समय के सारथी
जीवन करवट बदल रहा हर मोड़ पर
आकुल होकर देख रहा इतिहास है।।

1. हमारे जीवन का गुरुमंत्र क्या है?

(क) मानवता (ख) अनुशासन

(ग) मर्यादा (घ) सफलता

2. मानवता की सीमा इसे माना गया है।

(क) मंज़िल (ख) जंनतंत्र (ग) जीवन (घ) विश्वास

3. शूल-फूल से भरे हैं -

(क) मानवता की मर्यादा (ख) अनुशासन का जीवन

(ग) हमारे रास्ते (घ) जीवन का गुरुमंत्र

4. समय के सारथी हैं -

(क) शूल-फूल (ख) सत्य, अहिंसा

(ग) जीवन, इतिहास (घ) मंज़िल, विश्वास

5. काव्यांश का उपयुक्त शीर्षक है -

(क) अहिंसा (ख) मानवता

(ग) आकुलता (घ) इतिहास

ई) निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए। **5 x 1 = 5**

आज़ादी अधिकार सभी का जहाँ बोलते सेनानी,
विश्व शांति के गीत सुनाती जहाँ चुनरिया ये धानी,
मेघ साँवले बरसाते हैं, जहाँ अहिंसा का पानी,

अपनी माँगें पोंछ डालती, हँसते-हँसते कल्याणी,
ऐसी भारत माँ के बेटे मान गँवाना क्या जानें,
मेरे देश के लाल हठीले शीश झुकाना क्या जानें।

1. धानी रंग की चुनरी कौन-सा गीत सुना रही है?
   (क) अधिकार का (ख) आज़ादी का
   (ग) विश्वशांति का (घ) अहिंसा का
2. भारत के लाल कैसे हैं?
   (क) सजीले (ख) साँवले
   (ग) हठीले (घ) निराले
3. सैनिक किसे सभी का अधिकार मानते हैं?
   (क) आज़ादी को (ख) शांति को
   (ग) अहिंसा को (घ) मान को
4. 'मान' शब्द का विलोमार्थक है -
   (क) निरमान (ख) दुरमान
   (ग) अपमान (घ) स्वमान
5. इस पद्यांश का उचित शीर्षक यह हो सकता है -
   (क) मेरा देश (ख) देश के लाल
   (ग) आज़ादी (घ) अहिंसा

II. अभिव्यक्ति सृजनात्मकता

अ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो या तीन पंक्तियों में लिखिए। (4 x 3 = 12)

1. राम-लक्षमण-परशुराम संवाद में आपको कौनसा पात्र अच्छा लगा और क्यों?
2. साहसी और कर्मवीर व्यक्ति ही लक्ष्य तक पहुँच सकता है। कैसे?
3. आपके अनुसार गाँवों में मुख्य रुप से क्या-क्या सुविधाएँ होनी चाहिए?
4. बच्चों को खेल के अधिक से अधिक अवसर मिलना चाहिए। इसके बारे में अपने विचार लिखिए।

आ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 5 या 6 पंक्तियों में लिखिए। 3 x 6 = 18

1. भारत देश के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

   या

   पूर्व चलने के, बटोही बाट की पहचान कर ले। कवि ने ऐसा ही क्यों कहा होगा?

2. जलस्त्रोतों का संरक्षण करना क्यों आवश्यक है? अपने विचार लिखिए।

या

'एक कहानी यह भी' पाठ की लेखिका मन्नू भंडारी के जीवन से हमें क्या सीख मिलती है?

3. कवि ऋतुराज का परिचय अपने शब्दों में लिखिए।

या

लेखक केशवचंद वर्मा का परिचय लिखिए।

इ) ''पर्यावरण प्रदूषण' पर एक निबंध लिखिए। 1 x 5 = 5

(या)

किसी भी महान् व्यक्ति का साक्षात्कार लेने हेतु पाँच प्रश्न तैयार कीजिए।

ई) अपनी भावी योजनाओं से अवगत कराते हुए अपने मित्र को पत्र लिखिए।1 x 5 = 5

(या)

आपके मुहल्ले में 'स्वास्थ्य जाँच शिविर' का आयोजन करन का निवेदन करते हुए जिला स्वास्थ्य अधिकारी को एक पत्र लिखिए।

III. भाषा की बात

नीचे दिये गये प्रश्नों के सही उत्तर चुनकर लिखिए। 20 x 1 = 20

1. उर पर विशाल-सरिता-सित-हरि-हार चंचल में रेखांकित शब्द के पर्यावाची हैं।

   अ) गगन व्योम आ) नदी, सलिला

   इ) वारिद, जलधि ई) नक्षत्र, तारक

2. सरलता मानव का <u>स्वाभाविक</u> गुण है। रेखांकित शब्द में प्रत्यय है -

   अ) विक आ) इक इ) क ई) ईक

3. निम्न में से गलत विकल्प पहचानिए।

   अ) शुद्ध x अशुद्ध आ) उपकार x अपकार

   इ) पूर्वार्द्ध x उत्तरार्द्ध ई) उन्नति x अउन्नति

4. हम बनारस घूमने गए थे। - इस वाक्य का सही पद परिचय क्रम पहचानिए।

   अ) सर्वनाम, संज्ञा, क्रिया आ) क्रिया, सर्वनाम, संज्ञा

   इ) सर्वनाम, क्रिया, संज्ञा ई) संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया

5. विशेषण से बने भाववाचक संज्ञा पहचानिए।

   अ) बच्चा - बचपन

आ) अपना - अपनापन

इ) स्वतंत्र - स्वतंत्रता

ई) पढ़ - पढ़ाई

6. निम्न विकल्पों में पुल्लिंग शब्द पहचानिए।

अ) सफलता आ) स्वतंत्रता इ) अपराध ई) जंग

7. निम्न में से किस शब्द में 'बे' उपसर्ग जुड़ता है?

अ) मतलब आ) मेल इ) ईमान ई) ये सभी

8. तुक बंदी शब्द पहचानिए।

अ) ओरा - मोरा आ) कोही - कीन्ही

इ) बिपुल-परसुं ई) केहि - तेहि

9. यह तुम्हारे नेताजी का चश्मा हर बार कैसे बदल जाता है? वाक्य में प्रयुक्त कारक है -

अ) कर्ता आ) कर्म इ) करण ई) संबंध

10. सूरदास <u>जन्मांध</u> थे। रेखांकित शब्द में समास है -

अ) अव्ययी भाव आ) द्विगु

इ) कर्मधाराय ई) बहुव्रीहि

11. 'जिसकी तुलना न हो सके' - इसका सही शब्द संक्षेप है-

अ) अतुल आ) अतुलनीय

इ) अद्भुत ई) अमिट

12. सीता गीत गाती है। इस वाक्य का कर्मवाच्य रुप है -

अ) सीता ने गीत गाया आ) सीता से गीत गाया जाता है।

इ) सीता को गीत गाना है ई) सीता गीत गाना चाहती है

13. निम्न विकल्पो में मुहावरा पहचानिए।

अ) घोड़ा घास से दोस्ती करेगा तो खायेगा क्या।

आ) उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे

इ) एक तंदुरुस्ती हज़ार नियामत

ई) नौ दो ग्यारह हो जाना

14. ''व्यर्थ'' - इस शब्द का संधि - विग्रह पहचानिए।

अ) व्य + अर्थ आ) व + अर्थ

इ) वि + अर्थ ई) वी + अर्थ

15. शुद्ध वाक्य पहचानिए -

अ) कहानी रचना लेखन का एक कला है।

आ) भारत देश एक सुंदर देश है।

इ) जैसे कि कहा जा चुकी है।

ई) चश्मा चेंज कर देता हैं।

16. श्याम का बड़ा भाई रमेश कल आया था। इस वाक्य में निहित पदबंध पहचानिए।

अ) संज्ञा पदबंध आ) विशेषण पदबंध

इ) क्रिया विशेषण पदबंध ई) क्रिया पदबंध

17. निम्न विकल्पों में से आज्ञार्थक वाक्य पहचानिए।

अ) लड़का मैदान में फुटबाल खेलता है।

आ) आप मैदान में फुटबॉल खेलिए।

इ) हमे फुटबॉल खेलना चाहिए।

ई) लड़का मैदान में खेलता होगा।

18. सेनापति तात्या इधर ही आ रहे हैं। - काल पहचानिए।

अ) सामान्य वर्तमान आ) अपूर्ण वर्तमान

इ) पूर्ण वर्तमान ई) संधिग्ध वर्तमान

19. भुजबल भूमि भूम बिनु किन्ही - पंक्ति में प्रयुक्त अलंकार है -

अ) यमक आ) श्लेष इ) अनुप्रास ई) अतिशयोक्ति

20. दोहा छंद के पहले और दूसरे चरण में मात्राएँ होती है -

अ) 13,11 आ) 11,13

इ) 13, 13 ई) 11, 11

आंध्र प्रदेश सरकार

सारांश (ABSTRACT)

विद्यालयीन शिक्षा विभाग - एस.सी.ई.आर.टी., आं.प्र., हैदराबाद - शैक्षिक वर्ष 2014-15 से IX और X कक्षाओं के लिए सुधार - एकमत से सहमति - आदेश जारी।

विद्यालयीन शिक्षा (पी.ई. - कार्यक्रम II) विभाग

G.O.Ms.No. 17 दिनांक : 14.05.2014

निम्नलिखित को पढ़िए:-

1. G.O.Ms.No.169, School Education (PE-Prog II) Dept. Dt. 29.12.2011
2. G.O.Ms.No.62, School Education (PE-Prog II) Dept. Dt. 23.07.2012
3. G.O.Ms.No.60, School Education (PE-SSA) Dept. Dt. 24.12.2013
4. From the C&DSE Lr. RC.No. 302/E1-1/2009, Dt. 17.04.2013
5. From the Director, SCERT, AP, Hyderabad Lr.No.185/D1/C&T/SCERT/2013 Dt. 08.05.2014.

आदेश :

RTE अधिनियम - 2009 और NCF-2005 की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए I से X कक्षाओं की पाठ्यपुस्तकों और पाठ्यक्रम संशोधन और पाठ्यचर्या में सुधार के कार्यो के लिए ऊपर दिए गए संदर्भ। 1 और 2 में आदेश जारी किये गये हैं। संदर्भ 3 में राज्य में सतत् और समग्र मूल्यांकन लागू करने के आदेश जारी किये गये हैं। इसके अनुसार एस.सी.ई.आर.टी. निदेशक ने राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 और शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के आधार पर विस्तृत रूप से पाठ्यचर्या में सुधार का कार्यभार संभाला और 1 से 10 कक्षाओं के पाठ्यक्रम संशोधन किया और साथ ही 1 से 10 कक्षाओं की सभी विषयों की पाठ्यपुस्तकों का विभिन्न चरणों में संशोधन किया। X कक्षा की पाठ्यपुस्तक आगामी शैक्षिक वर्ष अर्थात 2014-15 से आरंभ की जाएगी। जैसे नयी पुस्तकें आरंभ हुई वैसे ही मूल्यांकन प्रक्रिया में परिवर्तन करने की भी आवश्यकता हुई। यह 1 से VIII कक्षाओं के लिए पहले से ही किया जा चुका है।

2. ऊपर दिये गये 5 संदर्भ के अनुसार एस.सी.ई.आर.टी., निदेशक, ने IX और X कक्षाओं के लिए मूल्यांकन प्रक्रिया और परीक्षा योजना में परिवर्तन लिए सुझाव प्रस्तुत किये हैं और बताया है कि प्रस्ताविक परीक्षा सुधार, शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में परिवर्तन के लाने में सहायक होंगे और नयी पाठ्यपुस्तकों के कार्यान्वयन में सुधार होगा। क्रियाकलापों, परियोजनाओं, सवाल और चर्चाओं, प्रयोगों आदि के द्वारा अधिगम के कार्य में सुधार होगा। इसीलिए उन्होंने निम्नलिखित अंशों के आधार पर राज्य के सभी माध्यामिक विद्यालयों जैसे :- सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त, पंचायतराज निकायों, मान्यताप्राप्त निजी

विद्यालयों में परीक्षा सुधारों के क्रियान्वयन के आदेश जारी करने का निवेदन किया है।

(अ) प्रत्येक विषय के पेपरों की संख्या :-

- तेलुगु, अंग्रेज़ी, हिंदी, उर्दू आदि भाषा के विषयों के लिए एक पेपर होगा।
- भाषा के अतिरिक्त अन्य विषयों जैसे :- विज्ञान, सामाजिक अध्ययन और गणित के लिए दो-दो पेपर होंगे। उदाहरण :- विज्ञान - पेपर1 जीव विज्ञान, पेपर-2 भौतिक विज्ञान; सामाजिक अध्ययन - पेपर1 भूगोल और अर्थशास्त्र, पेपर - 2 इतिहास और नागरिक शास्त्र; गणित - पेपर 1 - संख्याएँ, समुच्चय, एलजेब्रा, प्रोग्रेशन, को आर्डिनेट ज्योमेट्री और पेपर -2 ज्यामेट्री, ट्रिगनोमेट्री, मेन्सुरेशन, सांख्यिकी, प्रोबेबिलीटी आदि।

(आ)पेपर और अंकः

विषय	**कुल अंक**	**अंतिम पब्लिक परीक्षा के लिए अंक**	**आंतरिक आकलन अंक (FA)**
प्रथम भाषा (तेलुगु/हिंदी/उर्दू आदी)	100 अंक	80	20
द्वितीय भाषा (तेलुगु/हिंदी)	100 अंक	80	20
तृतीय भाषा (अंग्रेज़ी)	100 अंक	80	20
गणित पेपर - 1	50 अंक	40	10
गणित पेपर - 2	50 अंक	40	10
भौतिक विज्ञान	50 अंक	40	10
जीव विज्ञान	50 अंक	40	10
सामाजिक अध्यायन - पेपर - 1 (भूगोल और अर्थशास्त्र)	50 अंक	40	10
सामाजिक अध्यायन - पेपर - 2 (इतिहास और नागरिक शास्त्र)	50 अंक	40	10
कुल	600 अंक	480	120

(इ) अंक भार और परीक्षा की अवधि :

- भाषा विषय - प्रत्येय पेपर के लिए 100 अंक होंगे और परीक्षा की अवधि 3.00 घंटे होगी। प्रश्न पत्र पढ़ने के लिए अतिरिक्त 15 मिनट दिये जाएँगे।
- गैर भाषा विषय - गणित, विज्ञान और सामाजिक अध्ययन - हर विषय के लिए दो पेपर हर पेपर के लिए 50 अंक तथा परीक्षा की अवधि 2 घंटे, 30 मिनट होगी। प्रश्न पत्र पढ़ने के लिए अतिरिक्त 15 मिनट दिये जाएँगे।

- IX कक्षा के लिए सारांशात्मक परीक्षा विद्यालय आधारित होगी। X कक्षा की अंतिम पब्लिक परीक्षा निदेशक (Director), सरकारी परीक्षा के द्वारा आयोजित की जायेगी। प्रत्येक विषय के लिए परीक्षा 80% अंकों के लिए आयोजित की जायेगी। शेष 20% अंक आंतरिक आकलन अर्थात् रचनात्मक आकलन (FA) के लिए होंगे।
- एक शैक्षिक वर्ष में आयोजित किए गए चार रचनात्मक आकलनों का औसत 20% अंकों के लिए लिया जायेगा अर्थात् X कक्षा की पब्लिक परीक्षा में चार रचनात्मक आकलनों का औसत 20% अंकों के लिए लिया जायेगा।
- सामान्य अवकाश (General Holidays) के दिनों को छोड़कर प्रत्येक दिन एक पेपर आयोजित किया जायेगा।

सारांशात्मक आकलन :

- IX और X कक्षाओं के लिए प्रत्येक शैक्षिक वर्ष में तीन सारांशात्मक परीक्षाएँ आयोजित की जायेगी। X कक्षा के लिए तीसरी सारांशात्मक परीक्षा बोर्ड ऑफ सेकेण्डरी एजुकेशन के द्वारा आयोजित की जायेगी।
- पहली और दूसरी सारांशात्मक परीक्षाएँ विद्यालय द्वारा आयोजित की जायेगी। इनके लिए 80% अंकों के लिए प्रश्न तैयार करने होंगे। इससे पब्लिक परीक्षा के लिए छात्रों की तैयारी सुनिश्चित होती है। शेष 20% अंक रचनात्मक आकलन के आधार पर दिए जायेंगे।
- कक्षा IX का सारांशात्मक आकलन तथा कक्षा X का 1 और 2 का सारांशात्मक आकलन, पब्लिक परीक्षा के निर्देशों के आधार पर होगा। शैक्षिक मापदंडों को दर्शाने वाले ब्लूप्रिंट के आधार पर प्रश्नों को तैयार करना होगा।

(ई) आंतरिक और बाह्य भार - रचनात्मक और सारांशात्मक :

प्रत्येक विषय के लिए 80% अंक सारांशात्मक/बाह्य परीक्षा और 20% अंक रचनात्मक आकलन के अंतर्गत ली जाने वाली आंतरिक परीक्षाओं के लिए निर्धारित हैं। निम्न तालिका में रचनात्मक आकलन के क्षेत्र और अंक दिये गये हैं।

क्र.सं.	रचनात्मक आकलन के साधन	अंक
1.	भाषा विषय - कहानियों की पुस्तकें, बाल-साहित्य, समाचार-पत्र आदि पढ़ना तथा लिखना और प्रस्तुतीकरण के माध्यम से कक्षा में प्रतिक्रिया करना।	5
	विज्ञान - प्रयोग करना और रिकार्ड लिखना	5
	गणित - विभिन्न अवधारणाओं के अंतर्गत आने वाले गणितीय प्रश्नों का निर्वहण - लिखना और कक्षा कक्ष में प्रस्तुतीकरण	5
	सामाजिक अध्ययन - विषय - वस्तु पढ़ना तथा लेखन के द्वारा समकालीन सामाजिक मुद्दों पर विश्लेषण और प्रतिक्रिया - कक्षाकक्ष में प्रदर्शन	5
2.	बच्चों के लिखित कार्य-उनकी पुस्तकों में (स्वअभिव्यक्ति/प्रत्येक इकाई/ पाठ के अंतर्गत दिये गये अभ्यासों के प्रश्न/कार्य के उत्तर लिखना/करना) बच्चों को इनके उत्तर गाइड। स्टडी मेटेरियल से बिल्कुल नहीं लिखना चाहिए।) उन्हें स्वयं सोचकर अपने शब्दों में लिखना चाहिए।	5
3.	परियोजना कार्य	5
4.	लघु या पर्ची परीक्षा	5
	कुल	20

- प्रत्येक छात्र को उपर्युक्त तालिका में रचनात्मक आकलन से संबंधित क्रम संख्या 1,2,3 के लिए हर विषय के लिए एक पृथक पुस्तिका बनानी होगी। क्रमसंख्या - 2के लिए प्रत्येक बालक एक अलग पुस्तिका रख सकता है। बच्चों के कार्यों को दर्शाने वाली इन पुस्तकों को सुरक्षित रखना चाहिए क्योंकि इन्हीं के आधार पर अध्यापक अंक प्रदान कर सकते हैं। आवश्यकता पड़ने पर पर्यवेक्षक अधिकारी भी इनकी जाँच कर सकते हैं।
- प्रत्येक विषय में, पब्लिक परीक्षाओं में, चार रचनात्मक आकलनों के औसत के 20% अंक लिए जायेंगे।

आंतरिक अंकों की जाँच तथा निदेशक कार्यालय (O/o Director**) सरकारी परीक्षा (**Govt. Exams**) को सौपना :-**

- चौथे रचनात्मक आकलन के पूर्ण होने के पश्चात्, प्रधानाध्यापक को उपर्युक्त आंतरिक परीक्षाओं से संबंधित रिकार्डो की जाँच करनी चाहिए तथा बाह्य सुधार समिति (External Moderation Committee) के लिए तैयार रखना चाहिए। समिति की जाँच और अनुमोदन के पश्चात् निश्चित प्रारूप (Fixed Format) से ऑन लाईन के द्वारा अंकों का विस्तृत विवरण भेजना चाहिए। विद्यालयों द्वारा भेजे जाने वाले अंकों से संबंधित कार्यक्रम का संचालन निदेशक (Director) सरकारी परीक्षा द्वारा किया जायेगा।

- दो या तीन मंडलों के 10 से 15 विद्यालयों को जाँच और सुधार की एक इकाई केरूप में माना जायेगा। DEO के द्वारा निर्मित सुधार समिति, दिये गये मंडलों के सरकारी और निजी पाठशालाओं में आंतरिक और पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाकलापों के लिए दिए गए अंकों और ग्रेड़ों की जाँच करेगी।

(उ) उत्तीर्णता अंक और उत्तीर्णता के लिए निम्नतम अंकः

- सभी भाषा और गैर भाषा विषयों के लिए उत्तीर्णता अंक 35% होंगे। छात्रों को आंतरिक (FA) और सारांशात्मक दोनो परीक्षाओं में उत्तीर्ण होना आवश्यक है।
- गैर भाषिक विषयों में, प्रत्येक छात्र को दोनों पेपरों में उत्तीर्ण होना आवश्चक है।
- रचनात्मक आकलन (आंतरिक) विज्ञान के विषय को छोड़कर सभी विषयों में 20 अंक निर्धारित हैं। विज्ञान में - 10 अंक जीव विज्ञान और 10 अंक भौतिक विज्ञान के लिए हैं। प्रत्येक छात्र को आंतरिक परीक्षा में 10 में से 3.5 अंक लाना अनिवार्य है।
- प्रत्येक छात्र को, हर विषय में आंतरिक और बाह्य परीक्षा के अंकों को मिलाकर 35% अंक लाना अनिवार्य है। इसके लिए उसे बाह्य पब्लिक परीक्षा में 28 अंक और आंतरिक परीक्षामें 7 अंक लाने होंगे।

द्वितीय भाषा के उत्तीर्णता अंकः

- अन्य भाषा विषयों के समान ही द्वितीय भाषा - हिंदी और तेलुगु के लिए उत्तीर्णत्ता अंक 35% होंगे।

(ऊ) ग्रेडिंग

- IX और X कक्षाओं के लिए अंक आधारित ग्रेडिंग और उनकी श्रेणी नीचे दी गयी है।

ग्रेड	भाषा विषयों में अंक (100अंक)	गैर भाषिक विषयों में अंक (50)	ग्रेड अंक
A1	91 से 100 अंक	46 से 50 अंक	10
A2	81 से 90 अंक	41 से 45 अंक	9
B1	71 से 80 अंक	36 से 40 अंक	8
B2	61 से 70 अंक	31 से 35 अंक	7
C1	51 से 60 अंक	26 से 30 अंक	6
C2	41 से 50 अंक	21 से 25 अंक	5
D1	35 से 40 अंक	18 से 20 अंक	4
D2	0 से 34 अंक	0 से 17 अंक	3

ग्रेड अंकों के अंकगणितीय औसत द्वारा एकीकृत ग्रेड अंक औसत (CGPA) की गणना की जायेगी।

ए) अन्य पाठ्यक्रमीय विषय (पाठ्यक्रम सहगामी क्षेत्र) - मूल्यांकन

- पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाकलाप जैसे :- शारीरिक और स्वास्थ्य शिक्षा, कला और सांस्कृतिक शिक्षा, कार्य और कंप्यूटर शिक्षा, मूल्य शिक्षा और जीवन कौशल आदि विद्यालय पाठ्यक्रम के भाग हैं। इन विषयों के निर्वहण के लिए विद्यालय की समय-सारिणी में कालांशों का निर्धारण किया गया है। IX और X कक्षाओं के आकलन के लिए इन विषयों (क्षेत्रों) को भी जोड़ा गया है। हर विषय (क्षेत्र) के लिए 50 अंक होंगे।
- कक्षा IX और X के अंक प्रमाण पत्रों में इन विषयों के ग्रेड विवरण को दर्ज करना होगा। इन क्षेत्रों के लिए A+, A, B, C, D जैसे 5 अंकीय ग्रेड पैमाने को लागू किया जायेगा।
- इन विषयों के लिए बोर्ड परीक्षा नहीं ली जायेगी। किंतु एक शैक्षिक वर्ष में तीन बार अर्थात् त्रैमासिक, अर्धवार्षिक और वार्षिक के लिए इन क्षेत्रों का मूल्यांकन किया जायेगा। अध्यापक को इनकी जाँच के पश्चात् अंक प्रदान करने होंगे। औसत को मान्यता दी जायेगी और सुधार समिति की जाँच के पश्चात् ग्रेड का विवरण प्रधानाध्यापक द्वारा ऑनलाइन से निदेशक (Director) सरकारी परीक्षा को भेजा जायेगा।
- प्रधानाध्यापक को चाहिए कि वह इन पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाकलापों के आयोजन और उनके आकलन संबंधी कार्यों का दायित्व शिक्षकों को सौंपे। शिक्षकों को उनकी रुचि के आधार पर क्षेत्रों के चयन का अवसर दिया जा सकता है। यदि यह संभव न हो तो प्रधानाध्यापक को चाहिए कि वह नीचे दिए गए सुझावों के आधार पर कार्यवाहक शिक्षकों को इन पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाकलापों का कार्य सौंपे।

भौतिक विज्ञान/जीव विज्ञान के अध्यापकों के कार्य और कंप्टूर शिक्षा

- शारीरिक निदेशक (Physical Director)/शारीरिक शिक्षा अध्यापक (Physical Education Teacher) के द्वारा शारीरिक एवं स्वास्थ्य शिक्षा आयोजित की जायेगी। यदि किसी कारणवश PD/PET उपलब्ध न हो तो जीव विज्ञान के अध्यापक को यह कार्य सौंपा जा सकता है।

  पाठ्यक्रम सहगामी क्षेत्रों को अलग से दर्शाया जायेगा और पाठ्यक्रम के क्षेत्रों की ग्रेडिंग के लिए इन्हें जोड़ा नहीं जायेगा।

उदाहरण :-

- भाषा अध्यापकों/सामाजिक अध्ययन के अध्यापकों को मूल्य शिक्षा या जीवन कौशल
- सामाजिक अध्ययन के अध्यापकों / भाषा अध्यापकों को कला और सांस्कृतिक शिक्षा

गुणात्मक पहलू :

(ऐ) प्रश्न - पत्र और प्रश्नों की प्रकृति :

प्रश्न विचारात्मक, विवरणात्मक और विश्लेषणात्मक होने चाहिए जो बच्चों की चिंतन, तार्किक विश्लेषण और निर्णय की क्षमता की जाँच करें तथा उन्हें स्व-अभिव्यक्ति के लिए प्रेरित कर रटंत स्मृति से दूर कर सकें। बच्चों को तर्क पूर्ण ढंग से सोचने और स्वरचना (अपने शब्दों में उत्तर

लिखने) के लिए प्रशिक्षित करना चाहिए। रटने के तरीकों, स्मृति आधारित गतिविधियों (उत्तरों को कण्ठस्थ करना), गाईड के उपयोग आदि के स्थान पर स्व-अभिव्यक्ति को केन्द्र बनाना चाहिए।

- प्रश्न ऐसे होने चाहिए जो बच्चों को सोचकर लिखने के लिए प्रेरित करें। प्रश्न विश्लेषणात्मक, विचारात्मक और प्रयोगात्मक होने चाहिए।
- पब्लिक परीक्षा में एक बार जो प्रश्न दिए जा चुके हैं उन्हें दुहराना नहीं चाहिए।
- पाठ्यपुस्तक के प्रत्येक इकाई और पाठ के अभ्यासों के अंतर्गत दिए जाने वाले प्रश्नों को परीक्षा में जैसे के तैसे नहीं दिया जाना चाहिए। प्रश्न शैक्षिक मापदंडों को दर्शाने वाले होने चाहिए।

शैक्षिक मापदंड/अर्जित की जाने वाली दक्षताएँ

- पब्लिक परीक्षा में दिए जाने वाले प्रश्नों का संबंध, संबंधित विषय में अर्जित की जाने वाली दक्षताओं/शैक्षिक मापदंडों से होना चाहिए।
- प्रत्येक विषय की दक्षताओं के लिए दिए जाने वाले भार को तय किया जाना चाहिए, ब्लू प्रिंट। भार तालिका का निर्माण कर उसके अनुसार प्रश्न पत्र तैयार किए जाने चाहिए।

परीक्षा अंशों के प्रकारः-

- परीक्षा अंशों की प्रकृति निम्नलिखित प्रकार की होगी -

A) **गैर - भाषिक विषय (विज्ञान, गणित और सामाजिक अध्ययन)**

- निबंधात्मक प्रश्न
- लघु उत्तरात्मक प्रश्न
- अति लघु प्रश्न
- वस्तुनिष्ठ प्रश्न - बहुविकल्पीय प्रश्न

B) **भाषा-विषय - तेलुगु और अन्य भारतीय भाषाएँ**

- पठन समग्रता
- लेखन
- सृजनात्मक अभिव्यक्ति
- शब्द भंडार
- व्याकरण

C) **भाषा - अंग्रेज़ी**

- पठन समग्रता
- शब्द भंडार

- सृजनात्मक अभिव्यक्ति
- व्याकरण

j) **प्रश्न - विकल्प**

- प्रत्येक प्रश्न पत्र में केवल निबंधात्मक प्रकार के प्रश्नों के लिए आंतरिक विकल्प हो सकता है।

k) **प्रश्न - भार**

- अपेक्षिक दक्षताओं और प्रश्नों की प्रकृति पर अंक भार दर्शाते हुए ब्लू प्रिंट बनाया जाएगा। पाठ/इकाई को विशेष भार नहीं दिया जाएगा। प्रश्न किसी भी पाठ/पाठ्यपुस्तक के किसी भी भाग के दिये जा सकते हैं।
- प्रश्न पत्र बनाते समय अंक भार तालिका को ध्यान में रखना होगा। प्रश्न के प्रकार (निबंधात्मक, लघु, अति लघु उत्तर और वस्तुनिष्ठ प्रश्न) तथा अपेक्षित दक्षतानुसार प्रश्न (प्रत्येक अपेक्षित दक्षताओं आदि को कितने अंक तथा प्रश्न)

l) **एक ही उत्तर पुस्तिका तथा अतिरिक्त पेपर नहीं दिया जाएगा**

- अनुच्छेद/वाक्य/शब्दों के रूप उत्तर के विस्तार का सुझाव देने के पश्चात यह प्रस्ताव रखा गया है कि छात्रों को उत्तर लिखने के लिए केवल एक उत्तर पुस्तिका दी जाएगी। अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका या पेपर नहीं दिये जाएँगे।

m) **उत्तर पुस्तिकाओं की जाँच और पुनःजाँच की सुविधा**

- चूँकि प्रश्न विचारोत्तेजक तथा ओपन एंडेड हैं तो जाँच सावधानी पूर्वक होनी चाहिए। उत्तर पुस्तिकाओंकी उचित जाँच के लिए जाँच कुँजी के साथ SCERT के द्वारा अध्यापिकाओं को उचित निर्देश भी दिए जाएँगे।
- यदि छात्र चाहे तो उसे उत्तर पुस्तिकाओं की पुनःजाँच की सुविधा प्रदान की जाय इससे उत्तर पुस्तिका जाँच में पारदर्शकता आएगी।
- SCERT के द्वारा परीक्षा सुधार और पुस्तिका की जाँच केलिए निर्देश दिये जाय। छात्रों की स्वाभिव्यक्ति, विश्लेषण की शक्ति, स्वरचना, प्रयोग और व्याख्या, चर्चा और विचारों का प्रदर्शन आदि को भी विषय वस्तु के साथ-साथ जाँच के आधार बनाये जाय।

n) SSC अंकों के प्रमाण पत्र

- X कक्षा की सार्वजनिक परीक्षा के अंकों के प्रमाण पत्र में निम्न लिखित बातें दर्शायी गयी है:

भाग - I : छात्र के बारे में सामान्य जानकारी

भाग - II : पाठ्यक्रम क्षेत्र का ग्रेड जैसे :- भाषाएँ और गैर भाषीक विषय - आंतरिक और बाह्य दोनों तथा अंतिम (कुल) ग्रेड

भाग - III: गुणवत्ता पूर्ण - व्याख्या के साथ पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं के लिए ग्रेड

ग्रेड और औसत ग्रेड पॉइंट की जानकारी अंकों के प्रमाणपत्र के दूसरी ओर भी दी जा सकती है।

O) **प्रशिक्षण कार्यक्रम**

- पर्यवेक्षण स्टाफ के साथ IX और X कक्षाओं को पढ़ाने वाले अध्यापकों के लिए SCERT प्रशिक्षण कार्यक्रम का प्रारूप तैयार करेगी। नवीन पाठ्यपुस्तकों और परीक्षा सुधारों की संपूर्ण प्रक्रिया पर SCERT अध्यापक मार्गदर्शिका तैयार करेगी तथा RMSA के साथ मिलकर पर्यवेक्षक स्टाफ के साथ-साथ IX और X वी कक्षाओं को पढ़ाने वाले अध्यापकों के लिए प्रत्येक विषय में जिला स्तर पर संसाधकों को प्रशिक्षण देगी। अध्यापकों के लिए मार्गदर्शिका तैयार करने, ज़िला संसाधकों को प्रशिक्षण देने तथा अध्यापको को प्रशिक्षण देने का खर्च RMSA वहन करेगा।
- नियमित अंतराल पर टेलिकांफ्रेंस द्वारा भी प्रशिक्षण दिये जा सकते हैं तथा संदेहो और अच्छे कार्यों आदि की चर्चा भी की जा सकती है।

(P) D.C.E.B. **के उत्तरदायित्व**

- IX और X कक्षाओं के लिए प्रश्न पत्र तैयार करना (सार्वजनिक परीक्षा के अलावा) और उन्हें पाठशालाओं को भेजना D.C.E.B. का उत्तरदायित्व है।
- उत्तम शैक्षिक पृष्ठभूमि और कुशलता से काम करने वाले एक अध्यापक को D.C.E.B. का इंचार्ज बानाना चाहिए। D.C.E.B. के अंताति प्रश्न पत्र तैयार करने के लिए 10 से 15 कुशल अध्यापकों की विषयानुसार जिला टीम तैयार करनी चाहिए। टीम सदस्यों में जिला के पाठ्यपुस्तक लेखकगण, SRG सदस्य, विषय निपुण, अध्यापक प्रशिक्षक, अनुभवी अध्यापकों आदि को सम्मिलित करना चाहिए।
- DCEB की टीम प्रश्न पत्र बनायेगी तथा पाठशालाओं और अध्यापकों द्वारा बनाये गये अच्छे प्रश्नों का परीक्षण भी करेगी। ये टीम जिलों में विषयानुसार प्रशिक्षण भी देगी तथा पाठशालाओं में दत्त कार्यों का निरीक्षण भी करेगी। ये सुधार समिति के सदस्य माने जायेंगे।
- नियमित अंतरालों में SCERT DCEB सेक्रेटरीयों और विषय दल के लिए ओरियंटेशन और प्रशिक्षण कार्यों द्वारा उनकी क्षमताओं का विकास करेगी तथा DCEB के कार्यकारी पहलुओं का निरीक्षण करेगी। DIET, CTE और IASE, DCEB के कार्यों का पर्यवेक्षण कर उसकी सहायता करेगी।

(q) **भूमिका और उत्तरदायित्व**

SCERT :

- सरकारी परीक्षाओं के निदेशक के साथ परामर्श करके, SCERT निदेशक से प्रस्ताव तैयारकर सरकार के समक्ष प्रस्तुत किए।
- अध्यापक व पर्यवेक्षक स्टाफ के लिए मार्गदर्शिका के रूप में परीक्षा सुधार के सभी पहलुओं पर दिशा निर्देश तैयार किए। साथ ही विषयानुसार नमूना प्रश्न पत्र तैयार किया गया है।

- अध्यापक मार्ग दर्शिका के लिए उत्तर पुस्तिकाओं की निर्देश बनाये गये है।
- पाठ्यचर्या को लागू करने के लिए पाठशालाओं में आवश्यक सुविधाओं के प्रस्ताव सरकार के समक्ष प्रस्तुत किए गए हैं। ताकि परीक्षा स्तर तक पहुँचा जा सके।
- आंतरिक परीक्षाओं में परिवर्तन के दिशा निर्देश
- विभिन्न स्तरों पर SSC परीक्षाओं के सुधार के लागू करने का अध्ययन तथा निरीक्षण और उसके आधार पर पुनः कार्यान्वयन

निदेशक, सरकारी परीक्षाः

- SCERT के साथ मिलकर प्रस्तावों पर अंतिम निर्णय लेना और आदेशों के लिए सरकार को सौंपना।
- सरकारी परीक्षाओं के निदेशक को सहगामी क्रियाओं और आंतरिक परीक्षाओं के अंक ऑन लाइन भेजने के लिए कार्यक्रम का निर्धारण करना और अंक प्रमाणपत्र/सर्टिफिकेट का डिज़ाइन बनाना।
- आंतरिक अंकों और अन्य नॉमिनल रोल्स को सौंपने का निरीक्षण करना।
- उत्तर पुस्तिकाओं की जाँच और परिणामों की घोषणा।
- पूर्व और पश्च परीक्षा कार्य, पुनः आकलन आदि।

आर.जे.डी. SEs **और जिला शैक्षिक अधिकारी :**

- नवीन मूल्यांकन प्रक्रियाओं पर निरीक्षक स्टाफ और अध्यापकों के लिए ओरियंटेशन कार्यक्रम रखना। इसके अंतर्गत निजी पाठशालाओं के शिक्षक और प्रधानाध्यापकों को प्रशिक्षण भी शामिल है।
- DCEB की एक इंचार्ज अर्थात सेक्रेटरी के द्वारा पुनःसंरचना और सशक्त करना और प्रति विषय 10 से 15 निपुण अध्यापकों को मिलाकर विशेष विषय गुण का निर्माण करना।
- दो या तीन मंडलों के लिए 1 दो सदस्यीय सुधार समिति का निर्माण करना। SCERT और DIETs/CTEs/IAEs की सहायता से इन सुधार समिति के सदस्यों की क्षमताओं के विकास के लिए कदम उठाना।
- X कक्षा सार्वजनिक परीक्षा के अतिरिक्त IX और X कक्षाओं के लिए प्रश्न पत्र प्रिंटिंग और निरीक्षण का कार्यान्वयन करना।
- बच्चों के द्वारा सोच-विचार और स्वाभिव्यक्ति वाले उत्तरों को बढ़ावा देना और पाठ्य पुस्तकों और गाइड के उत्तर रटने की पद्धति को दूर करना।
- केवल X कक्षा पर बल देने की अपेक्षा कक्षा से स्वाभिव्यक्ति का क्रमशः विकास करना और गुणवत्तापूर्ण पाठ्यचर्या तथा छात्र अधिगम आऊटकम पर बल देना।

Dy. Education Officer:

डिप्टी शैक्षिक अधिकारी :

- अपने विभाग में परीक्षा सुधारों को 100% लागू करने और आंतरिक परीक्षाओं का निरीक्षण

करने में डिप्टी शैक्षिक अधिकारी उत्तरदायित्व है। यह सरकारी और निजी विद्यालयों दोनों के लिए है।

- सभी विषयों के निपुण अध्यापकों की पहचान करना और उनकी सूची DCEB के लिए DEO तक पहुँचाना।
- आंतरिक परीक्षाओं के सही कार्य और पाठ्यचर्या और सहगामी क्रियाओं को लागू करने के निरीक्षण कार्य में प्रधानाध्यापक के कार्य का निरीक्षण करना।
- प्रत्येक सरकारी और निजी पाठशाला की जाँच पुस्तिका में परीक्षा कार्य और पाठ्यचर्या लागू करने की प्रकृति का रिकार्ड लिखना।
- परिवर्तन समिति के पाठशाला आने के पूर्व रचनात्मक और सारांशात्मक आकलन प्रक्रिया को लागू करना, शिक्षण अधिगम प्रक्रिया और नयी पाठ्यपुस्तकों को लागू करने के कार्य का निरीक्षण डिप्टी.ई.ओ. को करना चाहिए।
- परीक्षा सुधार, पाठ्यचर्या कार्य के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने और प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रबंध का उत्तरदायित्व डिप्टी. ई.ओ. का है।
- अध्यापक मार्गदर्शिका को पढ़ना, SCERT की स्त्रोत पुस्तकों और अन्य स्त्रोतों/ इंटरनेट की पुस्तकों के आधार पर पाठ्यचर्या, पेडोगाजी और आकलन के आधार भूत ज्ञान का विकास करना।

प्रधानाध्यापक :

- पाठ्यक्रम और पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं को लागू करने, अध्यापक की तैयारी, पाठ योजना, शिक्षण अधिगम प्रक्रिया और सभी अध्यापकों द्वारा उचित ढंग से परीक्षाओं का कार्यान्वयन के लिए प्रधानाध्यापक प्रथम स्तर का पर्यवेक्षक अधिकारी है।
- अध्यापकों और छात्रों को उनके उत्तम प्रयासों और कौशलों के लिए पहचानना और बढ़ावा देना तथा उसे SCERT व उच्च अधिकारियों की दृष्टि में लाना।
- गाइड्स और स्टडी मटीरियल के उपयोग और उत्तरों को रटने से छात्रों की विचारात्मक क्षमताओं और स्वाभिव्यक्ति पर बुरा प्रभाव पड़ता है अतः गाइड और स्टडी मटीरियल का उपयोग न हो। प्रधानाध्यापक इसे सुनिश्चित करें।
- उपलब्ध अध्यापकों में पाठ्यक्रम व सहगामी विषयों को सौंपना और यह देखना की इन सभी क्षेत्रों में कार्यान्वयन हो रहा है
- प्रधानाध्यापक पाठशाला स्तर पर आंतरिक परीक्षाओं जैसे :- रचनात्मक और सारांशात्मक आकलन का उचित निर्वहन का निरीक्षण करे और अध्यापकों और छात्रों द्वारा तैयार किये गये रिकार्ड और रजिस्टर पर अपने सुझाव दें। वह FA और SA से संबंधित छात्रों और अध्यापकों के सभी रिकार्डों की जाँच करें और सुधार समिति के समक्ष प्रस्तुत करने से पहले स्वयं को संतुष्ट कर लें।
- सरकारी परीक्षाओं के निदेशक द्वारा दी गयी सारिणी के आधार पर प्रधानाध्यापक को आंतरिक परीक्षाओं के अंक तथा सहगामी क्रियाओं के ग्रेड सरकारी परीक्षाओं के निदेशक को ऑन-लाइन भेजना होगा।

- प्रधानाध्यापक आंतरिक व अन्य परीक्षाओं का निर्वहन समय सारिणी के आधार पर करें तथा छात्रों को संचित रिकार्ड का रखरखाव करें तथा नियमित अंतरालों पर अभिभावकों/माता-पिता को छात्र की प्रगति से अवगत करायें।
- प्रधानाध्यापक यह सुनिश्चित करें की पाठशाला में उपलब्ध TLM, उपकरण तथा पुस्तकालय पुस्तकों के उपयोग द्वारा कक्षा में गुणवत्ता पूर्ण शिक्षण हो।
- प्रधानाध्यापक, छात्रों और अध्यापकों के प्रदर्शन का मासिक पुनरावलोकन करें तथा, प्रत्येक अध्यापक के लिए सुझावों के साथ मिनट बुक में रिकार्ड करें। तथा पूर्व मीटिंग के मिनट्स पर की गयी पुनश्चर्या का पुनरावलोकन करें।
- छात्रों के प्रदर्शन और विद्यालय क्रियाकलाप पर छात्रों और उनके अभिभावकों/माता-पिता को उचित प्रतिपुष्ठि (feed back) का प्रबंध करें।
- प्रधानाध्यापक, पहले शिक्षक है। उसे अध्यापकों की हैंडबुक, नवीन पाठ्यपुस्तकों तथा अन्य स्त्रोतों को पढ़कर शैक्षिक ज्ञान का पूर्ण जानकार होना चाहिए। उसे अध्यापकों के पठन और अन्य शैक्षिक मामलों और अवधारणाओं पर विद्यालय में समय-समय पर कार्यशालाओं (workshop) का आयोजन करना चाहिए।
- प्रधानाध्यापक को प्रत्येक अध्यापक के कक्षा कक्ष क्रियाकलाप का निरीक्षण करना चाहिए तथा सुधार के लिए सुझाव देकर मार्गदर्शन करना चाहिए।

अध्यापक :

- नयी पाठ्यपुस्तकों को उचित रूप से लागू करने अर्थात् क्रियाकलाप, परियोजना प्रयोग, क्षेत्रीय जाँच पड़ताल, सूचना संबंधी कार्य आदि के लिए अध्यापक उत्तरदायी है।
- प्रत्येक इकाई/पाठ के अंतर्गत दिए गए अभ्यास कार्य विश्लेषणात्मक व विचारोत्तेजक प्रकृति के हैं। बच्चे सोच विचार कर स्वयं उन्हें लिखें/गाइड, स्टडी मटिरियल या अन्य छात्रों की नोटबुक आदि से उत्तरों की नकल न की जाय। यह रचनात्मक आकलन का एक तत्व है जिसे सावधानीपूर्वक किया जाय। अध्यापक गाइड, स्टडी मटिरियल के उपयोग को बढ़ावा न दें।
- बक्से में दिए गए प्रश्न कक्षा में चर्चा के लिए हैं। इन प्रश्नों के द्वारा छात्र अपने विचार व्यक्त कर सकेंगे और बाँट सकेंगे। बक्से की विषय वस्तु तत्कालीन मुद्दों व परिस्थितियों पर आधारित है जिसके द्वारा यह आशा की जाती है कि बच्चे अपने अनुभव व उपाय प्रस्तुत करें। यह उनके दैनिक जीवन में पाठ्य पुस्तक के ज्ञान का उपयोग करने में सहायक होगा।

- दिये गये पाठ्यक्रम और सहगामी क्रियाओं की तैयारी करें तथा उसे कक्षा में गुणवत्ता तरीके से इस प्रकार लागू करें की छात्र चर्चाओं में क्रियात्मक रूप से सहगामी बने। अवधारणों की अधिक जानकारी के लिए अतिरिक्त संदर्भ सामग्री और स्त्रोत पुस्तकें पढ़े और प्रत्येक पाठ के लिए शिक्षण बिंदु तैयार करें। इस प्रकार, पाठ्यपुस्तक की सक्षरता बढ़ायें।
- नियमित रूप से छात्रों की नोटबुक व अन्य रिकार्डों की जाँच करें तथा रचनात्मक आकलन (आंतरिक) और सारांशात्मक आकलन करें। छात्रों के प्रदर्शन के आधार पर अंक और ग्रेड दें तथा छात्रों के प्रदर्शन के आधार पर अंक और ग्रेड दें तथा छात्रों की नोटबुक, रिकार्ड आदि के

रूप में छात्र के प्रदर्शन के प्रमाण का रखरखाव करें। इसे प्रधानाध्यापक और सुधार समिति के अवलोकन के लिए तैयार रखें। अध्यापक उपचारात्मक (Remedial) शिक्षण की कक्षाएँ आयोजित करें तथा रचनात्मक और सारांशात्मक आकलन के द्वारा पहचानी गयी कमियों के आधार पर छात्रों की सहायता करें।

- प्रशिक्षण कार्यक्रमों के अवसर पर उपलब्ध कराये गये अध्यापक हैंडबुक, मॉड्युल पढ़े और उसके आधार पर कार्य करें। शिक्षण एक व्यवसाय (Profession) है और अध्यापक एक व्यावसायी (professional) है। तथा किसी भी व्यवसाय के लिए ज्ञान और कौशलों का निरंतर सामजिक विकास होना अनिवार्य है।

  इस प्रकार अध्यापक सभाओं में चर्चा, विषय विशेष वेबसाइट पर जाना, संगोष्ठियों/प्रशिक्षण कार्यो में भाग लेने, मैगज़ीन, जर्नल, स्त्रोत पुस्तकों को पढ़ने से अध्यापक स्व विकास का प्रयत्न करते है।
- वार्षिक और पाठ/ईकाई योजना का उपयोग कर समयानुसार प्रगति करना।
- FA और SA के संदर्भ में HM की जाँच और उनके सुझाव व निर्देश के लिए छात्र और शिक्षक रिकार्ड पूर्ण करना।
- प्रगति के प्राथमिक प्रयासों में छात्रों को बढावा देना और उनका समर्थन करना।

3. तथ्यों की जाँच के पश्चात सरकार ने ऊपर Para 2 में SCERT, A.P., Hyderabad के निदेशक के प्रस्तावों को मान लिया है और आ.प्र. में विद्यालयीन शिक्षा के कमीशनर और निदेशक और SCERT के निदेशक को ऊपर बताये गये IX और X कक्षाओं के लिए परीक्षा सुधारों को लागू करने की अनुमति प्रदान की। इसे राज्य के सभी विद्यालयों अर्थात सरकारी, सामान्य निकाय, सहायता प्राप्त व निजी सभी पाठशालाओं में लागू किया जाय।
4. इसके आदार पर आवश्यक कार्य करने का अनुरोध विद्यालयी शिक्षा के कमीशनर और निदेशक, SCERT निदेशक और सरकारी परीक्षाओं के निदेशक सभी से किया जाता है।

(आंध्र प्रदेश के गवर्नर के नाम और आदेश द्वारा)

पूनम मालकोंडय्या

प्रिंसीपल सेक्रेटरी टू गवर्नमेंट (पी.ई)

को

पाठशालायी शिक्षा के कमीशनर और निदेशक और ई.ओ. SPD. RMSA.AP., Hyderabad

निदेशक, SCERT, A.P., Hyderabad

निदेशक सरकारी परीक्षाओं, A.P., Hyderabad.

Copy to P.S. to Principal Secretary to Government (PE)

SF/Sc Copy to P.S. to principal secretary to Government (SE)